मार्च ८१ अप्रैल ८१ March '81

मंत्र·तंत्र·यंत्र

वि ज्ञा न

(शिव–विशेषांक)

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च

नमः शंकराय च मयस्कराय च

नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

—यजुर्वेद

अङ्क : ३-४ मूल्य : १० रु.

卐 नमः शिवाय । नमः शिवाय । नमः शिवाय । नमः शिवाय । नमः शिवाय । नमः शिवाय । नमः शिवाय 卐

● कृपया यह विशेषांक आपके हाथों में पहुँचते ही पत्र द्वारा प्राप्ति-सूचना दें, जिससे हम निश्चित हो सकें, कि पत्रिका आपको मिल गई है।

● यह विशेषांक आपको कैसा लगा ? अपनी सम्मति और सुझाव भी तो लिख भेजिये न !

● पाठकों के ढ़ेर सारे पत्र इस बात के साक्षी हैं, कि वे भी पत्रिका के रचनात्मक निर्माण में भाग लेने को इच्छुक हैं हम आपको आमन्त्रित कर रहे हैं। आप पत्रिका हेतु महत्वपूर्ण लेख लिख भेजें। आपके आस-पास कोई सिद्ध योगी रहते हों तो उनके बारे में लिखें. जोवन में मन्त्र-तन्त्र सम्बन्धी कोई चमत्कारिक अनुभव आपको हुए हों तो निस्संकोच लिख भेजें।

विषय-सूची

१.	कुबेर यन्त्र	५
२.	रुद्राक्ष	६
३.	शिव साधकों के लिये मुक्ति स्वरूप—द्वादश ज्योतिर्लिंग	२५
४.	रुद्राष्टाध्यायी	३३
५.	एक आश्चर्यजनक उपलब्धि—पारद शिवलिंग	३६
६.	अकाल मृत्यु टालने का सर्वोत्तम साधन—महामृत्युञ्जय-विधान	४१
७.	नर्मदेश्वर-बाणलिंग	४५
८.	शिव पूजन	४७
९.	भस्म विधि और माहात्म्य	५७
१०.	अद्भुत, आश्चर्यजनक, असाधारण शिवलिंग	६१
११.	श्री शिव पूजन में ध्यान देने योग्य बातें	६५
१२.	विभिन्न पदार्थों द्वारा निर्मित शिवलिंग	६८
१३.	अमोघ मृत्युञ्जय स्तोत्र	७१

होली के उल्लास, उत्साह, उमंग और आनन्दपूर्ण पर्व पर हम सब, पत्रिका के सदस्यों एवं शुभ-चिन्तकों को हृदय से स्नेह-गुलाल और आशीर्वाद प्रदान कर अपने आपको सौभाग्यशाली अनुभव कर रहे हैं।

वर्ष : १

अंक : ३, ४

मार्च, अप्रेल १९८१

सम्पादक :
कैलाशचन्द्र श्रीमाली

पत्र व्यवहार हेतु पता :
"मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान"
डॉ. श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर—३४२ ००१
(राजस्थान)

टेलीफोन : २२२०९

मुद्रक :
जितेन्द्र प्रिण्टर्स,
घासमण्डी रोड,
जोधपुर (राज.)

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति उर्ध्वमुखी प्रगति और भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र से समन्वित मासिक

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।

हाथ से अथवा पैर से, वाणी से या शरीर से, कान से अथवा आंख से मैं जो कुछ भी अपराध करूं, वह कर्म से हुआ हो, या केवल मानसिक हो—वह अमुक काय करने से हुआ हो, अथवा अमुक कार्य न करने से हुआ हो, हे करुणासागर ! हे कल्याणकारी महादेव ! उन सब अपराधों के लिये मुझे क्षमा करो।

शाश्वत स्वर—

शिव अनन्त शिव-कथा अनन्ता....

देवाधिदेव भगवान शंकर आदिदेव हैं, 'श्वेताश्वेतरोपनिषद' के अनुसार "सृष्टि के आदिकाल में जब अन्धकार ही अन्धकार था, न दिन था, न रात थी, न सत था, न असत था, तब केवल एक निर्विकार शिव (रुद्र) ही थे।" महाभारत के अनुशासन पर्व में तो उन्हें ब्रह्मा व विष्णु का रचयिता भी कहा गया है, इसीलिये तो इन्हें देवों के देव महादेव कहा गया है।

एकाकी शिव प्रायः योगी रूप में ही प्रकट हुए हैं, शिव योगीराज हैं, योगाधीश्वर हैं, उनका रूप विलक्षण होते हुए भी प्रतीक-पूर्ण है। उनकी स्वर्णिम लहराती जटा उनकी सर्वव्यापकता की सूचक है, जटा में स्थित गंगा कलुषता-नाश तथा चन्द्रमा अमृत का द्योतक है, गले में लिपटा सर्प, कालस्वरूप हैं, जिस पर शिवाराधना कर विजय पाई जा सकती है, इस सर्प अर्थात काल को वश में करने से ही ये 'मृत्युञ्जय' कहलाये। त्रिपुण्ड, योग की तीन नाड़ियों—इड़ा, पिंगला, एव सुषुम्ना—की द्योतक है, तो ललाट मध्य स्थित तीसरा नेत्र आज्ञा-चक्र का द्योतक होने के साथ साथ भविष्यदर्शन का प्रतीक है। उनके हाथों में स्थित त्रिशूल तीन प्रकार के कष्टों—दैहिक, दैविक, भौतिक—के विनाश का सूचक है, तो त्रिफल युक्त आयुध सात्विक, राजसिक, तामसिक—तीन गुणों पर विजय प्राप्ति को प्रदर्शित करता है, कर स्थित डमरू उस ब्रह्म निनाद का सूचक है जिससे समस्त वाङ्मय निकला है, कमण्डल, समस्त ब्रह्माण्ड के एकीकृत रूप का द्योतक है, तो व्याघ्रचर्म मन की चंचलता के दमन का सूचक है। शिव के वाहन नंदी धर्म के द्योतक है, जिस पर वे आरूढ़ रहने के कारण ही धर्मेश्वर कहलाते हैं, उनके शरीर पर लगी भस्म संसार की नश्वरता की द्योतक है।

शिव और शक्ति मिल कर ही पूर्ण बनते है, शक्ति 'इकार' की द्योतक है, इसीलिये शिव में से 'इकार' अर्थात् शक्ति हटा दी जाय तो पीछे 'शव' ही रहता है, अतः शक्ति की सारूप्यता से ही 'शव' पूर्ण रूप से' शिव कहलाते है, और यही इनका अर्द्धनारीश्वर रूप है। शैव दर्शन के अनुसार यह रूप 'ब्रह्म' और 'आत्मा' का समन्वित रूप है, जो द्वैतवाद का सूचक है। इस अर्द्धनारीश्वर रूप में शिव का आधा दायां भाग पुरुष का एवं आधा बांया भाग पार्वती का है। शिव वाले भाग में सिर पर जटाजूट, सर्पमाल, सर्प-यज्ञोपवीत, सर्प कुण्डल, बाघाम्बर, त्रिशूल आदि है, जब कि पार्वती वाले भाग में सिर पर मुकुट, कुण्डल, सुन्दर वस्त्र, रम्य आभूषण, केयूर-मेखला, कंकण आदि है, इस प्रकार का रूप ही रम्य तथा शैव-शाक्त का समन्वित स्वरूप है।

शिव का एक रूप हरिहर भी है जिसमें 'हरि' अर्थात् विष्णु और 'हर' अर्थात् शिव का समन्वित स्वरूप है। यह पालन और संहार का सूचक है, मानव जाति के नित्य उज्जवल नवीन रूप का द्योतक है।

भगवान् शंकर त्रिगुणात्मक है, ब्रह्मा स्वरूप सृजन कर्त्ता, विष्णु स्वरूप पालन कर्त्ता एवं रुद्र स्वरूप संहार कर्ता—ये तीनों ही रूपों का समन्वित रूप महादेव है, इसीलिये तो इन्हें "हरिहर पितामह" कहा गया है, अथर्ववेद में भगवान् 'शिव' को "हरिहर हिरण्यगर्भ" भी कहा गया है, अतः भगवान् शंकर ब्रह्मा, विष्णु एवं सूर्य का समन्वित रूप जो शिव है, केवल मात्र इनकी पूजा ही समस्त देवताओं की पूजा-अर्चना है, जो कुछ दृश्य है वह शिव है, जो कुछ घटित है, वह शिव है.... यह सारा संसार शिवमय है, शिवस्वरूप है, शिव-युक्त है।

भगवान् शंकर स्वयं निर्विकार रहकर विकार युक्त विश्व की व्यवस्था करने में संलग्न है, कैलाश के उत्तंग शिखर पर हिमाच्छादित चोटियों के मध्य "शंकर धाम" कैलाश में न तो कोई चिन्ता है, और न कोई सन्ताप ही। स्वयं निर्मुक्त होते हुए भव बन्धन को तोड़ने में सक्षम, शिव के अतिरिक्त और कोई देवता ऐसा नहीं है जो जन्म मरण के कल्मष को धोकर अभय दे सके.... स्वयं स्थिर और निश्चल होते हुए भी चराचर जगत के कण कण में व्याप्त है, इसीलिये तो शंकर चराचरात्मक है, शंकर है, अभयंकर है।

शिव का अर्थ ही कल्याण है, शुभ है, मंगल युक्त है....जीवन में पूर्णता देने में शिव अग्रणी है, क्योंकि शिव भोग और मोक्ष दोनों के ही प्रदाता है, शिव औढ़रदानी है, जो क्षण में ही पसीज कर भक्तों को अभय कर देते है, भगवान शंकर आशुतोष हैं, जो भक्तों की जैसी इच्छा होती है, उसी के अनुसार उनकी इच्छा तुरन्त पूर्ण करने में अग्रणी हैं, इसीलिये तो शंकर को "भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव" कह कर संबोधित किया है, इसीलिये तो भीष्म पितामह को केवल यही कह कर चुप हो जाना पड़ा कि 'जो सब में रहते हुए कहीं किसी को दिखाई नहीं देते, ऐसे महादेव के गुणों का वर्णन करने में मैं सर्वथा असमर्थ हूँ—

अशक्तोऽहं गुणान् वक्तुं महादेवस्य धीमतः।
यो हि सर्वगतो देवो न च सर्वत्र दृश्यते॥

और अब इस अंक के संबंध में

मंत्र तंत्र से संबंधित पुस्तक या पत्रिका का मूल्य पन्नों के भार से नहीं आंका जाता, अपितु उसमें निहित सामग्री से आंका जाता है....आप स्वयं देखें, कि इस विशेषांक में कितनी मूल्यवान और अप्राप्य सामग्री है, पत्रिका का प्रत्येक लेख खोजपूर्ण और श्रमसाध्य है।

"कुबेर यंत्र" पर यह पहला मौलिक लेख है जिससे पाठक परिचित हो सकेंगे, इसके बारे में जान सकेंगे, और सौभाग्यशाली व्यक्ति ही इस यंत्र से लाभ उठा सकेंगे। इसी प्रकार "पारद शिवलिंग" और "नर्मदेश्वर" से संबंधित लेख खोजपूर्ण एवं गरिमा-युक्त है। "द्वादश ज्योतिर्लिंग" लेख में यात्रा आदि से संबंधित 'प्रेक्टिकल' वर्णन दिया है।

'रुद्राक्ष' के बारे में आपने जरूर पढ़ा होगा, पर इक्कीस मुखी रुद्राक्ष तथा प्रत्येक रुद्राक्ष का विनियोग ध्यान आदि पहली बार इस पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित हो रहा है, इसी प्रकार "महामृत्युञ्जय विधान" "रुद्राष्टाध्यायी-विधान" तथा "शिव-पूजा" अपने आप में महत्वपूर्ण लेख है, जिससे साधक लाभ उठा सकते हैं।

इस पत्रिका को तैयार करने में कई ग्रन्थों का सहारा लिया गया है, शिवपुराण, कल्याण, संविद्-सपर्या शिव तत्व दर्शन आदि ग्रन्थ काफी सहायक रहे हैं, मैं इन ग्रन्थों व सम्बन्धित लेखकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं।

शिवरात्रि से अक्षय तृतीया तक का समय "शिव-समय" कहलाता है। शास्त्रों के अनुसार इस अवधि में शिव-स्थापन, शिव-पूजा, आदि कार्यों से विशेष एवं तुरन्त सफलता मिलती है। इस समय घर में या अपने पूजा स्थान में "नर्मदेश्वर–शिवलिंग" स्थापन करने से अतुलनीय लाभ प्राप्त होता है। इस वर्ष यह समय ४ मार्च से ६ मई ८१ के बीच है।

आइए। हम सब भगवान शंकर को निम्न शब्दों में श्रद्धासुमन अर्पित करें—

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवर शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥

अर्थात् यदि सम्पूर्ण सागर को मसि-पात्र, बनाकर समस्त वन-वृक्षों की लेखनी से विधाता जीवन भर आपके गुणों को लिखती रहे फिर भी आपके गुणों की थाह पाना असम्भव है। ✤

भगवान गंगाधर : आरती

ॐ जय गंगाधर जय हर जय गिरिजाधीशा ।
त्वं मां पालय नित्य कृपया जगदीशा ।।१।। ॐ हर हर हर महादेव ।।
कैलासे गिरि शिखरे कल्पद्रुमविपिने ।
गुंजति मधुकर पुंजे कुंजवने गहने ।।
कोकिल कूजित खेलत हंसावन ललिता ।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता ।।२।। ॐ हर हर हर महादेव ।।
तस्मिल्ललित सुदेशे शाला मणिरचिता ।
तन्मध्ये हर निकटे गौरी मुदसहिता ।।
क्रीडा रचयति भूषारंजित निजमीशम् ।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम् ।।३।। ॐ हर हर हर महादेव ।।
विबुधवधू बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता ।
किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता ।।
धिनकत थै थै धिनकत मृदंग वादयते ।
क्वण क्वण ललिता वेणु मधुरं नाटयते ।।४।। ॐ हर हर हर महादेव ।।
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता ।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरूते तां धिक तां ।।
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते ।
अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरूते ।।५।। ॐ हर हर हर महादेव ।।
कर्पूरद्युतिगौरं पंचाननसहितम् ।
त्रिनयन शशिधरमौलि विषधरकण्ठयुतम् ।।
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम् ।
डमरूत्रिशूल पिनाकं करधृतनृकपालम् ।।६।। ॐ हर हर हर महादेव ।।
मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम् ।
वाम विभागे गिरिजा रूपं अतिललितम् ।।
सुन्दर सकल शरीरे कृतभस्माभरणम् ।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम् ।।७।। ॐ हर हर हर महादेव ।।
शंखनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते ।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते ।।
अति मृदुचरण सरोजं हृत्कमले धृत्वा ।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा ।।८।। ॐ हर हर हर महादेव ।।
ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा ।
रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा ।।
संगितमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते ।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्यां यः शृणुते ।।९।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

कुबेर यंत्र

कुबेर देवताओं के कोषाधिपति कहे जाते हैं, और इनकी साधना-उपासना देवताओं तक ने की है। शास्त्रों के अनुसार दरिद्रता निवारण, भाग्य-बाधा दोष समाप्ति एवं अद्भुत आश्चर्यजनक आर्थिक उन्नति के लिये यह साधना श्रेष्ठ ही नहीं, अत्युत्तम मानी जाती है।

बिरले भाग्यशाली ही अपने घर में कुबेर यंत्र रख पाते हैं। इस लेख में इन सबका विवेचन पूर्ण प्रामाणिकता से हुआ है, पत्रिका-पाठकों के लिये दुर्लभ, गोपनीय एवं महत्व पूर्ण लेख........

भारतीय ग्रन्थों में कुबेर को धन का देवता माना गया है, और देवताओं में भी कुबेर को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है क्योंकि वह आर्थिक समृद्धि का देवता है।

यह मन्त्र प्रामाणिक होने के साथ-साथ प्रत्येक गृहस्थ के लिये उपयोगी है। इस मंत्र का जप पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, यदि यह संभव न हो तो किसी योग्य विद्वान् से भी कुबेर मंत्र के जप करवाये जा सकते हैं।

विधान :

घर के पूजा स्थान में भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर लेना चाहिए, इसके बाद उसकी केशर आदि से षोडशोपचार पूजा करके उसमें लक्ष्मी का आह्वान करना चाहिए, इसके साथ ही इसके पास कुबेर यंत्र की स्थापना कर लेनी चाहिए।

कुबेर यंत्र अपने आप में पूर्णतः गोपनीय रहा है। यद्यपि तंत्र मंत्र से सम्बन्धित कई ग्रन्थों में कुबेर यंत्र का वर्णन आया है परन्तु इसका सही रूप में अंकन कहीं पर भी प्राप्त नहीं हुआ। लेखक इसकी खोज में था और कुछ वर्षों पूर्व उसे अपने गुरू से कुबेर यंत्र के बारे में पूर्णता से ज्ञात हुआ था, इस यंत्र के बारे में कहावत है कि पिता को चाहिए कि वह अपने पुत्र को भी कुबेर यंत्र का ज्ञान न दे। गुरू को भी चाहिए कि वह अपने जीवन में अपने अत्यन्त प्रिय शिष्य को ही इस यंत्र का ज्ञान दे। इन सारे तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय रहा है और आज तक प्रामाणिक रूप से न तो इसका प्रकाशन हुआ है और न इसके बारे में प्रामाणिकता से साधु-सन्तों को ज्ञान ही है। अटकलबाजी के सहारे वे इसके बारे में कुछ न कुछ कह देते हैं।

यह यंत्र अपने आप में अत्यन्त प्रभावशाली और श्रेष्ठ धनदायक यंत्र माना गया है। लगभग सभी तांत्रिकों और मंत्र-मर्मज्ञों ने इस यंत्र की सराहना की है। प्राचीन समय में जितने भी आश्रम थे, उन आश्रमों में पूर्ण विधि-विधान के साथ कुबेर यंत्र की स्थापना अवश्य होती थी, जिससे कि वे आश्रम धन धान्य से समृद्ध रहते थे, हजारों शिष्यों का पालन पोषण होता

था और वे आश्रम राजाओं से भी ज्यादा समृद्ध माने जाते थे, उनके मूल में कुबेर यंत्र का ही प्रभाव था।

कहते हैं कि राजा रावण ने महादेव से कुबेर यंत्र प्राप्त किया था और इस यंत्र को सिद्ध किया था, जिसके फलस्वरूप वह और उसका राज्य पूर्णतः समृद्ध हो सका था और उसकी लंका सोने की बन गई थी।

मेरे जीवन में ऐसे कई अनुभव हुए हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि यह यंत्र अपने आप में कितना अधिक प्रभावपूर्ण है। इस यंत्र की विशेषता यह है कि यह जीवन में पूर्ण समृद्धि देने में सहायक है, जिसके घर में यह यंत्र स्थापित होता है उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

पिछले कुम्भ में स्वामी प्रवज्यानन्दजी ने लगभग दस हजार साधुओं को भोजन कराया था। एक छोटे से कमरे में वे स्वयं बैठ गये थे और अन्दर से उन्होंने खाद्य सामग्री बाहर देते रहने का उपक्रम किया था। सभी साधु आश्चर्यचकित थे कि इनके पास अवश्य ही कोई न कोई ऐसी साधना है जिसके बल पर ये हजारों साधुओं को भोजन कराने में समर्थ हो सके है, जबकि वे अपने शरीर पर लंगोटी के अलावा कोई वस्त्र नहीं रखते। उनकी बगल में एक छोटा-सा झोला पड़ा रहता है और उस झोले में से वे खाद्य पदार्थ निकाल-निकालकर लोगों को खिलाते रहते हैं।

मेरा उनसे मधुर सम्बन्ध है, और पीछे के समय में भी मैं उनसे मिल चुका था, अतः जब मैंने उनसे जिज्ञासा की कि उनके पास कौनसी साधना है जिसके बल पर वे समृद्ध हैं और हजारों लोगों का पेट भरने में सक्षम हैं, उनका भण्डारा या कोष कभी भी खाली नहीं होता।

उन्होंने मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए रहस्योद्घाटन किया कि उन्होंने कुबेरसाधना सम्पन्न कर रखी है और उनके झोले में कुबेर यंत्र है जिसके बल पर वे समृद्ध हैं और जितना भी द्रव्य वे चाहते हैं प्राप्त हो जाता है।

आबू से आगे वशिष्ठ आश्रम है वहां पर भी एक साधु काफी समय पहले रहते थे जिन्हें लोग नंगा बाबा कहते थे, क्योंकि वे सर्वदा नंगे रहते थे और उनके पास एक झोला था जिसमें से वे मनचाही वस्तुएं तथा खाद्य पदार्थ निकालते रहते थे और उनके जीवन में आर्थिक अभाव कभी भी नहीं रहता था।

कुछ समय पहले उनका शरीर शान्त हो गया। मृत्यु से पूर्व उन्होंने लेखक को बुलाया था और अपने झोले से कुबेर यंत्र निकालकर देते हुए कहा था कि मेरे जीवन में जो कुछ भी है या मैं जीवन में जो कुछ प्राप्त कर सका हूं उसके मूल में यह कुबेर यंत्र ही है। तुम मेरे अत्यन्त प्रिय रहे हो, यद्यपि अब तुम गृहस्थ में चले गये हो परन्तु फिर भी तुम्हारी आत्मा साधुवत् है और मेरे मन में तुम्हारे प्रति अत्यन्त ऊँची भावना है, इसीलिये मैं यह कुबेर यंत्र तुम्हें देना अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

उनका यह कुबेर यंत्र आज भी मेरे पास सुरक्षित है और वास्तव में ही कलियुग में यह यंत्र आश्चर्यजनक सफलता एवं सिद्धि देने वाला है।

पिछली दीपावली को मुझे देश के श्रेष्ठतम उद्योगपति के यहां लक्ष्मी-पूजन के लिये निमंत्रण मिला। यद्यपि मैं व्यस्त था, परन्तु उनका आग्रह ज्यादा था और पिछले बीस वर्षों से उनका मुझसे मधुर सम्बन्ध रहा है। व्यस्तता होने पर भी मैंने दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी पूजन कराने की स्वीकृति दे दी।

जब मैं पूजन कराने के लिये बैठा तो उन्होंने तिजोरी में से निकालकर एक यंत्र मेरे सामने रखा और बताया कि पिछली तीन पीढ़ियों से हम इस यंत्र की पूजा दीपावली की रात को करते हैं। मेरे पड़दादा को यह यंत्र एक उच्च कोटि के महात्मा ने दिया था और कहा था कि यह यंत्र घर की एक तिजोरी में रख देना और नित्य एक बार इसका दर्शन कर लेना, साथ ही साथ दीपावली की रात्रि को इसका पूरी तरह से पूजन करके पुनः तिजोरी में रख देना।

तब से हम प्रत्येक दीपावली को इस यंत्र की पूजा करते आ रहे हैं। मेरे पिताजी ने यह यंत्र मुझे दिया

था और अब यह परम्परा बन गई है कि सबसे बड़े पुत्र को ही यह यंत्र दिया जाय। आज हम जो कुछ भी हैं इस यंत्र के फलस्वरूप ही हैं ऐसा मेरे पिताजी ने मुझे कहा था। मुझे ज्ञात नहीं है कि यह यंत्र क्या है, और इस यंत्र का क्या नाम है?

मैंने जब उस यंत्र का ध्यान पूर्वक अवलोकन किया तो मैं सुखद आश्चर्य में डूब गया क्योंकि वह मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कुबेर यंत्र ही था। इसी प्रकार के यंत्र को मैं आबू में नगे बाबा से प्राप्त कर चुका था, और इसी यंत्र को मैं कुम्भ में स्वामी प्रवज्यानन्दजी के पास देख चुका था।

वास्तव में ही यह यंत्र अपने आप में यंत्र राज है और पूरे तंत्र-मंत्र के ग्रन्थों में इस यंत्र को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। यह अलग बात है कि यह यंत्र अपने आप में गापनीय रहा है और सामान्य व्यक्तियों को सुलभ नहीं हो सका है।

यह यंत्र धातु का बना होना चाहिए, साथ ही साथ यह यंत्र केवल विजय काल में ही निर्मित होना चाहिए। जब इस यंत्र का निर्माण हो जाय तब पूर्ण विधि विधान के साथ प्राण प्रतिष्ठा और चैतन्य विधान होना चाहिए जिससे कि यह यंत्र पूर्ण प्रभाव युक्त हो सके।

इस प्रकार का यंत्र स्वयं ही सिद्ध होता है। किसी जटिल विधि विधान की आवश्यकता नहीं होती। गृहस्थ को चाहिए कि शुभ स्थान पर इस यंत्र को स्थापित कर देना चाहिए और नित्य इसके दर्शन तथा इसके सामने संभव हो तो अगरबत्ती व दीपक लगाना चाहिए। यह यंत्र जिसके घर में या जिसके पास होता है उसी को फलदायक होता है। किसी विशेष नाम से यंत्र का निर्माण नहीं होता। जिस प्रकार जहां पर भी दीपक लगाया जाता है वहीं रोशनी हो जाती है, ठीक उसी प्रकार यह यंत्र जिस घर में भी होता है उसी घर को ऊँचा उठाने व पूर्ण समृद्धि, सुख एवं सौभाग्य देने में सहायक होता है।

इस प्रकार मन्त्रसिद्ध होने के बाद इस पर पांच लाख मन्त्र जप करने से चैतन्य होता है।

विधान :

सर्व प्रथम इस यंत्र का निर्माण किसी सुपात्र या अच्छे वर्ण वाले व्यक्ति से विजय काल में ही कराना चाहिए, फिर इस यंत्र का षोडशोपचार पूजन कर इसमें प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

प्राण प्रतिष्ठा के बाद निम्न विनियोग करना चाहिए—

विनियोग :

अस्य कुबेर मंत्रस्य विश्रवा ऋषिः बृहती छंदः। शिवमित्र धनेश्वरो देवता, दारिद्रय विनाशने पूर्ण समृद्धि सिद्धयर्थे जपे विनियोग।

ध्यान :

मनुजवाह्यविमान वरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुंदिलम्॥

विरोचन :

इसके बाद कर न्यास और अंग न्यास करना चाहिए तथा सर्वतोभद्र मंडल बनाकर उस पर इस यंत्र को स्थापित करना चाहिए। उसके सामने ग्यारह दीपक लगाकर यंत्र पर दुग्धधारा देते हुए निम्न मन्त्र से अभिषेक करना चाहिए—

मंत्र

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।

तत्पश्चात् दस हजार पुष्पों से अभिषेक कर पुष्पांजली देनी चाहिए और उस यंत्र पर निम्न कुबेर मंत्र का पांच लाख मंत्र जप करना चाहिए, तब यंत्र सिद्ध होता है।

कुबेर मंत्र—

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यादिपतये धनधान्यसमृद्धि मे देहि दापय स्वाहा ।

जब पांच लाख मंत्र जप हो जाय तब उसका दशांश घृत यज्ञ करना चाहिए जिससे कि यंत्र सिद्ध हो जाता है ।

इस प्रकार का सिद्ध यंत्र अपने आप में ही दुर्लभ होता है और यह यंत्र वास्तव में ही यंत्रराज कहलाने में सक्षम है क्योंकि जब आज के युग में मानव की प्रतिष्ठा, सम्पत्ति आदि से ही आंकी जाती है तब प्रत्येक व्यक्ति का या गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह पूर्ण भौतिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर जीवन को उच्चता प्राप्त करे ।

परन्तु केवल मात्र प्रयत्न या परिश्रम से ही सब कुछ संभव नहीं होता, परिश्रम के साथ ही साथ यदि मंत्र आदि का सहारा लिया जाय तो निश्चय ही वह पूर्ण उन्नति और समृद्धि प्राप्त कर सकता है ।

आर्थिक-उन्नति, व्यापार-वृद्धि एवं पूर्ण सुख सौभाग्य प्राप्त करने के लिये इससे श्रेष्ठ न तो कोई साधना है और न कोई यंत्र ही ।

इस यंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि नित्य इसका पूजन आवश्यक नहीं है, अपितु केवल मात्र इसके दर्शन ही पर्याप्त है । इस यंत्र को घर के पूजा स्थान में, फैक्ट्री में, कारखाने में, उद्योग स्थान पर स्थापित किया जा सकता है । स्थापित करते समय भी किसी प्रकार की विधि विधान की आवश्यकता नहीं होती, केवल मात्र इसकी उपस्थिति ही कुबेरवत् उन्नति देने में समर्थ है ।

वास्तव में ही हम भारतवासी सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पूर्वजों ने इतने श्रेष्ठ मंत्र, और साधनाओं को हमारे सामने रखा और हम उसका लाभ उठाने में समर्थ हो सके हैं, पर जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है— "सकल पदारथ है जग मांहीं, भाग्यहीन नर पावत नाहीं।" अतः इस प्रकार का यन्त्र भाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में स्थापित कर सकते हैं ।

जीवन में पूर्णता, श्रेष्ठता, दिव्यता, उच्चता, समृद्धि, सुख-सौभाग्य, व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति, पुत्र-सुख, दीर्घायु, स्वस्थता, एवं सभी प्रकार के सुख-सौभाग्य प्रदान करने में यह यंत्र समर्थ है क्योंकि अष्ट लक्ष्मी साधना, का समावेश स्वतः ही कुबेर यंत्र में हो जाता है ।

अभी तक यह यंत्र गोपनीय रहा है, परन्तु मेरा कर्त्तव्य है कि मैं पत्रिका के सदस्यों से इस गोपनीयता से परिचित कराऊँ और वे इस मंत्र और यंत्र का पूर्ण लाभ उठाकर जीवन में सभी प्रकार से पूर्णता प्राप्त कर सकें ।

> यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो
> यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः ।
> श्रीसुन्दरी सेवन तत्पराणां
> भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ।।
>
> अर्थात् जहां भोग है, वहां मोक्ष नहीं है और जहां मोक्ष है वहां भोग नहीं है, परन्तु देवी श्रीसुन्दरी के सेवन में तत्पर पुरुषों के लिये भोग और मोक्ष दोनों सुविधायुक्त प्राप्य हैं ।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष भगवान् शंकर का प्रिय आभूषण, दीर्घायु प्रदान करने वाला तथा अकाल मृत्यु को समाप्त करने वाला है । यह जहां गृहस्थ व्यक्तियों के लिये अर्थ और काम को प्रदान करने वाला है, वहीं पर सन्यासियों के लिये धर्म और मोक्ष देने वाला है । इससे स्त्रियों को पुत्र लाभ होता है, मनुष्य की शारीरिक व्याधियों को दूर करने वाला, मन को शान्ति प्रदान करने वाला तथा योगियों की कुण्डलिनी जाग्रत करने वाला है । जिसके घर में रुद्राक्ष होता है, वहाँ भूत-प्रेतादि का उपद्रव नहीं होता तथा यह प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिये सफलतादायक माना गया है ।

रुद्राक्ष परिचय

यह मध्यम कद का वृक्ष होता है, जो हिमालय की तलहटी, नेपाल तथा भूटान की तरफ विशेष रूप से पैदा होता है । इस पौधे के पत्ते छोटे और कुछ-कुछ गोल होते हैं । इसके बीजों को रुद्राक्ष कहा जाता है । अलग-अलग प्रान्तों में इसके अलग-अलग नाम हैं—हिन्दी में इसे रुद्राक्ष, बंगाल में—रुद्राक्ष, मराठी गुजराती में—रुद्राक्ष, तामिल में—अक्कम, तेलगु में—रुद्रचिल्लु, आसाम में—रुद्रई, लुद्राक, उद्राक, संस्कृत में—रुद्राक्ष, शिवाक्ष, सर्वाक्ष, भूतनाशम, नीलकण्ठाक्ष, हराक्ष और शिवप्रिय तथा अंग्रेजी में UTRASUM BEED TREE कहते हैं ।

आयुर्वेदिक विचार

आयुर्वेद के अनुसार यह खट्टा, गर्म वायु को नष्ट करने वाला, कफ दूर करने वाला, सिर दर्द मिटाने वाला, तथा भूख बढ़ाने वाला है ।

चेचक, मोदरी, तथा अछवड़ा की बीमारी में रुद्राक्ष की माला धारण करने से ये बीमारियां समाप्त हो जाती हैं और यदि पहले से ही धारण किया जाए तो ये बीमारियां नहीं होतीं । इसके धारण करने से मानसिक उन्माद तथा भूत-प्रेत बाधा जीवन में प्राप्त नहीं होती, यदि बालक को कफ हो गया हो या छाती में कफ जम गया हो तो शहद में रुद्राक्ष के दो-तीन दाने घिस कर चटा देने से छाती में चिपका हुआ कफ निकल जाता है तथा बालक को पूर्ण आराम मिल जाता है ।

ब्लड प्रेसर के रोगियों के लिये तो यह प्राण-दायक माना गया है, यदि रुद्राक्ष की माला धारण की जाय तो यह रोग उसके जीवन में नहीं रहता । यदि रक्त-चाप बढ़ा हुआ हो तो असली रुद्राक्ष के दो दाने दो औंस जल में भिगो कर रात भर रखें तथा सबेरे खाली पेट उस जल को पी लिया जाए तो इस प्रकार एक सप्ताह में ही रक्तचाप कम हो जाता है, और नियमित सेवन करने से यह रोग हमेशा के लिये समाप्त हो जाता है । हृदय की बीमारियों में यह

गले में धारण किया जाता है, जिससे हृदय रोग समाप्त हो जाता है, ऐसा प्रयोग लगभग तीन महीने तक करना चाहिये।

चेचक पर रुद्राक्ष का दाना पानी में घिस कर लगाने से चेचक रोग समाप्त हो जाता है।

आध्यात्मिक विचार

जो व्यक्ति रुद्राक्ष को धारण करता है, वह स्वय रुद्र तुल्य हो जाता है। यह शिवजी को अत्यन्त प्रिय है, इसके दर्शन करने से ही पापों का क्षय हो जाता हैं जो मनुष्य भक्ति मुक्ति, मोक्ष और भोग समान रूप से चाहता है, उसके लिये रुद्राक्ष अत्यन्त अनुकूल कहा गया है। रुद्राक्ष की माला धारण करने से मनुष्य, काल से भी भयभीत नहीं होता। इसकी माला जपने से मन्त्र सिद्धि में सफलता मिलती है। शिव पुराण के अनुसार यदि कोई मनुष्य धर्म से हीन तथा कुकर्मी हो पर वह रुद्राक्ष से प्रेम करता हो या रुद्राक्ष धारण करता हो तब भी वह समस्त प्रकार के पापों से छूट कर शिव पद प्राप्त करता है।

किसी भी वर्ण का व्यक्ति रुद्राक्ष धारण कर सकता है, परन्तु उसे शुद्ध और पवित्र रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। दिन को रुद्राक्ष धारण करने से रात्रिजनित पाप समाप्त हो जाते हैं और रात्रि में रुद्राक्ष धारण करने से दिन भर के किये गये पाप क्षय हो जाते हैं।

रुद्राक्ष-उत्पत्ति

शास्त्रों के अनुसार भगवान् शिव ने रुद्राक्ष की उत्पति के बारे में षण्मुख को बताया था कि एक समय त्रिपुर नाम का एक दैत्य बड़ा ही दुर्जय तथा पराक्रमी हो गया था, उसने ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी देवताओं का तिरस्कार करना शुरू किया तब देवताओं ने मुझे त्रिपुर का वध करने को कहा और इस निमित्त मैंने महाघोर रूपी अघोर अस्त्र का चिन्तन किया और एक हजार वर्ष तक जब मैंने अपने नेत्र बन्द किये तो मेरे नैत्रों से जो जल बिन्दु गिरे, पृथ्वी पर उन अश्रु-बिन्दुओं से रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हुए।

रुद्राक्ष धारण करने के नियम

१– सभी वर्ण के लोग रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं पर ब्राह्मणों को चाहिये कि वे मंत्र के साथ रुद्राक्ष धारण करें पर अन्य वर्णों को बिना मन्त्र के भी रुद्राक्ष धारण करने की आज्ञा है।

२– रुद्राक्ष धारण करते समय "ॐ नमः शिवाय" का जप करना चाहिये तथा ललाट पर भस्म लगानी चाहिये।

३– स्नान, दान, जप होम, वैश्वदेव, देवताओं की पूजा, प्रायश्चित, श्राद्ध और दीक्षाकाल में यदि बिना रुद्राक्ष धारण किये जो कुछ भी वैदिक कार्य किया जाता है, वह व्यर्थ जाता है।

४– अपवित्रता के साथ रुद्राक्ष धारण न करें, रुद्राक्ष को भक्ति के साथ धारण करना चाहिये।

५– सोने अथवा चांदी के तारों में पिरो कर इसकी माला धारण करनी चाहिये, लाल धागे में भी यह माला पिरोई जा सकती है।

६– पुरुष यज्ञोपवीत, हाथ, कण्ठ अथवा पेट पर रुद्राक्ष धारण कर सकता है।

७– जो शिव के भक्त हैं उनको अपने आप में रुद्राक्ष का कड़ा धारण करना चाहिये, विषम संख्या से युक्त रुद्राक्ष माला धारण करनी उत्तम मानी गयी है।

८– सोने की अंगूठी में यदि रुद्राक्ष जड़वा कर दाहिने हाथ की किसी भी उंगली में धारण करें तो उसे मनोवाछित फल प्राप्त होता है।

९– जो मनुष्य सिर में रुद्राक्ष धारण करके स्नान करता है उसे गंगा स्नान के समान फल प्राप्त होता है।

१० जो नित्य रुद्राक्ष पूजन या रुद्राक्ष धारण करता है, वह राजा के समान धनवान होता है।

११– रुद्राक्ष धारण करने पर चालीस दिन के भीतर-भीतर कार्य सिद्धि होती है पर इसमें अटूट श्रद्धा तथा विश्वास आवश्यक है।

१२– मृग चर्म पर बैठकर पूर्व की तरफ मुंह करके रुद्राक्ष धारण कर किसी भी मन्त्र का जप किया जाए तो अभूतपूर्व सिद्धि प्राप्त होती है।

१३– रुद्राक्ष के दर्शन करने से पुण्य लाभ, स्पर्श से करोड़ गुना पुण्य तथा धारण करने से सौ कोटि गुना पुण्य फल प्राप्त होता है। इसके जप से करोड़ गुना फल मिलता है।

फलस्य दर्शने पुण्यं स्पर्शात्कोटिगुणं भवेत्,
शतकोटि गुणं पुण्यं धारणाल्लभते नरः।
लक्ष्यकोटि सहस्राणि लक्षकोटिशतानि च,
जपाच्च लभते नित्यं नात्र कार्य विचारणा॥

१४– शिव प्रसन्न करने के लिये तथा शिव साधना में सफलता प्राप्त करने के लिये रुद्राक्ष का दान श्रेष्ठ माना गया है।

१५– मृत्यु के समय जिसके गले में रुद्राक्ष होता है, वह निश्चय ही शिव लोक में गमन करता है।

१६– शिव पुराण के अनुसार सिर पर रुद्राक्ष धारण करने से एक करोड़ गुना फल, कान में दस करोड़ गुना फल, गले में सौ करोड़ गुना फल, तथा मणिबन्ध में रुद्राक्ष धारण करने से पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है।

१७– शास्त्रों के अनुसार जो व्यक्ति दोनों भुजाओं में सोलह-सोलह, शिखा में एक, हाथ में बारह, कण्ठ में बत्तीस, मस्तक पर चालीस, कान में एक-एक, वक्षस्थल पर छः, इस प्रकार जो व्यक्ति एक सौ आठ रुद्राक्ष धारण करता है वह साक्षात रुद्र के समान पूजनीय हो जाता है।

१८– बेर के समान मध्यम, चने के सामान आकार वाले रुद्राक्ष अधम तथा आंवले के समान आकार वाले रुद्राक्ष श्रेष्ठ माने गये हैं।

१९– चार प्रकार के रुद्राक्ष होते हैं अतः ब्राह्मण को श्वेत वर्ण के रुद्राक्ष, क्षत्रिय को लाल, वैश्य को पीले तथा शूद्रों को काले वर्ण के रुद्राक्ष धारण करने चाहिए।

२०– जो रुद्राक्ष दृढ़, चिकना और मोटा होता है वह श्रेष्ठ रुद्राक्ष माना जाता है, इसके विपरीत जो कीड़ों से खाये हुए, बिना कांटों के, छिद्र करते समय फटे हुए तथा कृत्रिम रुद्राक्ष नुकसान देने वाले माने गये हैं।

२१– जिस प्रकार कसौटी पर घिसने से सोने की रेखा पड़ जाती है उसी प्रकार जिस रुद्राक्ष की कसौटी पर रेखा पड़ जाए वह श्रेष्ठ रुद्राक्ष माना जाता है।

माला-प्रकार

शास्त्रों के अनुसार अलग-अलग कार्यों के लिये अलग-अलग मालाओं का विधान है।

१– पुत्रजीवा की माला धारण करने से पुत्र प्राप्ति होती है।

२– मोतियों की माला भाग्यवर्धन में सहायक होती है।

३– अर्थ प्राप्ति में मणियों की माला श्रेष्ठ मानी गई है।

४– कुश माला पापों का हरण करने वाली होती है।

५– सोने के मनकों की माला सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण करने वाली होती है।

६– मुक्ति के लिये श्वेत शिला की माला उत्तम मानी जाती है।

७– अरिष्टमूल की माला अरिष्ट शान्ति में सहायक मानी जाती है।

८– रुद्राक्ष की माला धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों फलों को देने वाली है।

९– एक सौ चार दानों की माला स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है।

१०– एक सौ आठ दानों की माला सभी कार्यों में सिद्धि देती है।

११– सौ दानों की माला मोक्ष प्रदान करती है।

१२– सत्तावन दानों की माला सिद्धिदायक होती है।

१३– सत्ताइस दानों की माला तांत्रिक सफलता देने में सहायक होती है।

१४– बत्तीस दानों की माला लक्ष्मी प्राप्ति में सहायक होती है।

रुद्राक्ष धारण विधि

इस लेख में पहली बार रुद्राक्ष धारण करने की विधि स्पष्ट की जा रही है। मुख्यत: चौदह रुद्राक्ष श्रेष्ठ माने गये हैं यद्यपि भारत में इक्कीस मुखी रुद्राक्ष तक प्राप्त होते हैं। मैं नीचे शास्त्रों में वर्णित इक्कीस मुखी रुद्राक्षों का वर्णन व धारण विधि स्पष्ट कर रहा हूँ।

एकमुखी रुद्राक्ष

तांत्रिक क्षेत्र में साक्षात् शंकर के समान महाभोगी (लखपति) या महायोगी ही एकमुखी रुद्राक्ष धारण कर सकता है। एकमुखी रुद्राक्ष के स्वामी को जीवन में किसी भी वस्तु का अभाव नहीं रहता है और लक्ष्मी उसके घर में चिरस्थायी बनी रहती है। एकमुखी रुद्राक्ष की एक पहचान और भी है कि यदि इसे एक कप पानी में डाल दिया जाय तो बीस-पच्चीस मिनट बाद पानी खौलने लग जाता है।

एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से चिन्तन में प्रसन्नता, अनायास धन प्राप्ति, रोगमुक्ति, व्यक्तित्व में निखार तथा शत्रु पर विजय होती है। ऐसा व्यक्ति जीवन में मनोवांछित इच्छाएं पूर्ण करने में सफल होता है। इसके धारण करने से पुराना दमा ठीक हो जाता है, तपेदिक आदि रोगों में भी यह रामबाण है।

प्रत्येक रुद्राक्ष को सिद्ध करने का एक विशिष्ट मन्त्र है। अटूट लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इस रुद्राक्ष को सिद्ध किया जाता है।

यह साक्षात् रुद्र स्वरूप है और यह विश्व में अत्यन्त दुर्लभ है जिसके घर में यह रुद्राक्ष होता है, उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। यह रुद्राक्ष ब्रह्म हत्या के दोष को दूर करने वाला माना गया है।

मन्त्र

ॐ एं हं औं एं ॐ। इति मन्त्रः।

अस्य श्री शिव मन्त्रस्य प्रासाद ऋषिः पंक्ति छन्दः शिवो देवता हंकारो बीजम् औं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। वामदेव ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमो मुखे, ॠ ऐं ऐं नमः हृदि, इं बीजाय नमो गुह्ये, औं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ऐं ह्रीं तर्जनीभ्यांस्वाहा, ॐ ह्रीं ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ औं ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ऐं ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् इति-करन्यासः ॥ (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ औं ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ऐं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ॐ : ह्रः अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम्

मुक्तापीनपयोदमौक्तिकजपावर्णैर्मुखैः पञ्चभि।
स्त्र्यक्षैः राजितमीशमिन्दुमुकुटं पूर्णेन्दुकोटिप्रभम्।
शूलंटंककृपाणवज्रदहनान्नागेन्द्रघंटांकुशं।
हस्ताजेष्वभयं वरांश्चदधतं तेजोज्ज्वलं चिन्तये।

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य कुर्याज्जपसहस्रकं तदन्तरमाभिमुख्यसामोप्य

घटोपरि ताम्रपात्रं निधाय तत्र रुद्राक्षं क्षिप्त्वा पंक्तिप्राणायामं कृत्वा। पश्चात् वामे जलपात्रं धृत्वा तत्र तले सव्यहस्तं धृत्वा दक्षिणपाणिना सहस्रजपं कुर्यात्। पुनस्तस्योपरि जलं क्षिपेत् रुद्राक्षं धारयेत्। एवं सर्वत्र विधिर्ज्ञेयः ॥

द्विमुखी रुद्राक्ष

शास्त्रों में दो मुखी रुद्राक्ष अर्धनारीश्वर का प्रतीक माना है, शिवभक्तों के लिए इस रुद्राक्ष को धारण करना ज्यादा अनुकूल है। तामसी वृत्तियों के परिहार के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त है, चित्त की एकाग्रता मानसिक शान्ति, जीवन में आध्यात्मिक उन्नति, कुण्डलिनी जागरण आदि के लिए इसका प्रयोग सर्वथा उपयुक्त है। वशीकरण के लिये रुद्राक्ष का प्रयोग अचूक माना गया है।

यह अर्धनारीश्वर होता है. इसे साक्षात् शिव स्वरूप माना जाता है तथा इसके धारण करने से गौ वध पाप दूर हो जाता है।

मन्त्र

ॐ क्षीं ह्रीं क्ष्रौं व्रीं ॐ। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीदेवदेवेशमन्त्रस्य अत्रिऋषि गायत्री छन्दः देवदेवेशो देवता, क्षीं बीजं, क्ष्रौं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। अत्रिऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। देवदेवेशाय नमो हृदि। क्षीं बीजाय नमो गुह्ये। क्ष्रौं शक्तये नमः पादयोः। (करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ क्षीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ क्ष्रौं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ व्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं शिखायै वषट्। ॐ क्ष्रौं कवचाय हुं। ॐ व्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ॐ अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

तपनसोमहुताशनलोचनं।
घनसमानगलं शशिसुप्रभम्।
अभय चक्रपिनाकवरान्करै।
र्दधतमिन्दधरं गिरिशं भजेत्।

त्रिमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष अग्नि स्वरूप माना गया है, यह त्रयाग्नि का प्रतिरूप है, इसे धारण करने से किसी भी प्रकार की बीमारी, बुखार या कमजोरी नहीं रहती, पीलिया के रोग में यह रामबाणवत् है, यदि दूध में घिस कर पिलाया जाए तो आंखों का जाला कट जाता है। इसके धारण करने से व्यक्ति क्रियाशील रहता है, यदि व्यक्ति की नौकरी नहीं लग रही हो, बेकार हो, रुग्ण हो, तो इसके धारण करने से निश्चय ही कार्यसिद्धि होती है।

यह रुद्राक्ष अग्नि स्वरूप है, इसके धारण करने से स्त्री हत्या का पाप दूर हो जाता है।

मन्त्र

ॐ रं इं ह्रीं ह्रूं ॐ। इति मन्त्रः।

अस्य श्री अग्निमन्त्रस्य वसिष्ठज ऋषिः। गायत्री छन्दः। अग्निदेवता, ह्रीं बीजं, ह्रूं शक्ति चतुर्वर्गसिध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। वसिष्ठजऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे। अग्निदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ह्रूं शक्तये नमः पादयोः ॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ इं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां

हुँ। ॐ ह्रूं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ रें शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रं शिखायै वषट्। ॐ ह्लीं कवचाय हुँ। ॐ ह्रूं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ॐ अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

अष्टशक्ति स्वस्तिकामातिमुच्चै।
दीर्घैरेभिर्धारयंतं जपाभम् ।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं।
ध्यायेद्ब्रह्मि बद्धमौलि जटाभिः ।।३।।

चतुर्मुखी रुद्राक्ष

यह चतुर्मुख ब्रह्मा का प्रतिनिधि है। यह शिक्षा में सफलता देता है। जिसकी मन्द बुद्धि हो, वाक्शक्ति कमजोर हो, स्मरण शक्ति क्षीण हो, उसके लिए यह रुद्राक्ष कल्पतरु के समान है, इसके धारण करने से शिक्षा, भेंट आदि में असाधारण सफलता मिलती है सम्मोहन वशीकरण के क्षेत्र में भी इसका प्रयोग किया जाता है, इसे दूध में उबाल कर बीस दिन तक पीने से मस्तिष्क संबंधी विकार दूर होते हैं।

ऐसा रुद्राक्ष अग्नि पितामह ब्रह्मा के स्वरूप वाला माना गया है, इसके धारण करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है तथा उत्तम आरोग्य की प्राप्ति होती है। नर हत्या के पाप से व्यक्ति इसके धारण करने से छूट जाता है।

मन्त्र

ॐ वां क्रां तां ह्रां ईं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीब्रह्मामन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता वां बीजं क्रां शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। ब्रह्मादेवतायै नमो हृदि। वां बीजाय नमो गुह्ये। क्रां शक्तये नमः पादयोः।। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वां तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ क्रां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ तां अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ ह्रां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ईं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयायनमः। ॐ वां शिरसे स्वाहा। ॐ क्रां शिखायै वषट्। ॐ तां कवचाय हुँ। ॐ ह्रां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ईं, अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

प्रणम्य शिरसा शश्व।
दष्टवक्त्रं चतुर्मुखम्।
गायत्री सहितं देवं।
नमामि विधिमीश्वरम् ।।५।।

पंचमुखी रुद्राक्ष

पंचमुखी रुद्राक्ष भगवान शंकर का प्रतिनिधि है। सामान्यतः यह बाजार में प्राप्त हो जाता है, तथा अन्य सभी रुद्राक्षों की अपेक्षा यह सस्ता होता है। शत्रुनाश के लिए यह रुद्राक्ष पूर्णतया फलदायी है, इसके धारण करने से सांप-विच्छू आदि जहरीले जानवरों का डर नहीं रहता। विद्वेष एवं शत्रुस्तम्भन आदि कार्यों में यह परम उपयोगी है। मानसिक शांति एवं प्रफुल्लता के लिए भी इस रुद्राक्ष का उपयोग किया जाता है।

यह रुद्राक्ष उन्नतिदायक माना गया है और इसे कालाग्नि के नाम से पुकारा जाता है। परस्त्री गमन के पाप से ऐसा व्यक्ति मुक्त हो जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रां अां क्ष्म्यौं स्वाहा। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः सदाशिवकालाग्निरुद्रो देवता ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे। श्रीसदाशिवकालाग्निरुद्रदेवतायै नमो हृदि। ॐ बीजाय नमो गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ अां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्ष्म्यौं अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ह्लां अां क्ष्म्यौं स्वाहा, करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्।। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ ह्लां शिरसे स्वाहा। ॐ अां शिखायै वषट्। ॐ क्ष्म्यौं कवचाय हुँ। ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय। वौषट् ॐ ह्लां अां क्ष्म्यौं स्वाहा अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

हावभावविलसार्द्धनारिकं।
भीषणार्धमथवा महेश्वरम्।
दाशसोत्पलकपालशूलिनं।
चिन्तये जपविधौ विभूतये ।।५।।

षण्मुखी रुद्राक्ष

साधक षण्मुखी रुद्राक्ष को गणपति का प्रतीक मानते है, ऋद्धि सिद्धि प्राप्त करने, कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करने तथा व्यापार में अद्भुत आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसे धारण करने से व्यक्ति के जीवन में भौतिक दृष्टि से कोई कमी नहीं रहती, दारिद्र्यनाश, लक्ष्मी प्राप्ति आदि के लिए भी यह रुद्राक्ष उपयोगी है। हिस्टीरिया, मूर्च्छा, प्रदर, स्त्रियों से संबंधित रोग दूर करने में इसका प्रयोग पूर्ण सफल रहता है।

इसे कार्तिकेय का स्वरूप माना गया है, इसके धारण करने से घर में साक्षात अन्नपूर्णा का वास हो जाता है और उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीमन्त्रस्य दक्षिणा मूर्त्ति ऋषिः पंक्तिश्छन्दः कार्त्तिकेयदेवता, ऐं बीजं सौं शक्तिः क्लीं कीलकं अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। दक्षिणामूर्त्ति ऋषयेनमः शिरसि पंक्तिश्छन्दसे नमो मुखे। कार्त्तिकेयदेवतायै नमो हृदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ऐं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं शिखायै वषट्। ॐ क्लीं कवचाय हुँ। ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

क्रौंचपर्वतविदारणलोलो।
दानवेन्द्रवनिताकृतखण्डः।
चूतपल्लवशिरोमणिचोपी।
भीषडानन जगत्परिपाहि ।।६।।

सप्तमुखी रुद्राक्ष

यह सात मातृकाओं का प्रतिनिधि रुद्राक्ष अत्यन्त उपयोगी तथा लाभप्रद है। दीर्घायु प्राप्त करने के लिए इसका प्रयोग उपयोगी है। ज्योतिष की दृष्टि से जब-जब भी किसी बालक या व्यक्ति

का मारकेश समय अनुभव हुआ है और इसे पहनाया है, तब तब आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिले हैं, मेरा ऐसा अनुभव है कि जो व्यक्ति इस प्रकार का रुद्राक्ष धारण करता है, उसकी मृत्यु शस्त्र से नहीं होती, और न उसे अकाल मृत्यु का ही सामना करना पड़ता है।

सन्निपात, शीतज्वर, मिर्गी आदि रोगों में इसका प्रयोग सफल रहता है।

यह देवताओं की सप्त माताओं का द्योतक माना गया है। इसे पहिनने से महालक्ष्मी की प्राप्ति होती है और जीवन में अचल सम्पत्ति प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्रीं ग्लौं ह्रीं स्रौं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीअनन्त मन्त्रस्य भगवान् ऋषिः गायत्री छन्दः अनन्तो देवता, क्रीं बीजं ह्रीं शक्ति अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः। भगवान् ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। अनन्त देवतायै नमो हृदि। क्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ग्लौं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ स्रौं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रीं शिखायै वषट्। ॐ ग्लौं कवचाय हुँ। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट। ॐ स्रौं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

अनन्त पुंडरीकाक्षं फणाशतविभूषितम्।
विश्वकबन्धूक आकारं, कूर्मारूढं प्रपूजयेत्।

अष्टमुखी रुद्राक्ष

यह अष्टदेवी का प्रतिनिधि रुद्राक्ष है। ज्ञान प्राप्ति, मनस्तोष तथा चित्त की एकाग्रता में इसका योगदान बेजोड़ है। जब काफी प्रयत्न करने पर भी ध्यान एकाग्र न होता हो, या कुण्डलिनी जागरण न होती हो तब उस समय यह रुद्राक्ष इसमें सफलता देता है। व्यापारी वर्ग के लिए यह परम उपयोगी है। प्रत्येक व्यापार में उन्नति के लिए यह सहायक है। सट्टे, जुए, घुड़दौड़, आकस्मिक धनलाभ में यह पूर्णतः सहायक होता है।

प्रत्येक प्रकार के विघ्नादि शांति के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। जिस व्यक्ति के शरीर पर यह रुद्राक्ष हो, उस पर किसी भी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग संभव नहीं। यह प्रेम प्रसगों में सफलता देता है। पक्षाघात, जलोदर आदि रोगों में इसका प्रयोग सफल रहा है

यह अष्ट वसु का भी द्योतक है, किसी भी प्रकार का पाप इसके धारण करने से समाप्त हो जाता है, यह रुद्राक्ष मुक्ति प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सहायक माना गया है।

मन्त्र

ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीगणेशमन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः विनायको देवता ग्रीं बीजं आं शक्तिः चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टप्छन्दसे नमो मुखे। विनायक देवतायै नमः हृदि। ग्रीं बीजाय नमो गुह्ये। आं शक्तये नमः पादयोः। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ग्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ लं अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ आं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ स्रौं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यास) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्रां शिरसे स्वाहा ॐ ग्रों शिखायै वषट् ॐ लं कवचाय हुँ, ॐ आं नत्रत्रयाय वौषट् ॐ श्रीं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

हरतु कुल गणेशो विघ्नसंधानशेषान्।
नयतु सकलसम्पूर्णतां साधकानाम्।
पिबतु बटुकनाथः शोषितं निम्नकानां।
दिशतु सकलकामान् कौलिकानां गणेशः॥

नवमुखी रुद्राक्ष

यह नौ शक्तियों का प्रतिनिधि है। यह रुद्राक्ष भी कठिनता से प्राप्त होता है। समस्त प्रकार की साधनाओं में सफलता, प्रसिद्धि, सम्मान एवं यश प्राप्ति में यह रुद्राक्ष बेजोड़ है। दुर्गा से संबंधित तन्त्र एवं साधनादि में इससे सफलता मिलती है। शत्रुओं को परास्त करने एवं मुकदमें में सफलता के लिए भी इस रुद्राक्ष का उपयोग किया जाता है। जो व्यक्ति हृदय से दुर्बल हैं वे हृदय से संबंधित किसी भी बीमारी को दूर करने में इसका प्रयोग कर सकते हैं।

इसे भैरव के नाम से पुकारा जाता है, जो व्यक्ति ऐसा रुद्राक्ष धारण करता है, उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती और जीवन में आकस्मिक दुर्घटना का भय नहीं रहता।

मन्त्र

ॐ ह्रीं वें यें रें लें। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीभैरवमन्त्रस्य नारदऋषिः गायत्री छन्दः भैरवो देवता, वें बीजं, ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। नारदऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, भैरवदेवतायै नमो हृदि, वें बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ वें, मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ यें अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ रं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ लें करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ वें शिखायै वषट्, ॐ यें कवचाय हुँ, ॐ रें नैत्रत्रयाय, वौषट् ॐ लें अस्त्राय, फट्॥

अथ ध्यानम्

कपालहस्तं भुजगोपवीतं।
कृष्णच्छविदण्डधरं त्रिनेत्रम्।
अचिन्त्यमाद्यं अधुपानमतं।
हृदि स्मरेद्भैरवमिष्टदं नृणाम्।

दशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष यम का स्वरूप है और लगभग दुर्लभसा है, तांत्रिक क्षेत्र में इसका बहुत अधिक महत्व है, जो व्यक्ति गले में यह रुद्राक्ष धारण करता है, उस पर मारण मोहन आदि का कोई प्रभाव नहीं होता। ऐसा व्यक्ति न तो अकाल मृत्यु का सामना करता है और न दुर्घटना का खतरा हो, सभी विघ्न बाधाओं से वह व्यक्ति सुरक्षित रहता है।

दूध के साथ यदि यह रुद्राक्ष घिस कर तीन बार चटाया जाए तो कूकर खांसी का निवारण होता है।

यह रुद्राक्ष साक्षात विष्णु के स्वरूप का माना गया है। इसके धारण करने से व्यक्ति समस्त संसार में प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त करता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं व्रीं ॐ। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीजनार्द्दनमन्त्रस्य नारदऋषिः अनुष्टुप्छन्दः जनार्द्दनो देवता श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। नारदऋषये नमः शिरसि, अनुष्टु-

ष्छन्दसे नमो मुखेः जनार्दनदेवतायै नमो हृदिः, श्रींबीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नम पादयोः ।। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहाः, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं शिखायै वषट् ॐ क्लीं कवचाय हुँ ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ॐ अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

विष्णु शारदचन्द्र कोटिसदृशं शंखं रथांगं गद ।
मम्भोजं दधतं सिताब्जनिलयं कांत्यां जगन्मोहनम् ।
आबद्धांगदहारकुण्डंमहामौलिस्फुरत्कंकणं ।
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरंवन्दे मुनीन्दैस्स्तुतम् ।

एकादशमुखी रुद्राक्ष

यह एकादश रुद्र का प्रतीक है, प्रयत्नसाध्य है। स्त्रियों के लिए यह रुद्राक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, पति की सुरक्षा उसकी दीर्घायु एवं उन्नति तथा सौभाग्य प्राप्ति में यह रुद्राक्ष उपयोगी है संतान प्राप्ति में भी इस रुद्राक्ष का उपयोग किया जाता है। 'जावल्योपनिषद्' के अनुसार इस रुद्राक्ष को अभिमन्त्रित कर कोई भी स्त्री धारण करे तो उसे निश्चय ही पुत्रलाभ होता है। संक्रामक रोगों के नाश के लिए भी इस रुद्राक्ष का उपयोग किया जाता है।

यह साक्षात रुद्र स्वरूप माना गया है, इसके धारण करने से व्यक्ति के जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

ॐ रूं क्षूं मूं यूं ॐ। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीरुद्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता रूं बीजं, क्षूं शक्तिः अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। कश्यप ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, रुद्र देवतायै नमो हृदि, रूं बीजाय नमो गुह्ये, क्षूं शक्तये नमः पादयोः ।। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ रूं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ क्षूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ मूं अनामिकाभ्यां हुँ ॐ यूं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ रूं शिरसे स्वाहा, ॐ क्षूं शिखायै वषट्, ॐ मूं कवचाय हुँ, ॐ यूं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ॐ अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

बालार्कायुततेजसं धृतजटाजूटेन्दुखण्डोज्ज्वलं ।
नागेन्द्रैः कृतशेखरं जपवटी शूलं कपालं करैः ।
खट्वांगं दधतं त्रिनेत्रविलसत्पञ्चाननं सुन्दरं ।
व्याघ्रत्वक्परिधानमब्जनिलयं श्रीनीलकण्ठंभजेत्।

द्वादशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष भगवान विष्णु का स्वरूप समझा जाता है, साथ ही यह दुर्लभ भी है, इसे धारण करने से ब्रह्मचर्य-रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बनता रहता है। शक्तिहीनता की स्थिति में यह रुद्राक्ष जीवन भर धारण करना चाहिए। पाण्डु रोगों में यह रुद्राक्ष परम उपयोगी है भव्य एवं आकर्षक व्यक्तित्व की रक्षा के लिए भी इसे धारण करना चाहिए।

इसे अन्नपूर्णा युक्त रुद्राक्ष माना जाता है, इसके धारण करने से शस्त्र आदि का भय नहीं रहता और उस पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रभाव कार्य नहीं करता, इसे सूर्य का अवतार भी कहा गया है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीसूर्यमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः गायत्री छन्दः विश्वेश्वरो देवता ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः घृणिः कीलकं, रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गव ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे, विश्वेश्वरो देवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयोः ।। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ श्रीं अगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ क्षौं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ घृणि अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् (अथांगन्यासः) ॐ ॐ श्रीं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्षौं शिखायै वषट् ॐ घृणि कवचाय हुँ। ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

शोणांभोरुहसंस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयीविग्रहं ।
दानांभोजयुगाभयानि दधतं हस्तैः प्रवालप्रभम् ।
केयूरांगदकंकणद्वयधरं कर्णोल्लसत्कुण्डलं ।
लोकोत्पत्तिविनाशपालनकरं सूर्यं गुणाब्धि भजेत् ।।१२।।

त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष

यह कामदेव का प्रतीक है, सौभाग्यशाली लोगों के पास ही यह रुद्राक्ष होता है, इसके धारण करने के सैंकड़ों लाभ हैं, मानसिक इच्छा पूर्ति में यह रुद्राक्ष पूर्णतः सहायक है। धन, यश, मान, पद-प्रतिष्ठा आदि के लिए यह रुद्राक्ष परम उपयोगी एवं सफलतादायक हैं।

इस रुद्राक्ष को कई प्रकार से सिद्ध कर मानसिक इच्छाएं पूर्ण की जा सकती हैं।

शारीरिक सुन्दरता बनाए रखने के लिए इसे दूध के साथ औटाकर पीना चाहिए।

यह कामदेव का सूचक माना गया है, इसके धारण करने पर व्यक्ति पूर्ण पुरुष बनता है तथा नपुसंकता दूर होती है, जीवन में वह समस्त प्रकार के भोग भोगता है।

मन्त्र

ॐ ईं यां आपः ॐ। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीइन्द्र मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्तिः छन्दः इन्द्रो देवता ईं बीजम्, आपः शक्तिः रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिः छन्दसे नमो मुखे। इन्द्रो देवतायै नमो हृदि। ईं बीजाय नमो गुह्ये, आपः इति शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ यां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ आपः अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ ॐ कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ईं यां आपः ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ईं शिरसे स्वाहा, ॐ यां शिखायै वषट्। ॐ आपः कवचाय हुँ। ॐ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ईं यां आपः ॐ अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

पीतवर्णं सहस्राक्षं वज्रपदमधरं विभूम् ।
सर्वालंकारसंयुक्तं नौमीन्द्रादिकमीश्वरम् ।

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष त्रिपुरारि का प्रतिनिधि है और 'जावल्योपनिषद' के अनुसार इसकी उत्पत्ति रुद्र की आंखों से हुई है, स्वास्थ्य लाभ, रोगमुक्ति एवं उन्नति

के लिए यह रुद्राक्ष रामवाणवत् है, प्रत्येक प्रकार के रोग में इसके धारण करने से निश्चय ही लाभ प्राप्त होता है। यह रुद्राक्ष धारण करने से व्यक्ति निरोग रहता है।

ऐसा रुद्राक्ष हनुमान का स्वरूप माना जाता है, इस रुद्राक्ष के अनन्त लाभ और गुण हैं, इसको धारण करने वाला व्यक्ति साक्षात शिव स्वरूप हो जाता है।

मन्त्र

ॐ ग्रौं हस्फ्रें खफ्रें हस्रौं हसख्फ्रौं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीहनुमन्त्रस्य रामचन्द्र ऋषिः जगती छन्दः श्री हनुमद्देवता ग्रौं, बीजं, हस्फ्रें शक्तिः अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः। रामचन्द्र ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमो मुखे। हनुमद्देवतायै नमो हृदि। ग्रौं बीजाय नमो गुह्ये। हस्फ्रें शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ग्रौं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ हस्फ्रें मध्यमाभ्यां वषट् ॐ खफ्रें अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ हस्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ हसख्फ्रें करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्॥ (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ ग्रौं शिरसे स्वाहा। ॐ हस्फ्रें शिखायै वषट्। ॐ खफ्रें कवचाय हुँ। ॐ हसख्फ्रौं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

उद्यन्मार्त्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारु-
वीरासनस्थं।
मौञ्जीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखाशोभितं
कुण्डलाभ्याम्।
भक्तानामिष्टदानप्रवणमनुदिनं वेदनाद-
प्रमोदं।
ध्यायेद्देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदी-
भूतवार्द्धिम्।

पंचदशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष पशुपति का पर्याय है, आर्थिक दृष्टि से उन्नति करने के लिए यह रुद्राक्ष विशेष उपयोगी है। यह रुद्राक्ष धारण करने वाला खाली हाथ नहीं रहता, तथा इसके पहनने से चर्मरोग नहीं होता।

मन्त्र

ॐ हं सं ह्लीं ऐं ॐ। इति मन्त्रः।

अस्य श्री अग्निमन्त्रस्य वसिष्ठज ऋषिः। गायत्री छन्दः। अग्निदेवता, ह्लीं बीजं, हं शक्ति चतुर्वर्गसिध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। वसिष्ठजऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे। अग्निदेवतायै नमो हृदि। ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये। हं शक्तये नमः पादयोः॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ सं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्लीं अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ ऐं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ हं शिरसे स्वाहा। ॐ सं शिखायै वषट्। ॐ ह्लीं कवचाय हुँ। ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ॐ अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

अष्टशक्ति स्वस्तिकामातिमुच्चै।
दीर्घैरेभिर्धारयंतं जपाभम्।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं।
ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः।

षोडशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष कालविजय का प्रतिनिधि है। इसके धारण करने से सर्दी-गर्मी का प्रकोप नहीं रहता, जो साधु जंगलों में निर्द्वन्द्व विचरण करते रहते हैं, उनके लिए यह विशेष उपयोगी है। जिस घर में यह रुद्राक्ष होता है, उस घर में आग लगने, चोरी, डकैती का भय नहीं रहता।

मन्त्र

ॐ वां क्रां तां ह्लां ऐं श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीब्रह्मामन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता वां बीजं क्रां शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। ब्रह्मादेवतायै नमो हृदि। वां बीजाय नमो गुह्ये। क्रां शक्तये नमः पादयोः॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वां तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ क्रां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ तां अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ ह्लां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयायनमः। ॐ वां शिरसे स्वाहा। ॐ क्रां शिखायै वषट्। ॐ तां कवचाय हुँ। ॐ ह्लां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं, अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

प्रणम्य शिरसा शश्व।
दष्टवक्त्रं चतुर्मुखम्।
गायत्री सहितं देवं।
नमामि विधिमीश्वरम्।

सप्तदशमुखी रुद्राक्ष

यह विश्वदेव विश्वकर्मा का प्रतिनिधि है। आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए यह रुद्राक्ष उपयोगी है। जिस व्यक्ति के गले में यह रुद्राक्ष होता है, उसे जीवन में कई बार आकस्मिक धनलाभ होता है, भौतिक सम्पदा, वाहन, मकान, सुख आदि के क्षेत्र में भी यह रुद्राक्ष विशेष उपयोगी है।

मन्त्र

ॐ ह्लां क्रां क्षौं स्वाहा। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीरुद्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः सदाशिवकालाग्निरुद्रो देवता ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे। श्रीसदाशिवकालाग्निरुद्रदेवतायै नमो हृदि। ॐ बीजाय नमो गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ क्रां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्षौं अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ह्लां क्रां क्षौं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्॥ (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ ह्लां शिरसे स्वाहा। ॐ क्रां शिखायै वषट्। ॐ क्षौं कवचाय हुँ। ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्लां क्रां क्षौं स्वाहा अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

हावभावविलसार्द्धनारिकं।
भीषणार्धमथवा महेश्वरम्।
दाशसोत्पलकपालशूलिनं।
चिन्तये जपविधौ विभूतये॥

अष्टादशमुखी रुद्राक्ष

यह पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता है, इसके धारण करने से व्यक्ति स्वस्थ, हृष्ट पुष्ट-एवं प्रसन्न

रहता है। गर्भरक्षा के क्षेत्र में यह रुद्राक्ष विशेष उपयोगी है। जिन महिलाओं के बार-बार गर्भपात होता हो, उन्हें यह रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। शिशु रोगों के निवारण में इसका प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं ह्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीब्रह्ममन्त्रस्य दक्षिणा मूर्त्ति ऋषिः पंक्तिश्छन्दः कार्त्तिकेयदेवता, ऐं बीजं, सौं शक्तिः क्लीं कीलकं अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। दक्षिणामूर्त्ति ऋषयेनमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमो मुखे। कार्त्तिकेयदेवतायै नमो हृदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ऐं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं शिखायै वषट्। ॐ क्लीं कवचाय हुं। ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

क्रौंचपर्वतविदारणलोलो।
दानवेन्द्रवनिताकृतखण्डः।
चूतपल्लवशिरोमणिचोपी।
मोषडानन जगत्परिपाहि।

उन्नीसमुखी रुद्राक्ष

यह नारायण का प्रतीक है। इसके धारण करने से सभी प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होते हैं। जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, उत्तरोत्तर व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति तथा सभी प्रकार के दैहिक-भौतिक सुखों के लिए इस रुद्राक्ष को धारण किया जाता है।

मन्त्र

ॐ हं सं ऐं ह्रीं श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीअनन्त मन्त्रस्य भगवान् ऋषिः गायत्री छन्दः अनन्तो देवता, क्रीं बीजं, ह्रीं शक्ति अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः। भगवान् ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। अनन्त देवतायै नमो हृदि। हं बीजाय नमो गुह्ये। सं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ सं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ऐं अनामिकाभ्यां हुं ॐ, ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ हं शिरसे स्वाहा। ॐ सं शिखायै वषट्। ॐ ऐं कवचाय हुं। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट। ॐ श्रीं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

अनन्त पुंडरीकाक्षं फणाशतविभूषितम्।
विश्वक्बन्धूक आकारं, कूर्मारूढं प्रपूजयेत्।

बीसमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष सामान्यतः बाजार में प्राप्त हो जाता है। यह ब्रह्म का प्रतीक है, इसके धारण करने से ज्ञान एवं भक्ति में उत्तरोत्तर उन्नति होती है, तथा मन एकाग्र रहता है। नेत्र-ज्योति बढ़ाने के लिए इस रुद्राक्ष का प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं लं ग्रं ऐं श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीगणेशमन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः विनायको देवता. ग्रीं बीजं, ग्रां शक्तिः चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टप्छन्दसे नमो मुखे। विनायक देवतायै नमः हृदि। ग्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ग्रां शक्तये नमः पादयोः। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ग्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ लं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ ग्रां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ह्रौं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यास) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्रां शिरसे स्वाहा। ॐ ग्रों शिखायै वषट् ॐ लं कवचाय हुं। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ श्रीं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

हरतु कुल गणेशो विघ्नसंधानशेषान्।
नयतु सकलसम्पूर्णतां साधकानाम्।
पिबतु बटुकनाथः शोषितं निम्नकानां।
दिशतु सकलकामान् कौलिकानां गणेशः॥

इक्कीसमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष अत्यन्त दुर्लभ है। भाग्यवान व्यक्ति ही इसे प्राप्त करते हैं। समस्त प्रकार के सुखों, ऐश्वर्य एवं भोग-विनास के लिए इसका उपयोग किया जाता है, यह कुबेर का प्रतिनिधि है। दरिद्र व्यक्ति भी यदि इसे धारण कर ले तो वह निश्चय ही धनी हो जाता है। समस्त प्रकार के दैहिक रोगों की निवृत्ति के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ऐं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीभैरवमन्त्रस्य नारदऋषिः गायत्री छन्दः भैरवो देवता, वं बीजं, ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। नारदऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, भैरवदेवतायै नमो हृदि, वं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ऐं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रीं, मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं शिखायै वषट्, ॐ श्रीं कवचाय. हुं, ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय, वौषट्, ॐ लं अस्त्राय फट्॥

अथ ध्यानम्

कपालहस्तं भुजगोपवीतं।
कृष्णच्छविदण्डधरं त्रिनेत्रम्।
अचिन्त्यमाद्यं मधुपानमत्तं।
हृदि स्मरेद्भैरवमिष्टदं नृणाम्।

गौरी शंकर

यह रुद्राक्ष शिव और शक्ति का मिश्रित स्वरूप माना जाता है और. अत्यन्त दुर्लभ होता है। जो व्यक्ति एकमुखी रुद्राक्ष धारण न कर सके, उसे यह रुद्राक्ष जरूर धारण करना चाहिए या घर के पूजागृह में रखना चाहिये। तिजोरी में रखने से यह आर्थिक दृष्टि से विशेष सफलतादायक रहता है। वास्तव में ऐसा रुद्राक्ष बिरले लोगों के घर में ही पाये जाते हैं परन्तु इस प्रकार के रुद्राक्ष में नकलीपन ज्यादा है, अतः समझकर के ही शुद्ध और प्रामाणिक गौरी शंकर रुद्राक्ष धारण करना चाहिये।

इन्द्राक्षी माला

संसार में ऐसे नर बिरले और सौभाग्यशाली ही होंगे जिनके पास इन्द्राक्षी माला हो। इस माला में एकमुखी रुद्राक्ष से इक्कीस मुखी रुद्राक्ष तक का एक-एक दाना पिरोया हुआ होता है। विश्व में अब तक ज्ञात मात्र पांच व्यक्तियों के पास ही इस प्रकार की मालाएं हैं जिनमें से चार भारत के ही सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं। जिस व्यक्ति के गले में यह माला होती है,

उसके लिये समस्त विश्व का वैभव भी तुच्छ है। धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, भक्ति आदि सभी उसे सहज प्राप्त हो जाते हैं। इस माला को पहिन कर व्यक्ति मनो-वांछित कार्य सम्पन्न कर सकता है और उसके लिये कुछ भी अपर्याप्त नहीं रहता। विश्व प्रसिद्ध सम्मान तथा कुबेरवत् सम्पदा का भोग करने में वह समर्थ होता है। लेखक के पास इस प्रकार की माला कई वर्षों से रही है, और वह इस माला के चमत्कार देख कर आश्चर्यचकित है।

देश के एक धनकुबेर से चर्चा के दौरान ज्ञात हुआ कि वे कुर्ते के नीचे हमेशा इन्द्राक्षी माला धारण किये रहते हैं जो कि वंश परम्परा से सबसे बड़े पुत्र को प्राप्त होती है। उनके अनुसार उनके पितामह अत्यन्त गरीब थे पर जब एक साधु से इस प्रकार की माला प्राप्त हुई तबसे वे निरन्तर प्रगति करते रहे और आज देश के अग्रगण्य व्यक्ति माने जाते हैं।

माँ भैरवी देश की प्रसिद्ध तांत्रिक हैं और असीम सिद्धियों की भण्डार हैं, उन्होंने इसका रहस्य इस प्रकार की माला को ही बताया जो कि उनके गले में झूलती रहती है। स्वामी सत्यप्रसन्नानन्द, स्वामी सुबोधानन्द, स्वामी अद्वैतानन्द, स्वामी सूर्यानन्द, प्रभृति साधक रुद्राक्ष को विश्व का सर्वश्रेष्ठ वरदान मानते हैं। वस्तुतः भारत में अद्भुत रहस्य भरे पड़े हैं, आवश्यकता है इन्हें समझने की और इसके रहस्यों को विश्व के सामने प्रगट करने की। अब वह समय आ गया है, जबकि हम पुनः जाग्रत होकर भारतीय तन्त्र-मन्त्र को सही वैज्ञानिक रूप में विश्व के सामने रखें। वस्तुतः इन तन्त्र मन्त्र सिद्धियों के मूल में रुद्राक्ष का योगदान बेजोड़ है।

शिवस्तुति

न मे द्वेषरागो न मे लोभमोहो
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुखं
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यं
सच्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

मेरे अन्दर न द्वेष है, न राग है, न लोभ है, न मोह है, न मद है, न मत्सर का भाव है, और न मेरे अन्दर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही है, मैं सच्चिदानन्दस्वरूप शिव हूँ। मेरे अन्दर न पुण्य है, न पाप है, न सुख है, न दुःख है, न तीर्थ है, न वेद है, न यज्ञ है। मैं भोजन नहीं हूँ, न भोज्य ही हूं और भोक्ता भी नहीं हूं, मैं तो सच्चिदानन्द स्वरूप शिव हूँ, मैं शिव हूं। मेरी न तो मृत्यु होती है और न मुझे किसी प्रकार की शंका ही है, मुझ में जाति का भेद नहीं है, मेरे पिता नहीं हैं, माता नहीं है, जन्म नहीं है, बन्धु नहीं है, मित्र नहीं है, गुरू-शिष्य भी नहीं है, मैं चिदानन्द स्वरूप शिव हूँ, मैं शिव हूं।

—शंकराचार्य

शिव-साधकों के लिये मुक्ति स्वरूप

द्वादश ज्योतिर्लिंग

शिव पुराण में आया है कि भूतभावन भगवान शंकर प्राणियों के कल्याण के लिये तीर्थ-तीर्थ में लिंग रूप से वास करते हैं। जिस-जिस पुण्य स्थान में भक्तजनों ने उनकी अर्चना की, उसी-उसी स्थान में वे आविर्भूत हुए और ज्योतिलिंग के रूप में सदा के लिये अवस्थित हो गये। यों तो ये शिव लिंग असंख्य हैं फिर भी इनमें द्वादश ज्योतिलिंग सर्व प्रधान हैं। शिव पुराण के अनुसार ये निम्नलिखित हैं:—

सौराष्ट्रे सोमनाथन्च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकाल मोंकारं परमेश्वरम् ॥
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम्।
वाराणस्यान्च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौमतीतटे ॥
वैद्यनाथं चिताभूमो नागेशं दारुकावने।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशन्च शिवालये ॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥
यं यं काममपेक्ष्यैव पठिष्यन्ति नरोत्तमाः।
तस्य तस्य फलप्राप्तिर्भविष्यति न संशयः ॥
एतेषां दर्शनादेव पातकं नैव तिष्ठति।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्यतुष्टो महेश्वरः ॥

(शि. पु. ज्ञा. सं. अ. ३८)

अर्थात् सौराष्ट्र प्रदेश में श्री सोमनाथ, (२) श्री शैल पर श्री मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैन में श्री महाकाल, (४) श्री ओंकारेश्वर, (५) हिमाच्छादित केदारखण्ड में श्री केदारनाथ (६) डाकिनी नामक स्थान में श्री भीमशंकर (७) वाराणसी में श्री विश्वनाथ, (८) गोदावरी के तट पर श्री त्र्यम्बकेश्वर, (९) चिताभूमि में श्री वैद्यनाथ, (१०) दारुकावन में श्री नागेश्वर, (११) सेतुबंध पर श्री रामेश्वर और (१२ घुष्मेश्वर—ये द्वादश ज्योतिलिंग हैं जिनका बड़ा महात्म्य है। जो कोई नित्य प्रातःकाल उठकर इन नामों का पाठ करता है उसके सात जन्म तक के पाप क्षय हो जाते हैं। जिस कामना को लेकर वह पुरुष-श्रेष्ठ पाठ करता है उसको वह कामना फलीभूत होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इनके दर्शन मात्र से पापों का नाश हो जाता है जिन पर भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं उसके पाप क्षय हुए बिना नहीं रहते।

१. श्री सोमनाथ—

यह भारत का प्राचीन तीर्थ स्थान है इसका वर्णन ऋग्वेद, स्कन्दपुराण और महाभारत में भी आया है।

धार्मिक पृष्ठभूमि:

पुराणों के अनुसार दक्ष प्रजापति के सत्ताईस कन्याएं थीं और सभी का विवाह चन्द्रमा के साथ

हुआ था। रोहिणी सभी बहिनों में सुन्दर थी और चन्द्र की उसके प्रति विशेष आशक्ति थी, यह जानकर शेष सभी बहिनों को बड़ी ईर्ष्या हुई और उन्होंने इसकी शिकायत अपने पिता से की। उनके पिता ने चन्द्रमा को समझाया किन्तु चन्द्रमा ने उनकी एक भी बात न सुनी, इससे क्रोधित होकर दक्ष प्रजापति ने चन्द्रमा को राज्ययक्ष्मा से पीड़ित होने का श्राप दिया, फलस्वरूप चन्द्रमा की शक्ति दिन प्रतिदिन क्षीण होती गई, यह देख सब देवताओं ने मिलकर चन्द्रमा को दिये शाप को वापिस लेने के के लिये दक्ष से अनुरोध किया।

दक्ष ने शाप वापिस तो ले लिया किन्तु यह शर्त लगा दी कि चन्द्रमा को सभी पत्नियों से समान प्रेम करना चाहिए तथा पश्चिमी समुद्र के प्रभास क्षेत्र में महादेव की पूजा करनी चाहिए, यदि वह ऐसा करे तो महीने के आधे भाग में वह बढ़ता जायगा तथा आधे भाग में घटता जायगा। चन्द्रमा ने प्रभास क्षेत्र में पूजा करनी प्रारम्भ की, तब से इसे सोमनाथ कहा जाने लगा।

प्रति वर्ष श्रावण की पूर्णिमा और शिवरात्रि के दिन तथा सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के दिन यहां भारी मेला लगता है। सोमनाथ का ज्योतिर्लिंग गर्भ गृह के नीचे एक गुफा में २२ सीढ़ियां नीचे उतर कर है।

यहां से केवल चार मील दूर 'वेरावल' नामक शहर में ठहरने की उत्तम व्यवस्था है और हर १५ मिनट के अन्तर से सोमनाथ से वेरावल के लिये सीटी बसें चलती हैं।

२. श्री केदारनाथ—

केदारनाथ की बड़ी महिमा है। हिमालय में बद्रीनाथ और केदारनाथ ये दो प्रधान तीर्थ हैं। केदारनाथ के सम्बन्ध में लिखा है कि जो व्यक्ति केदारनाथ के दर्शन किये बिना बद्रीनाथ की यात्रा करता है, उसकी यात्रा निष्फल जाती है।

अकृत्वा दर्शनं वैश्य केदारस्याघनाशिनः।
यो गच्छेद् बदरीं तस्य यात्रा निष्फलतां व्रजेत्॥
(केदारखण्ड)

केदारनाथ के दर्शन अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि यह मूर्ति नर-नारायण की समन्वित मूर्ति मानी गई है। इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना का इतिहास संक्षेप में यह है कि हिमालय के केदार पर्वत पर विष्णु के अवतार महातपस्वी श्री नर और नारायण तपस्या करते थे, उनकी आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शंकर प्रकट हुए और उनकी प्रार्थना पर ज्योतिर्लिंग के रूप में वहां सदा वास करने का वर उन्हें प्रदान किया।

केदारनाथ में कोई निर्मित मूर्ति नहीं है वहां एक बहुत बड़ा त्रिकोण पर्वत खण्ड-सा निकला हुआ है जिसकी यात्री पूजा करते हैं और उन पर घी का लेप करते हैं। यह स्थान वन तथा बर्फीली चट्टानों के बीच में है।

केदारनाथ से लौटने का मार्ग गौरी कुण्ड, रामपुर आदि होकर नालाचट्टी तक है। नालाचट्टी से दो किलोमीटर पर मन्दाकिनी पार करके ऊषी मठ है, जहां से ऋषिकेश तक बसें मिलती हैं।

३. श्री विश्वनाथ—

वाराणसी या काशी नगरी भारत की ही नहीं, संसार की प्राचीनतम नगरियों में से एक है। यह सदियों से भारतीयों के लिये पवित्रता, ज्ञान, और धर्म का केन्द्र रही है, गंगा के किनारे बने यहां के घाट सर्वत्र प्रसिद्ध है।

कहते हैं कि प्रलयकाल में भी इसका लोप नहीं होता, उस समय भगवान शंकर इस नगरी को अपने त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं और सृष्टिकाल आने पर इसे नीचे उतार देते हैं। यही नहीं अपितु आदि सृष्टिस्थली भी यही भूमि बतलाई जाती है। इसी स्थान पर भगवान विष्णु ने सृष्टि उत्पन्न करने की

कामना से तपस्या करके भगवान शंकर को प्रसन्न किया था और फिर उनके शयन करने पर विष्णु की नाभि कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए जिन्होंने सारे संसार की रचना की।

कहते हैं यहां प्राण त्याग करने से ही मुक्ति मिल जाती है, भगवान भोलानाथ मरते हुए प्राणी के कान में तारक मन्त्र का उपदेश करते हैं जिससे वह आवागमन से छूट जाता है।

काशी की एक संकरी गली में प्रवेश करने पर प्राचीन विश्वनाथ मन्दिर के दर्शन होते हैं। भक्तजनों में यह प्रचलित विश्वास है कि यहां आये प्रत्येक व्यक्ति की मनोकामना शिव शंकर पूर्ण करते हैं, यहां हर समय दर्शकों की भीड़ लगी रहती है।

यहां पर ठहरने के लिये कई धर्मशालायें, विश्राम गृह तथा होटल हैं जिससे यात्रियों को कोई असुविधा नहीं होती। दिल्ली से विश्वनाथ एक्सप्रेस सीधी वाराणसी पहुंचती है।

४. श्री महाकालेश्वर—

उज्जैन उन पवित्र सात नगरियों में से एक है जहां की यात्रा मोक्षदायिनी कही जाती है। यहां का प्रसिद्ध मन्दिर भगवान महाकाल का मन्दिर है। यह मन्दिर एक झील के पास है और इसके पांच तल्लों में से एक तल्ला भूमग्न है। मुख्य मन्दिर के मार्ग में अंधेरा रहता है अतः वहां निरन्तर दीप जलते रहते हैं।

शिव पुराण में वर्णित महाकाल की कथा इस प्रकार है। अवन्ति में एक धर्मात्मा ब्राह्मण रहता था उसके चार पुत्र थे। रत्नमाला पर्वतवासी दूषण नाम के एक राक्षस ने नगर को घेर कर जनता को दुखी करना प्रारम्भ किया। जनता योगसिद्ध उस ब्राह्मण की शरण में गई, उसके तप से प्रसन्न होकर भगवान महाकाल पृथ्वी फाड़कर प्रकट हुए और राक्षस का संहार किया। भक्तों की प्रार्थना पर भगवान महाकाल स्थायी रूप से वहीं निवास करने लगे।

कहा जाता है कि नित्य प्रातः ताजे मुर्दे की भस्म भगवान महाकाल पर चढ़ाई जाती है।

दिल्ली से कोटा, नागदा जंकशन होते हुए उज्जैन पहुंचा जा सकता है। यह शहर इन्दौर और भोपाल के बीच है तथा इन्दौर से बस द्वारा आसानी से यात्रा की जा सकती है।

५. श्री ओंकारेश्वर—

ओंकारेश्वर मध्य प्रदेश का पवित्र तीर्थ स्थल है। कार्तिक पूर्णिमा को यहां विशाल मेला लगता है। रतलाम-खंडवा रेलवे लाइन पर ओंकारेश्वर रोड नामक छोटा सा स्टेशन है, ओंकारेश्वर पहुंचने के लिये यहीं उतरना पड़ता है।

इस मन्दिर के पास नर्मदा और कावेरी नदी आकर मिलती है। यात्रियों को नाव में बैठकर नर्मदा को पार करते हुए मन्दिर तक पहुंचना पड़ता है। यहां नर्मदा नदी दो पहाड़ी की टेकरियों के बीच में से निकलती हुई प्रतीत होती है। किनारे की तांबे के रंग की चट्टानें इसकी प्राकृतिक शोभा और अधिक बढ़ा देती है।

यह मन्दिर मान्धाता पर्वत पर अवस्थित है। प्रसिद्ध सूर्यवंशीय राजा मान्धाता ने जिनके पुत्र अम्बरीश और मुचुकुन्द दोनों प्रसिद्ध भगवत् भक्त थे तथा जो स्वयं तपस्वी थे, इस स्थान पर घोर तपस्या करके शंकर को प्रसन्न किया था।

मन्दिर में कुछ घुमाव पार कर अन्य देवताओं के दर्शन करते हुए गर्भगृह तक पहुंचा जाता है जहां ओंकारेश्वर महादेव की मूर्ति के दर्शन करने का सौभाग्य मिलता है। मूर्ति प्राकृतिक रूप में धरातल से कुछ ऊपर उठे हुए अनगढ़ काले पत्थर का एक फुट व्यास का छः इन्च ऊंचा कछुआनुमा गोलाकार स्वरूप मात्र है।

यहाँ पूजा करने की विधि सरल है। मूर्ति पर बील्वपत्र और फूलों की मालाएं चढ़ाते हैं। सामान्यत: शंकर को अर्पित नैवेद्य ग्रहण नहीं किया जाता किन्तु ओंकारेश्वर प्रणव रूप हैं, अतः इन्हें तुलसी दल भी अर्पित किया जा सकता है, साथ ही चरणामृत भी लिया जाता है। कहा जाता है इन्हें अभिषेक किया हुआ जल सीधा नर्मदा में पहुंचता है।

इसके साथ साथ अमलेश्वर का नाम लिया जाता है। अमलेश्वर का मन्दिर नर्मदा के दक्षिण किनारे की बस्ती में है, पर दोनों की गणना एक में ही की गई है। कहा जाता है कि एक बार विन्ध्य पर्वत ने ओंकारनाथ की छः महीने तक विकट आराधना की जिससे प्रसन्न होकर शिवजी प्रकट हुए और उसे मनोवांछित वर प्रदान किया। उसी समय वहां देवता और ऋषिगण भी पधारे, जिनकी प्रार्थना पर शंकर ने ओंकार नामक लिंग के दो भाग किये इनमें से एक में आप प्रणव रूप से विराजे, जिससे उसका नाम ओंकारेश्वर पड़ा, तथा पार्थिव लिंग रूप में जो प्रगट हुए वे अमलेश्वर के नाम से विख्यात हुए।

कहते हैं कि यहां पर कुबेर ने सौ वर्ष तक तपस्या कर शंकर को प्रसन्न किया था। इतिहास प्रसिद्ध किरातार्जुन और परशुराम का युद्ध यहीं पर हुआ था। इस स्थान के पास ही मण्डलेश्वर का तीर्थ है जहां शंकराचार्य और मंडन मिश्र के मध्य हुए इतिहास प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में उनकी पत्नी ने मध्यस्थता की थी।

६. श्री मल्लिकार्जुन—

मद्रास प्रान्त के कृष्णा नदी के तट पर श्री शैल पर्वत है जिसे दक्षिण का कैलाश कहते हैं, महाभारत, शिवपुराण आदि में इसका वर्णन मिलता है। महाभारत में लिखा है कि श्री शैल पर जाकर शिव का पूजन करने से अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है, यह स्थान शक्तिपीठ भी कहा जाता है।

इस स्थान के सम्बन्ध में पौराणिक इतिहास यह है कि एक बार श्री गणेश और श्री कार्तिकेय दोनों भाई विवाह के लिये लड़ने लगे। गणेश चाहते थे कि मेरा पहले विवाह हो और कार्तिकेय चाहते थे कि पहले मेरा। आखिर भवानीशंकर ने यह फैसला किया कि जो कोई पहले पृथ्वी-परिक्रमा करेगा उसी का विवाह पहले होगा। सुनते ही कार्तिकेय अपने वाहन मयूर पर बैठकर दौड़ पड़े, परन्तु गणेश स्थूलकाय थे और उनका वाहन भी मूसक ही था,. अतः उन्होंने अपनी माता पार्वती और पिता महेश्वर को आसन पर बिठाकर उन्हीं की सात बार परिक्रमा कर डाली और इस प्रकार पृथ्वी प्रदक्षिणा करने के अधिकारी हो गये। इधर जब तक स्वामी कार्तिकेय परिक्रमा करके वापस आये तब तक श्री गणेशजी का विश्व रूप प्रजापति की 'सिद्धि' और 'बुद्धि' नाम वाली दो कन्याओं के साथ विवाह हो चुका था, विवाह ही नहीं अपितु सिद्धि के गर्भ से 'क्षेम' तथा बुद्धि से 'लाभ' नामक दो पुत्र भी हो गये थे।

यह देखकर कार्तिकेय क्रोधित हो, रूठकर क्रौंच पर्वत पर चले गये। माता-पिता ने नारद को भेज कर उन्हें मनाने का प्रयत्न किया पर वे न माने। तब माता पार्वती श्री शिवजी को लेकर क्रौंच पर्वत पर पहुंची, पर कार्तिकेय उनके आने की खबर पाते ही वहां से भाग खड़े हुए, तब क्रौंच पर्वत पर पहुंचकर श्री शंकर भी ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए और तब से यह स्थान श्रीमल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध है।

यह स्थान घोर जंगल में है तथा इस जंगल में शेर, चीते आदि अधिक हैं, इसके अतिरिक्त यह जंगली भीलों का प्रदेश है जो मौका मिलने पर लूटने और हत्या करने में नहीं झिझकते, इसलिये इस स्थान की यात्रा शिवरात्रि के अवसर पर ही की जाती है। फाल्गुन कृष्ण एकादशी के दिन यात्री झुण्ड बनाकर श्री शैल पर पहुंचते हैं। इस पर्वत पर वृक्ष नहीं है पुराने ढंग का एक मन्दिर है। मन्दिर में मल्लिकार्जुन शिवलिंग है यह मूर्ति लगभग आठ अंगुल ऊंची है और पत्थर के अनगढ़ अरघे में विराजमान है। मन्दिर के पीछे माता पार्वती का मन्दिर है जो मल्लिकादेवी के नाम से विख्यात है। इस मन्दिर से दो मील दूर पाताल गंगा है तथा आसपास अम्बाजी, बिल्ववन तथा महानदी प्रसिद्ध तीर्थ हैं।

यहां पर शिवजी का नाम अर्जुन तथा पार्वती का नाम मल्लिका है, इसीलिये दोनों का मिलकर नाम मल्लिकार्जुन बना।

मनमाड-काचीगुड़ा लाइन के सिकन्दराबाद स्टेशन से एक लाइन द्रोणाचलम् तक जाती है। इस लाइन पर कर्नूल टाउन स्टेशन है। यहां से श्री शैल १२५ किलो मीटर दूर है। यहां से कुछ दूरी तक बसें आदि जाती है जो कि आत्माकूर गाँव तक जाती है, यहाँ धर्मशाला है। आत्माकूर से नागाहूटी २० किलो मीटर दूर है। इसके आगे श्रीशैल लगभग ५५ किलो मीटर रह जाता है जो कि बैलगाड़ी से या पैदल यात्रा करनी पड़ती है।

७. श्री वैद्यनाथ धाम—

यह स्थान ज्योतिर्लिंग तथा शक्तिपीठ भी है। सती की देह से यहां उनका हृदय गिरा था। यहां अनेक लोग सांसारिक कामनाओं से आते हैं और निर्जल व्रत करके मन्दिर में धरना देकर पड़े रहते हैं। सुना है कि दृढ़ निश्चय से धरना देने पर उनकी कामना पूर्ण होती है।

कहते है कि राक्षसराज रावण ने कैलाश पर भगवान शंकर को सन्तुष्ट करने के लिये कठोर तप किया। उसकी तपस्या से सन्तुष्ट होकर शंकरजी ने प्रत्यक्ष दर्शन दिया और वरदान मांगने को कहा। रावण ने प्रार्थना की कि भगवान शंकर लंका में निवास करें। शंकर जी ने रावण को वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग प्रदान करके आज्ञा दी कि उसे वह लंका में स्थापित करे, किन्तु शंकर जी ने सावधान कर दिया कि मार्ग में कहीं पृथ्वी पर वह शिवलिंग रखेगा तो फिर उठा नहीं सकेगा।

देवता नहीं चाहते थे कि ज्योतिर्लिंग लंका जाय। आकाश मार्ग से मूर्ति लेकर जाते हुए रावण के पेट में वरुण देव ने प्रवेश किया जिससे रावण को लघु शंका का अत्यधिक वेग प्रतीत हुआ, विवश होकर वह पृथ्वी पर उतर पड़ा, वहां पर ब्राह्मण का वेश बनाये विष्णु उपस्थित थे, अतः रावण ने कुछ क्षण रुकने को कह कर शिवलिंग ब्राह्मण को दे दिया।

रावण के पेट में तो वरुण देव बैठे थे अतः उसकी लघु शंका जल्दी पूरी नहीं हुई, और इधर वृद्ध ब्राह्मण ने वह लिंग भूमि पर रख दिया, निवृत्त होकर रावण ने लिंग उठाने की चेष्टा की पर वह असफल रहा। शिवलिंग तो पाताल तक चला गया था—भूमि के ऊपर तो वह केवल आठ अंगुल ही शेष रहा था, निराश होकर रावण ने चन्द्रकूप नामक कूप बनवाया और उसमें सब तीर्थों का जल एकत्र करके वैद्यनाथ का उसी कूप के जल से अभिषेक किया, इसके पश्चात् आकाशवाणी द्वारा आश्वासन पाकर वह लंका चला गया।

यहां दूर-दूर से लाकर जल चढ़ाने का बड़ा माहात्म्य है। बहुत से यात्री कन्धों पर कांवर लिये वैद्यनाथ जाते हुए देखे जाते हैं। कुष्ठ रोग से मुक्त होने के लिये भी बहुत से रोगी यहां आते हैं। कहा जाता है कि इस स्थान पर यदि कुछ समय रहा जाय तो व्यक्ति के समस्त प्रकार के रोग समाप्त हो जाते है।

पूर्वी रेलवे की हावड़ा-पटना लाइन पर जसीडीह स्टेशन है, जसीडीह से एक लाइन वैद्यनाथ धाम स्टेशन तक जाती है। जसीडीह से वैद्यनाथ धाम स्टेशन लगभग छः किलो मीटर है। स्टेशन से वैद्यनाथ मन्दिर लगभग २ किलो मीटर है, मन्दिर तक पक्की सड़क है तथा वाहन सुविधा से प्राप्त हो जाते हैं।

८. श्री भीमशंकर

यह स्थान महाराष्ट्र राज्य में बम्बई से लगभग

२०० मील दूर दक्षिण पूर्व में सह्याद्रि पर्वत शिखर पर अवस्थित है। यहां तक पहुंचने का कोई भी सुविधापूर्ण मार्ग नहीं है, केवल शिवरात्रि पर पूना से भीमशंकर तक बस जाती है।

भीमशंकर मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। यह सह्याद्रि पर्वत पर अवस्थित है और भीमा नदी यहीं से निकलती है। मुख्य मूर्ति से थोड़ा-थोड़ा जल झरता रहता है। मन्दिर के निकट ही दो कुण्ड हैं जिन्हें इतिहास पुरुष नाना फड़नवीस ने बनवाया था।

एक कथा के अनुसार जिस समय भगवान शंकर ने त्रिपुरासुर का वध करके इस स्थान पर विश्राम किया उस समय यहां अवध का भीमक नामक राजा तपस्या करता था। शंकरजी ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिया और तभी से ज्योतिर्लिंग भीमशंकर के नाम से विख्यात हुआ।

शिव पुराण की एक कथा के अनुसार भीम शंकर का ज्योतिर्लिंग आसाम प्रान्त के कामरूप जिले में गौहाटी के पास ब्रह्मपुर पहाड़ी पर अवस्थित बतलाया जाता है। कुछ अन्य लोगों के अनुसार नैनीताल जिले के उज्जनक नामक स्थान में एक विशाल शिव मन्दिर है वही भीम शंकर का स्थान है।

परन्तु अधिकतर लोग महाराष्ट्र में स्थित ऊपर वर्णित स्थान पर स्थित मन्दिर को ही भीम शंकर मन्दिर मानते हैं। यहां तक जाने के लिये नासिक से बस द्वारा १५० किलो मीटर जाना पड़ता है और बस के बाद लगभग ६५ किलो मीटर का मार्ग पैदल तय करना पड़ता है।

दूसरा मार्ग बम्बई पूना लाइन पर लगभग १०० किलो मीटर दूर नेरल स्टेशन है यहां से बस के मार्ग से भीम शंकर २०० किलो मीटर दूर है। मार्ग में आंवा गांव आता है जहां पर रात्रि में ठहरा जा सकता है। यहां से मन्दिर ३० किलो मीटर है जहां घोर जंगल में से पैदल जाना पड़ता है।

९. घुश्मेश्वर (घृष्णेश्वर)

मध्य रेलवे की मनमाड-पूर्णा लाइन पर मनमाड से ६६ किलो मीटर दूर दौलताबाद स्टेशन है। यहां से १२ मील दूर बेरूल गांव के पास यह स्थान है। दौलताबाद स्टेशन से इस मन्दिर तक जाने की सवारियां आसानी से मिल जाती हैं।

इसके बारे में धार्मिक पृष्ठभूमि यह है कि दक्षिण देश में देवगिरि पर्वत के निकट सुधर्मा नामक एक ब्राह्मण रहता था, उसकी पत्नी का नाम सुदेहा था, पर इनके कोई सन्तान नहीं थी, अतः सुदेहा के प्रबल आग्रह पर ब्राह्मण ने सुदेहा की बहिन घुश्मा से विवाह कर लिया और कुछ समय बाद इससे एक लड़का हो गया। घुश्मा शिव की भक्त थी और प्रतिदिन १०१ शिवलिंग बनाकर उसकी पूजा करती थी। कुछ समय बाद यह लड़का बड़ा हुआ और इसकी शादी हो गई जिससे सुदेहा ईर्ष्या से जल उठी और उसने एक रात्रि को उस विवाहित लड़के की हत्या कर उसका शव उसी तालाब में फेंक दिया जिस तालाब में घुश्मा शिवलिंग विसर्जित करती थी।

प्रातःकाल घुश्मा उसी प्रकार शिव पूजन कर रही थी कि उस लड़के की बहू पलंग पर खून के छींटे देखकर चिल्लाती हुई बाहर आई पर घुश्मा कुछ न भी बोली और उसी प्रकार जब वह तालाब के किनारे पहुंची तो शंकर की कृपा से वह बालक सकुशल तालाब से निकल आया और मां के चरणों में गिर पड़ा। वहीं पर भगवान शंकर प्रकट हुए और तब घुश्मा को अपनी बहिन सुदेहा की करतूत का पता चला, जब शंकर ने उसे मारने के लिये त्रिशूल उठाया तो घुश्मा ने क्षमा याचना कर शंकर का क्रोध शान्त किया। तब से यह स्थान ज्योतिर्लिंग के रूप में विख्यात है।

इस तालाब की, और घुश्मेश्वर शंकर की बड़ी महिमा गायी गयी है।

ईदृशं चैव लिंगं च दृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते।
सुखं संवर्धते पुंसा शुक्लपक्षे यथा शशी॥
(शिवपुराण श्लोक ८२)

अर्थात् घुश्मेश्वर महादेव के दर्शन से सारे पाप दूर हो जाते हैं और सुख की वृद्धि उसी प्रकार होती है जिस प्रकार शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा की वृद्धि होती है।

१०. त्र्यम्बकेश्वर

यह ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के नासिक जिले में है। मध्य रेलवे की जो लाइन दिल्ली से बम्बई को जाती है, उस पर नासिक रोड एक स्टेशन है यहां से १२ किलो मीटर दूरी पर नासिक पंचवटी है जहां सीताहरण हुआ था। यहां से ३० किलो मीटर दूर त्र्यम्बकेश्वर का स्थान है। यहां के निकटवर्ती ब्रह्मागिरि नामक पर्वत से पवित्र गोदावरी नदी निकलती है।

यहां पर बृहस्पति के सिंह राशि में आने पर बड़ा भारी कुम्भ का मेला लगता है। गौतम ऋषि की तपस्या के फलस्वरूप ही गोदावरी नदी पर्वत से प्रकट हुई थी, तब गौतम ऋषि और गोदावरी के प्रार्थना करने पर भगवान शिव ने इस स्थान में वास किया और त्र्यम्बकेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुए।

इस मन्दिर में छोटे-छोटे तीन लिंग हैं जो कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश के प्रतीक माने जाते हैं

शास्त्रों में कहा गया है कि इस लिंग के दर्शन स्त्रियों को नहीं करना चाहिए उन्हें केवल मुकुट का दर्शन करने की ही अनुमति है। त्र्यम्बकेश्वर के समीप तीन पर्वत प्रसिद्ध और पवित्र हैं जिनके नाम ब्रह्मगिरि, नीलगिरि और गंगा द्वार है। यहां से कुछ दूरी पर चक्र तीर्थ नामक प्रसिद्ध स्थान है, जहां गोदावरी का प्रत्यक्ष उद्गम दिखाई देता है।

११. नागेश्वर—

राजकोट (गुजरात) से पश्चिम रेलवे की तारभ गांवा–ओखा लाइन द्वारा द्वारका जाकर वहां से बस द्वारा नागेश्वर पहुंचा जा सकता है, द्वारका से और भी कई साधन जाने के लिये हैं।

इसकी धार्मिक पृष्ठभूमि यह है कि सुप्रिय नामक एक वैश्य यात्रा में राक्षस के द्वारा बन्दी बना दिया गया, और जब उस राक्षस ने जेल में सुप्रिय की हत्या करनी चाही तो उसी समय शंकर, भक्त सुप्रिय की आवाज सुनकर स्वयं वहां प्रकट हुए और उन्होंने राक्षस दारुक का संहार किया, तब सुप्रिय के अनुरोध पर भगवान शंकर हमेशा के लिये वहां स्थित हो गये।

वस्तुतः यह स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ माना जाता है।

१२. श्री सेतुबन्ध रामेश्वर—

मद्रास राज्य के रामनाद जिले में भारत की दक्षिण सीमा के अन्तिम स्थल पर यह रामेश्वर स्थान है। यहीं पर बंगाल की खाड़ी अरब सागर में मिलती है। पुराणों में इस स्थान का नाम गंधमादन पर्वत है। इस लिंग को श्री राम ने लंका पर चढ़ाई करते समय अपने हाथों से स्थापित किया था इसीलिये इसका नाम रामेश्वर पड़ा।

यह मन्दिर अत्यन्त भव्य है, यह ८६५ फीट लम्बा तथा ६५७ फीट चौड़ा है। यहां के खम्भे अत्यन्त विशाल है तथा मन्दिर में १२ फीट लम्बा ८ फीट चौड़ा तथा ९ फीट ऊँचा भव्य नन्दी है।

मन्दिर में २४ तीर्थों के कूप हैं जहां पर यात्री क्रम से स्नान करते हैं।

कहा गया है कि यदि गंगोत्तरी का जल लाकर भगवान रामेश्वर पर चढ़ाया जाय तो अतुलनीय पुण्य प्राप्त होता है।

इस मन्दिर के पास ही हनुमान द्वारा स्थापित शिवलिंग मन्दिर भी है जिसका नाम काशी विश्वनाथ रखा गया है। श्री राम ने लंका विजय के बाद घोषणा की थी कि रामेश्वर की पूजा करने के पहले लोग हनुमान द्वारा स्थापित शिवलिंग की पूजा करेंगे।

यह शिवलिंग बालुका (समुद्र की रेत) से बना है जो कि सीता ने अपने हाथों से बनाया था। लोग इसी शिव लिंग की पूजा करते हैं। प्रात: ५ बजे मणि के दर्शन भी कराये जाते हैं।

लंका विजय के बाद राम ने ऋषिमुनियों को पूछा कि मैंने पुलस्त्य कुल का नाश किया है अतः मुझे ब्रह्म हत्या दोष लगा है, मुझे क्या करना चाहिए ? तब ऋषि मुनियों ने इस शिव लिंग की पूजा का विधान बताया। तब से इस मन्दिर की ख्याति बहुत अधिक बढ़ी है।

वस्तुत: ये द्वादश ज्योतिलिंग विश्व विख्यात हैं और सौभाग्यशाली व्यक्ति ही इन सभी स्थानों के दर्शन कर सकता है।

End. (8)

बिल्वपत्र

भगवान् शंकर को सर्वाधिक प्रिय बिल्वपत्र हैं। शिव को बिल्व-पत्र अर्पण करने का मन्त्र यह है—

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च
वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो
दुन्दुभ्याय चा हनन्याय च नमो घृष्णवे ।।
(रुद्रा. ३५)

निम्न प्रार्थना बिल्वपत्र चढ़ाते समय की जानी चाहिए—

काशीवास निवासी च कालभैरव पूजनम् ।
प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१।।
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम् ।
अघोर पाप संहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२।।
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम् ।
त्रिजन्म पाप संहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।३।।
अखण्डे बिल्वपत्रैश्च पूजये शिवशंकरम् ।
कोटि कन्या महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।४।।
गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर ।
सुगन्धीनि भवानीश बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५।।

卐 रुद्राष्टाध्यायी 卐

भगवान् शंकर का सर्वाधिक प्रिय स्तोत्र रुद्राष्टाध्यायी है, जिसके आठ अध्याय हैं। रुद्राष्टाध्यायी सर्वत्र प्राप्य है, पर उसके विनियोग आदि पुस्तकों में नहीं मिलते, जो कि रुद्राष्टाध्यायी के अभिन्न अंग माने जाते हैं।

शिव प्रेमियों के लिये मैं नीचे रुद्राष्टाध्यायी के गोपनीय विनियोग एवं ध्यान प्रस्तुत कर रहा हूं—

।। श्रीगणेशायनमः ।। ॐ अस्यश्रीरुद्राध्यायमहामन्त्रस्य । अघोरऋषिः । अमृतानुष्टुप्छंदः । संकर्षणमूर्तिस्वरूपोयोसावा दित्य स एवरुद्रोदेवता । ॐ नमस्तेरुद्र इति बीजम् । ॐ नमः शिवाय इतिशक्तिः । शिवतराय इतिकीलकम् । श्रीरुद्राध्यायमहामंत्रजपे विनियोगः । अथऋष्यादिन्यासः । ॐ अघोरऋषयेनमः शिरसि । ॐ अमृतानुष्टुप्छन्दसेनमः मुखे । ॐ संकर्षणमूर्तिस्वरूपोयोसावा दित्यः स एवरुद्रोदेवतायैनमः हृदये । ॐ नमस्तेरुद्र इतिबीजायनमः गुह्ये । ॐ नमः शिवाय इतिशक्तयेनमः पादयोः । ॐ शिवतरायइति कीलकायनमः इत्यस्त्रम् । ॐ श्रीरुद्राध्याय जपे विनियोगायनमः सर्वांगे । अथकरन्यासः । ॐ अग्निहोत्रात्मने अंगुष्ठाभ्यानमः । ॐ दर्शपूर्णमासात्मने तर्ज्जनीभ्यांनमः । ॐ चातुर्मासात्मने मध्यमाभ्यांनमः । ॐ ज्योतिष्ठात्मने अनामिकाभ्यां नमः ॐ निरूढेपशुबन्धात्मने कनिष्ठिकाभ्यांनमः । ॐ सर्वकर्त्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः । अथहृदयादिन्यासः । ॐ अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः । ॐ दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा । ॐ चातुर्मासात्मने शिखायै वषट् । ॐ ज्योतिष्ठात्मने कवचाय हुँ । ॐ निरूढेपशुबन्धात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ सर्वं कर्त्तात्मने अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

आपातालनभस्थलंत्रि भुवनंब्रह्मांडमोलिस्फुरत् ।
ज्योतिष्फाटिक लिंगमोलिविलसत् पूर्णं
दुराकामृतैः ।
अस्त्रोकाप्लुतमेषमेवमनिशंरुद्रानुवाकाम् पठन् ।
ध्याये दीप्सित सिद्धयेधृतपदं विप्रोऽभि-
षिञ्चेच्छिवम् ।।१।।
ब्रह्मांडव्याप्तदेहायमभसि तरुचाभासमाना-
भुजंगैः ।
कंठेकालाकपर्द्दाकिरिटिचरुचिराछन्द-
कोदण्डहस्ता ।

अक्षारुद्राक्षमालाप्रकटितविभवाशंभवामूर्तिभेदा ।
रुद्राक्षैरुद्रसूक्तं प्रकटित विभवान् नः
प्रयच्छन्तुसौख्यम् ।।२।।

पश्चिममुखध्यानम्

ॐ प्रालेयामलबिंदुकुंदधवलंगोक्षीरफेनप्रभं ।
भस्माभ्यंग मनंगदेह दमनं ज्वालावलोलोचनम् ।
ब्रह्मेंद्रादिमरूद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितंयोगिभि ।
वंदेहंसकलंकलंकरहितंस्थाणोमुखंपश्चिमम् ।।३।।

उत्तरमुखध्यानम्

गौरंकुंकुमपिंजरंसुतिलकं व्यापांडुगल्लस्थलं ।
भ्रूविक्षेपकटाक्ष वीक्षणलसत्संसिक्तवर्णो पलम् ।
स्निग्धंबिंबफलीधरंप्रहसितंनीलालकालं कृतं ।
वंदेपूर्णशशांकमण्डल निभंवक्त्रं हरस्योत्तरम् ।।४।।

दक्षिण मुखध्यानम्

ॐ कालाभ्रभ्रमराज नाञ्जलनिभंव्यावृत्ति-
पिंगेक्षण ।
मर्द्धेंदुद्वयनिः सृतांशुदशनंप्रोभिन्दनदंष्ट्राकुरम् ।
सर्पप्रोतकपालशुक्ति सकलंव्याकीर्णसत्छेखरं ।
वंदे द क्षिणमीश्वरस्यजटिलंभ्रूभंगरौद्रमुखम् ।।५।।

पूर्वमुखध्यानम्

ॐ सं वर्ताग्नितडित्प्रतप्तकनकंससिद्धतेजोरूणं ।
गम्भीरस्मितनिः सृतोग्रदशनंप्रोदभासिताभ्रा-
धरम् ।
बालेंदुधृतिलोलपिंगलजटाभारप्रबद्धोरगं ।
वंदेसिद्धसुरासुरेन्द्रनमितंपूर्वा मुखंशूलिनः ।।६।।

मध्यमुखध्यानम्

व्यक्ता व्यक्तगुणोत्तरंसुवदनंषडविंशतत्वाधिकम् ।
तस्मादुर्द्ध्वक्रम क्षयमितिध्येयंसदायोगिभिः ।
वन्देतामसवर्जितैनमनसासूक्ष्मा च्चसूक्ष्मंपरं ।
शांतंपञ्चममीश्वरस्यवदनंखंव्या
पितेजोमयम् ।।७।।

प्रमाण

विनामसमत्रिपुंडेणविनारूद्राक्षमालया ।
पूजितोपि महादेवोनस्यात् तस्यफलप्रदः ।।१।।
तस्मात्मृदापिकर्त्तव्यं ललाटेवैत्रिपुंडकम् ।
"ॐ हुँ नमः" इतिरुद्राक्षान्प्रत्येकंअभिमन्त्रय ।।२।।
मालाधारये दित्युक्तं तत्रैव ।
पूजाधिकारार्थेपंचाक्षरजपउक्तस्तत्रैवभविष्ये ।
महापातकयुक्तोवामन्त्रस्यास्यजपेयथा ।
अधिकारी भवेत्सर्वंइतिदेवोब्रवीच्छिवः ।।३।।
षड्षष्टीनीलसूक्तंच पुनः षोडशमेवच ।
एषते द्वे नमः स्ते द्वे नतंविद्वयमेवच ।।४।।
मीढुष्टमेतिचत्वारि व यं च वसुसंख्यया ।
शतरुद्रीसमाख्याता यजुर्वेदेनभाषिता ।।५।।
वेद वेदाब्धिरामाश्च रामरामाब्ध्यकंकका ।
द्वौ द्वौ मन्त्रोपृथक्प्रोक्तोनमकेचमकेतथा ।।६।।
इत्येव पाठः समीचीनम् ।
इतिध्यात्वा । मानसोपचारैः संपूज्यः ।

इसके बाद साधक चाहें तो विशेष न्यास सम्पन्न कर सकते हैं। पाठकों के हितार्थ विशेष न्यास नीचे की पंक्तियों में स्पष्ट हैं।

विशेष न्यास—

मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिऋंषिः बृहस्पतिर्देवता बृहतीछन्दः हृदयन्यासे जपे विनियोगः ।।

ॐ मनो ज्जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पति-र्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ(गूं)समिमन्द धातु ।। व्विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामो३ म्प्रतिष्ठ ।। ॐ हृदयाय नमः ।।१।।

अबोद्धयग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः शिरोन्यासे जपे विनियोगः ।।

ॐ अबोद्ध्यग्नि(हि) समिधा जननाम्प्रति-धेनुमिवायतीमुषासम् ।। यह्वाऽइवप्रवयामुज्जिहा-ना(ह)प्रभानव(ह) सिस्रते नाकमच्छ ।। ॐ शिरसे स्वाहा ।।२।।

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भारद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः शिखान्यासे जपे विनियोगः ।।

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्या वैश्वानर-मृतऽआजातमग्निम् ।। कवि(गूं) सम्म्राजमति-थिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवा(ह) ।। ॐ शिखायै वषट् ।।३।।

मर्म्माणित इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्म्माणि देवता विराट्छन्दः कवचन्यासे जपे विनियोगः ।।

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्म्मणाच्छादयामि सोम-स्त्वा राजाऽमृते नानुवस्ताम् ।। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवा मदन्तु ।। ॐ कवचाय हुम् ।।४।।

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप्छन्दः नेत्रन्यासे जपे विनियोगः ।।

ॐ व्विऽश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वत मुखो व्वि-श्वतोबाहुरुत व्विश्वस्पात् ।। सम्बाहुब्भ्या-न्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमो जनयन्दे वऽएक(ह) ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।।

मानस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एक-रुद्रो देवता जगतीछन्दः अस्त्रन्यासे जपे विनियोगः ।।

ॐ मानस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मानो ऽअश्वेषु रीरिष(ह) मा नो व्वीरान्-रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्त(ह) सदमित्त्वा हवामहे ।। ॐ अस्त्राय फट् ।।६।।

इस प्रकार न्यास करने के उपरान्त शिव पर धाराभिषेक करते हुए पाठ आरम्भ करें—

पाठ विधि—

१. प्रथम अध्याय से पांच अध्याय तक पाठ करें।
२. फिर नमस्ते....(पंचम अध्याय के १६ या ६६ मन्त्र)
३. फिर—१. एषतेरुद्रभागः २. अवरुद्र ३. नमस्ते रुद्र ४. जाते रुद्र ५. नतंविदा ६. विश्वकर्म्मा ह्यजानेष्ट ७. मीढुष्टम ८. विकिरिद्र ९. सहस्राणि सहस्रसो १०. असंख्याता....मन्त्रों का उच्चारण करें।
४. फिर छठा अध्याय पुनः पढ़ें।
५. फिर सातवें अध्याय में निम्न मन्त्रों से पूर्व नमस्ते....(पंचम अध्याय के १६ या ६६ मन्त्र पढ़ें)
१. प्रारंभ में २. सत्यंचमे ३. ऊर्ध्वे में ४. अंश्माव ५. अग्निश्च ६ अ (गु.) शुश्च ७. अग्निश्च ८. एकाच ९. चतस्रश्च १०. त्र्यविश्च ११. व्वाजायस्वाहा। इस प्रकार पाठ पूरा माना जाता है।

एक आश्चर्यजनक उपलब्धि—

पारद शिवलिंग

संसार में बहुत कुछ प्राप्य है, और प्रयत्न करने पर सब कुछ मिल सकता है, पर मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त रससिद्ध शुद्ध पारे से निर्मित पारद-शिवलिंग" प्राप्त होना सौभाग्य का ही सूचक है। जिसके पूर्व जन्म के पाप क्षय हो जाते हैं, और सौभाग्य का उदय होने लगता है, तभी उसे "पारद-शिवलिंग" प्राप्त हो सकता है।

मैं देश-विदेश में बहुत घूमा हूं, मैंने देखा है कि प्रत्येक व्यक्ति — चाहे वह उच्चस्तरीय साधु हो या गृहस्थ, योगी हो या यति, नेता हो या अभिनेता—इस प्रकार का पारद शिवलिंग प्राप्त करने के लिये लालायित है, वे बहुत कुछ व्यय करने को भी तैयार हैं, परन्तु ऐसा पारद शिवलिंग प्राप्त होना भी संभव नहीं है।

क्योंकि पारे का शोधन अत्यन्त कठिन कार्य है, और उसे ठोस बनाने के लिये पारे को मूर्छित खेचरित, कीलित, शंभूबीजित और शोधित जैसी कठिन प्रक्रियाओं में से गुजारना पड़ता है, तब जाकर कहीं पारा ठोस आकार ग्रहण करता है, और फिर उससे शिवलिंग निर्माण संभव है।

शिवलिंग निर्माण के बाद भी काफी मांत्रिक क्रियाओं से गुजरने पर "पारद-शिवलिंग" रस सिद्ध एवं चैतन्य हो पाता है, जिससे वह पूर्ण सक्षम एवं प्रभाव युक्त बनता है।

इसीलिये तो कहा गया है, कि जिसके घर में "पारद-शिवलिंग" है, वह अगली कई पीढ़ियों तक के लिये घर में ऋद्धि-सिद्धि एवं स्थायी लक्ष्मी को स्थापित कर लेता है।

पारद-शिवलिंग के गुणों से, उसके महत्व से और उसके अचूक प्रभावों से पूरे के पूरे धर्मग्रन्थ पुराण शास्त्र भरे पड़े है, इस लेख में संक्षिप्त में पाठकों की जानकारी हेतु "पारद शिवलिंग" पर सामग्री प्रस्तुत है—

जीवन में जो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बने रहना चाहते हैं, जो व्यक्ति सामान्य घर में जन्म लेकर विपरीत परिस्थितियों में बड़े होकर सभी प्रकार की बाधाओं, कष्टों और समस्याओं के होते हुए भी जो जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं या जो व्यक्ति आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक दृष्टि से पूर्ण सुख प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें अपने घर में "पारद-शिवलिंग" की स्थापना करनी चाहिए। संसार के सभी साधक और योगी इस बात को एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि जो व्यक्ति "पारद-शिवलिंग" की पूजा करता है, उसके समान अन्य कोई व्यक्ति सौभाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। पारद-शिवलिंग के पूजन से जहां पूर्ण भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं, वहीं उसे जीवन में मोक्ष प्राप्ति भी निश्चित रूप से सुलभ रहती है।

वैज्ञानिक दृष्टि से पारा या पारद द्रव्य पदार्थ है इसे अंग्रेजी में 'मरकरी' कहते हैं। इसमें अन्य किसी भी प्रकार के पदार्थ का सम्मिश्रण संभव नहीं, साथ ही इस पारे को ठोस आकार में बनाना अत्यन्त कष्ट साध्य है, और जब तक पारद ठोस आकार ग्रहण नहीं कर लेता, तब तक शिवलिंग का निर्माण संभव नहीं होता, परन्तु फिर भी रसायन के माध्यम से पारे को ठोस बनाया जा सकता है और जब पारा ठोस स्वरूप ग्रहण करने लगता है तब उसे शिवलिंग का आकार दे दिया जाता है और बाद में वह इतना ठोस हो जाता है कि उसके सामने शीशे की बनी गोली भी लचीली प्रतीत होती है।

संसार के सुप्रसिद्ध योगी पूज्य गुरुदेव स्वामी सच्चिदानन्दजी ने कहा है कि जो साधक "पारद-शिवलिंग" को अपने घर में रखकर उसकी पूजा करता है या मात्र उसके दर्शन ही करता है तो वह सभी पापों से मुक्त होकर अनेक सिद्धियों और धन-धान्य को प्राप्त करता हुआ पूर्ण सुख प्राप्त करता है, संसार में जितने भी शिवलिंग हैं उन सबकी पूजा का फल केवल मात्र पारद-शिवलिंग के पूजन से ही प्राप्त हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार रावण रससिद्ध योगी था, उसने "पारद-शिवलिंग" की पूजा कर शिव को पूर्ण प्रसन्न कर अपनी नगरी को स्वर्णमयी बनाने में सफल हो सका था। बाणासुर ने पारद-शिवलिंग की पूजा कर उनसे मनोवांछित वर प्राप्त किया था, यह विवरण "रुद्र-संहिता" में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है।

अन्य शास्त्रों में भी इस बारे में जो विवरण प्राप्त होते हैं उससे यह स्पष्ट है कि वास्तव में ही पारद शिवलिंग दुर्लभ है और बिरले लोगों के घर में ही इस प्रकार के शिवलिंग स्थापित होते हैं।

मैंने पिछले पांच वर्षों में इस प्रकार के रससिद्ध पारे को ठोस बनाकर कई शिवलिंग बनाये हैं और जिन-जिन शिष्यों को या परिचितों को दिये हैं वे सभी आज अच्छे स्तर पर हैं और आश्चर्यजनक उन्नति की तरफ अग्रसर हैं, साधकों को इससे अपनी साधनाओं में पूर्ण सफलता मिली है, और व्यापारियों को इसकी वजह से जो आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त हुई है वह उनके स्वयं के लिये भी चकित कर देने वाली है।

नीचे मैं कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों के विवरण दे रहा हूं, जिससे स्पष्ट होता है, कि पारद-शिवलिंग कितना अधिक महत्वपूर्ण है—

१. योगशिखोपनिषद :

रसलिंगं महालिंगं शिवशक्तिनिकेतनम्।
लिंगं शिवालयं प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वदेहिनाम्॥

अर्थात् रसलिंग ही महालिंग है, और इसे ही शिव शक्ति का घर या शिवालय कह सकते हैं, इसके प्राप्त होने से ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

२. सर्वदर्शनसंग्रह :

अभ्रकं तव बीजं तु मम बीजं तु पारदः।
बद्धो पारद लिंगो यं मृत्यु दारिद्र्य नाशनम्॥

अर्थात् भगवान् शंकर स्वयं भगवती से कहते हैं कि पारद को ठोस कर लिंगाकार बनाकर जो पूजन करता है उसे जीवन में मृत्यु-भय व्याप्त नहीं होता और किसी भी हालत में उसके घर में दरिद्रता नहीं आ पाती।

३. रसरत्नसमुच्चय :

विधाय रसलिंगयो भक्तियुक्तः समर्चयेत्।
जगत्त्रितयलिंगानां पूजाफलमवाप्नुयात्॥

अर्थात् जो भक्ति के साथ पारद शिवलिंग की पूजा करता है उसे तीनों लोकों में स्थित शिवलिंग की पूजा का फल प्राप्त होता है तथा उसके समस्त महा-पाप नाश हो जाते हैं।

४. रसार्णव-तन्त्र :

धर्मार्थकाममोक्षाख्या पुरुषार्थश्चतुर्विधा।
सिध्यन्ति नात्र संदेहो रसराजप्रसादतः॥

अर्थात् जो व्यक्ति पारद शिवलिंग की एक बार भी पूजा कर लेता है उसे इस जीवन में ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चारों प्रकार के पुरुषार्थों की प्राप्ति हो जाती है।

स्वयम्भू लिंग सहस्रैर्यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भवेत्॥

अर्थात् हजारों प्रसिद्ध लिंगों की पूजा से जो फल मिलता है, उससे करोड़ गुना फल पारद निर्मित शिवलिंग की पूजा से सहज ही में प्राप्त हो जाता है।

५. शिव निर्णय रत्नाकर :

मृदः कोटिगुणं स्वर्णं, स्वर्णात्कोटि गुणं मणिः।
मणेः कोटिगुणं बाणो बाणात्कोटिगुणं रसः
रसात्परतरं लिंग न भूतो न भविष्यति॥

अर्थात् मिट्टी या पत्थर से करोड़ गुना अधिक फल स्वर्ण निर्मित शिवलिंग के पूजन से मिलता है। स्वर्ण से करोड़ गुना अधिक मणि, और मणि से करोड़ गुना अधिक फल बाणलिंग नर्मदेश्वर के पूजन से प्राप्त होता है। नर्मदेश्वर बाण लिंग से भी करोड़ गुना अधिक फल पारद शिवलिंग के पूजन या दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है। पारद निर्मित शिवलिंग से श्रेष्ठ शिवलिंग न तो संसार में हुआ है, और न हो सकता है।

६. रस मार्तण्ड :

लिंग कोटि सहस्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणित रसलिंगार्चनाद भवेत्।
ब्रह्महत्यासहस्राणि गौहत्याशतानिच।
तत्क्षणाद्विलयं यान्ति रसलिंगस्य दर्शनात्
स्पर्शना प्राप्यते मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम्।

अर्थात् हजारों करोड़ों शिवलिंगों की पूजा करने से जो फल प्राप्त होता है उससे भी करोड़ों गुना फल पारद शिवलिंग के पूजन से प्राप्त होता है। हजारों ब्रह्म हत्याओं और सैंकड़ों गौ हत्याओं का किया हुआ पाप भी पारद शिवलिंग के दर्शन करते ही दूर हो जाता है। स्पर्श करने से तो निश्चित रूप से मुक्ति प्राप्त होती है यह स्वयं भगवान् शिव का कथन है।

७. ब्रह्म पुराण :

धन्यास्ते पुरुषः लोके येऽर्थयन्ति रसेश्वरम्।
सर्वपापहरं देवं सर्वकामफलप्रदम्॥
ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्यास्त्रियः शूद्रान्त्यजादयः।
सम्पूज्य तं सुरवरं प्राप्नुवन्ति परां गतिम्॥

अर्थात् संसार में वे मनुष्य धन्य हैं, जो समस्त मनोवांछित फलों को देने वाले पारद-शिवलिंग का पूजन करते हैं। इसका पूजन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री या अन्त्यज कोई भी करके पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता हुआ परम गति को प्राप्त कर सकता है।

८. ब्रह्मवैवर्त पुराण :

पच्यते कालसूत्रेण यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
कृत्वालिंग सकृत्पूज्य वसेत्कल्पशतं दिवि।
प्रजावान् भूमिवान् विद्वान् पुत्रबान्धववास्तथा।
ज्ञानवान् मुक्तिवान् साधुः रस लिंगार्चनाद भवेत्॥

अर्थात् जो एक बार भी पारद-शिवलिंग का विधि विधान से पूजन कर लेता है, वह जब तक सूर्य और चन्द्र रहते हैं तब तक पूर्ण सुख प्राप्त करता है, उसके जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, पुत्र, पौत्र, विद्या, ज्ञान, आदि में कोई कमी नहीं रहती और अन्त में वह निश्चय ही मुक्ति प्राप्त करता है।

९. शिवपुराण :

गोघ्नश्चैव कृतघ्नश्च वीरहा भ्रूणहापिवा।
शरणागतघाती च मित्र विश्रम्भघातकः।
दुष्टपापसमाचारो मातृपितृहापि वा।
अर्चनात् रसलिंगेन तत्तत्पापात् प्रमुच्यते॥

अर्थात् गौ-हत्यारा कृतघ्न, वीरघाती, गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाला तथा माता-पिता का घातक भी यदि पारद-शिवलिंग की पूजा करता है तो वह तुरन्त सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

१०. वायवीय संहिता :

आयुरारोग्यमैश्वर्यं यच्चान्यदपि वांछितम्।
रसलिंगस्यार्चनादिष्टं सर्वं लभते नरः॥

अर्थात् आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य तथा और जो भी मनोवांछित वस्तुऐं हैं उन सबको पारद-शिवलिंग की पूजा से सहज में ही प्राप्त किया जा सकता है।

इसके अलावा भी सैंकड़ों ग्रन्थों में पारद-शिवलिंग की विशेषता बताई है। भगवान् शंकर ने स्वयं कहा है कि मुझे वह व्यक्ति ज्यादा प्रिय है जो द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने की अपेक्षा मात्र पारद शिवलिंग के दर्शन कर लेता है।

पारद शिवलिंग आर्द्रता रहित, निश्चल, छिन्न-पक्षरहित, श्वेत लिंगाकार होना चाहिए और ऐसा शिवलिंग शास्त्र सम्मत होना आवश्यक है, क्योंकि शिवलिंग और उसके आधार का एक निश्चित परिमाण है, यह कार्य केवल "विजय-काल" में ही सम्पन्न करना चाहिए, और इस प्रकार श्रेष्ठ समय में पारे को रससिद्ध करके उसे ठोस बनाने की प्रक्रिया करनी चाहिए, साथ ही साथ शिवलिंग का आकार भी विजय काल में ही सम्पन्न करना चाहिए।

इसके बाद श्रेष्ठ मुहूर्त में पारद-शिवलिंग को मुद्रा बन्ध, अर्चन, प्राण-प्रतिष्ठा, मन्त्र-सिद्ध, रससिद्ध, करना चाहिए। ऐसा होने के बाद संजीवनी मुद्रा मन्त्र से उसे प्रभाव पूर्ण बनाना चाहिए, ऐसा होने पर ही पारद-शिवलिंग दुर्लभ शिवलिंग बनता है और भारत में बहुत ही कम सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ऐसा शिवलिंग है।

जब भाग्य होता है, तभी इसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है, जब सौभाग्य का उदय होता है तभी व्यक्ति इस प्रकार का पारद-शिवलिंग प्राप्त करता है, वस्तुतः वे व्यक्ति और उनकी पीढ़ियां धन्य हैं जिनके घर में देव-दुर्लभ पारद-शिवलिंग स्थापित हैं।

शास्त्रों के अनुसार पारद-शिवलिंग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। मेरे जीवन ऐसे में हजारों अनुभव हैं, यदि उन्हें लेखनीबद्ध किया जाय तो पूरा एक ग्रन्थ बन सकता है कि पारद शिवलिंग के पूजन से उन लोगों ने उन असम्भव कार्यों को भी सम्भव कर दिखाया है जो उनके लिये सम्भव नहीं थे। ऐसे व्यक्ति दरिद्रता के घर में जन्म लेकर भी प्रसिद्ध उद्योगपति और लक्ष्मीपति होते देखे गये हैं, संसार में और सभी मन्त्र-तन्त्र झूठे हो सकते हैं पर ऐसा एक भी उदाहरण प्राप्त नहीं है कि किसी के घर में पारद-शिवलिंग स्थापित हो और उसके जीवन में पूर्णता प्राप्त न हुई हो।

जिसके घर में पारद-शिवलिंग होता है, वह घर तीर्थ के समान माना जाता है और उसमें रहने वालों के समस्त कार्य सुविधापूर्वक सम्पन्न होते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण भोग भोगते देखे गये हैं, ऐसे घरों से नित्य मंगलदायक समाचार प्राप्त होते रहते हैं, जीवन में अभाव या न्यूनता नहीं रहती अपितु उनकी सारी इच्छाएं स्वतः ही पूरी होती रहती है।

वास्तव में ही जिसके तप, ज्ञान द्वारा पाप क्षीण होते हैं उनको ही पारद शिवलिंग की पूजा का सौभाग्य प्राप्त होता है। हो सकता है, आजके इस अनास्थावान युग में यह बात विश्वसनीय प्रतीत नहीं

हो रही हो, पर यह उनका दुर्भाग्य ही है कि वे सही रूप में सोच ही नहीं पाते।

मेरे स्वयं के अनुभव के आधार पर मैं यह घोषणा करने में सक्षम हूं कि पारद शिवलिंग अपने आप में दुर्लभ शिवलिंग है बिना प्रसिद्ध योगी या गुरु के इस प्रकार का शिवलिंग प्राप्त नहीं हो पाता, और भाग्य से ही रससिद्ध पारद-शिवलिंग घर में स्थापित हो पाता है।

इस जीवन में धन तो आता जाता रहता है, परन्तु जीवन का सौभाग्य उदय होने पर ही व्यक्ति सही निर्णयकर पाता है और प्रयत्न करके अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर पाता है, जिससे वह तो पूर्ण भोग और मोक्ष प्राप्त करता ही है, उसकी आगे की पीढ़ियां भी उसके प्रति कृतज्ञ रहती है जिसकी वजह से उनके घर में पारद शिवलिंग स्थापित हो सका।

आज के इस युग में भी पारद-शिवलिंग एक चमत्कार है, एक श्रेष्ठ साधना है, एक आश्चर्यजनक सफलतादायक उपाय है।

आमन्त्रण

पत्रिका-पाठकों का निरन्तर दबाव हम पर बढ़ता जा रहा है, कि हम उन्हें भी पत्रिका के रचनात्मक निर्माण में भागीदार बनायें।

पत्रिका-पाठकों के विचारों का सम्मान करते हुए उन्हें भी पत्रिका-निर्माण में आमन्त्रित करते हैं—

१. पाठक मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र से सम्बन्धित अपने मौलिक लेख भेजें। उपयोगी एवं मौलिक होने पर उन्हें अवश्य स्थान देंगे।

२. अपने आसपास कोई सिद्ध सन्त, योगी या मन्त्र-तन्त्र के जानकार हों, तो फोटो सहित उनका परिचय एवं उनकी सिद्धियों के बारे में लिख भेजें।

३. यदि आपके जीवन में किसी मन्त्र ने चमत्कारपूर्ण प्रभाव दिखाया हो, या किसी साधु से प्राप्त मन्त्र हो, या किसी जड़ी-बूंटी का ज्ञान हो, या आपके जीवन में कोई अलौकिक घटना घटी हो तो सुवाच्य अक्षरों में लिख भेजें, प्रामाणिक होने पर हम पत्रिका में अवश्य स्थान देंगे।

अकाल मृत्यु टालने का सर्वोत्तम साधन

महामृत्युञ्जय-विधान

"महामृत्युञ्जय-विधान" मन्त्रशास्त्र में क्रान्तिकारी मन्त्र तथा आश्चर्यजनक फलदायक प्रयोग है। बीमारियों, शिशुरोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिये यह श्रेष्ठतम अनुष्ठान है।

भारत में ही नहीं, विदेशों में भी "महामृत्युञ्जय" की चर्चा रही है। प्रत्येक बालक रोगी या अकाल मृत्यु से भीत व्यक्ति को इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त 'महामृत्युञ्जय यन्त्र" धारण कर लेना चाहिए।

साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है—

महामृत्युञ्जय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है। इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्यु या बाल-घात योग हो, उसके लिये महामृत्युञ्जय विधान सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युञ्जय मन्त्र अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है, तथा उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मन्त्र अपने आप में महत्त्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

नीचे मैं इस अनुष्ठान से सम्बन्धित विधि प्रस्तुत कर रहा हूं जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें।

अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है। अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है।

अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं—लघु अनुष्ठान, चौबीस हजार मन्त्र का होता है और इसके बाद २४० आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है। मध्यम अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का होता है जिसमें १२५० आहुतियां दी जाती हैं, तथा महा-पुरश्चरण या महाअनुष्ठान चौबीस लाख मन्त्र जप का होता है और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती हैं।

लघु अनुष्ठान को नो दिन में २७ माला प्रतिदिन के हिसाब से मध्यम अनुष्ठान ४० दिन में ३३ माला प्रतिदिन के हिसाब से तथा महाअनुष्ठान एक वर्ष में ६६ माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके सम्पन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए—

१. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त देखकर करना चाहिए।
२. इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शंकर का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ शक्ति की भावना भी रखनी चाहिए।
३. जहां जप करें वहां का वातावरण सात्विक हो तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके साधना या मन्त्र जप प्रारम्भ करना चाहिए।
४. जप करते समय लगातार घी का दीपक जलते रहना चाहिए।
५. इसमें चन्दन या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।
६. पूरे साधना काल में ब्रह्मचर्य का पूरा पूरा पालन करना चाहिए।
७. यथाशक्ति एक समय भोजन करना चाहिए और साधना काल में चेहरे के या सिर के बाल नहीं कटाने चाहिए।
८. अनुष्ठान करने से पूर्व मन्त्र को संस्कारित करके ही पुरश्चरण करना चाहिए।
९. नित्य निश्चित संख्या में मन्त्र जप करना चाहिए, कभी कम, कभी अधिक करना ठीक नहीं है।
१०. शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिये इस मन्त्र का १,१०० जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए ११,००० मन्त्र जप तथा पुत्र प्राप्ति, उन्नति एवं अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिये १,००,००० मन्त्र जप का विधान है।

धर्म शास्त्रों में मन्त्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु भय को दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं उनमें महामृत्युञ्जय साधना का स्थान सर्वोच्च है। हजारों लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है, कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से इस साधना को करता है तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इसका सामान्य मन्त्र निम्नलिखित है पर साधक को बीज युक्त मन्त्र का ही जप करना चाहिए।

मन्त्र :

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
(ऋ. ७-५९-१२, यजुर्वेद ३-६०)

अर्थात् हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं, मैं सुगन्धियुक्त और पुष्टि प्रदान करने वाले "उर्वारुक" की तरह मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाऊं, अमृत से नहीं।

विधि :

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातः उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर गुरु-स्मरण, गणेश-स्मरण, शंकर-पूजन आदि के बाद निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिए।

संकल्प :

ॐ मम आत्मनः श्रुति स्मृतिपुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं। अमुक यजमानस्य वा शरीरेऽमुकपीडा निराशद्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युन्जय देवता प्रीतये अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युन्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।

विनियोग :

हाथ में जल लेकर इस प्रकार पाठ करें—

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युन्जयमन्त्रस्य वामदेव-कहोलवशिष्ठा ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युन्जयप्रीतये ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

उच्चारण के बाद हाथ का जल छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास :

निम्न मन्त्रों से सर, मुख, हृदय, लिंग और चरणों का स्पर्श करना चाहिए।

पुनः वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि। पंक्तिगायत्र्युष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे:, सदाशिवमहामृत्युन्जयरुद्र देवतायै नमः हृदि:, ह्रीं शक्तये नमः लिंगे, श्रींबीजाय नमः पादयो।

करन्यास :

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवाय बद्ध तर्ज्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्लीं ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास :

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवाय शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिपुष्टि-वर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्लीं ह्लीं कवचाय हुँ।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय विलोचनाय ऋग्यजुस्साम-मन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्र-याय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट्।

पद न्यासः

त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः सुगन्धिनेत्रयोः। पुष्टिवर्धनं मुखे। उर्वारुक गण्डयोः इव हृदये। बन्धनात् जठरे। मृत्यो लिंगे। मुक्षीय ऊर्वो। मा जान्वोः। अमृतात् पादयोः।

ध्यानम् :

फिर शंकर का ध्यान करें—

हस्ताम्भोजयुगस्यकुम्भयुगला दुद्धस्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोयुगेन दधतं स्वांके सकुम्भो करो।

अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्
पीयूषार्द्रं तनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युन्जयम् ।।
(सती खं. ३८-२४)

ध्यान का स्वरूप इस प्रकार से है कि मृत्युन्जय के आठ हाथ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ऊपर के दो हाथों से दो कलश उठाये हुए हैं और नीचे वाले दो हाथों से वे सर पर जल डाल रहे हैं। सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी वे दो कलश लिये हुए हैं जिन्हें अपनी गोद में रखा हुआ है। सातवें हाथ में रुद्राक्ष और आठवें में मृग धारण कर रखा है, उनका आसन कमल का है, उनके सिर पर स्थित चन्द्रमा निरन्तर अमृत वर्षा कर रहा है, जिससे शरीर भीग गया है, वे त्रिनेत्र युक्त हैं और उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है। उनके बांयी ओर भगवती गिरिजा विराज रही है।

जप :

ध्यान के बाद महामृत्युन्जय का जप करना चाहिए। मन्त्र का स्वरूप इस तरह है :

ॐ ह्रौं जूं सः, ॐ भूर्भुव स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं ह्रौं ॐ।

यह सम्पुट युक्त मन्त्र है। इसका अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का माना जाता है। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और ब्राह्मण भोजन आदि करना चाहिए। जप रुद्राक्ष की माला से करना चाहिए।

यह रोग-निवारण का अचूक विधान माना जाता है, हजारों का अनुभूत है। कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसे अपनाकर अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

लघु मृत्युन्जय :

ॐ जूं सः (नाम जिसके लिए अनुष्ठान किया जा रहा हो) पालय पालय सः जूं ॐ।

इसका पूर्ण अनुष्ठान ११ लाख मन्त्र जप का है, जिसका दशांश हवन करना चाहिए। शास्त्र ने इसे सर्व रोग निवारक घोषित किया है।

मृत्युन्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनः ।।

मन्त्र जप :

यदि कोई साधक केवल मन्त्र जप करना चाहे उनके लिये लघु मृत्युन्जय मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ जूं सः सः जूं ॐ

लघुत्तम मन्त्र :

महामृत्युन्जय का लघुत्तम मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रौं जूं सः

बलिदान मन्त्र :

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मन्त्र से भगवान् मृत्युन्जय को जायफल समर्पित करना चाहिए—

"ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः नमः शिवाय प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा"

वस्तुतः महामृत्युन्जय विधान मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अद्भुत उपाय है जो साधक स्वयं न कर सके, उसे चाहिये कि वह योग्य ब्राह्मण से यह अनुष्ठान सम्पन्न करावें। यों भी आज के इस घात-प्रतिघात युग में प्रत्येक व्यक्ति को अग्रिम रक्षार्थ "महामृत्युन्जय यन्त्र" धारण कर ही लेना चाहिए।

नर्मदेश्वर – बाणलिंग

कहते हैं कि नर्मदा नदी में प्रत्येक कंकर सही रूप में शंकर है और उनका आकार शिवलिंग की तरह दिखाई देता है। एक बार नर्मदा तट पर बाणासुर ने तपस्या कर भगवान शंकर को प्रसन्न किया और वर मांगा कि आप नर्मदा तट के पर्वतों पर हमेशा लिंग रूप में निवास करें और ऐसे प्रत्येक शिव लिंग चैतन्य हों, भगवान शंकर ने "तथास्तु" कहा, तब से नर्मदा के एक बाण लिंग की पूजा करने से अनेक शिवलिंगों की पूजा का फल प्राप्त होता है।

मध्य प्रदेश में खण्डवा स्टेशन से २१ मील दूर बीर स्टेशन है जहां से १५ मील दूर पुनासा गांव तक पक्की सड़क है यहां से आगे पैदल ५ मील जाने पर नर्मदा का सबसे बड़ा प्रपात मिलता है जो कि ५० फीट ऊपर से गिरता है। प्रपात के नीचे कुण्ड है इस कुण्ड से जो भी कंकर प्राप्त होता है, वह शिव लिंग के आकार का ही होता है। इस कुण्ड का नाम "धावड़ी कुण्ड" है। अधिकांश नर्मदेश्वर बाण लिंग यहीं से लोग ले जाते हैं तथा यहीं से प्राप्त शिवलिंग का महत्व है।

नर्मदेश्वर बाण लिंग को ग्रहण करने की विधि इस प्रकार है—

नर्मदेश्वर को एक छोटी तराजू के एक पलड़े पर रख कर दूसरे पलड़े में चावल डाल कर तोलें, कुछ समय बाद शिवलिंग को बाहर निकाल कर उसी तराजू से उन्हीं चावल के दानों से पुनः तोलने पर यदि शिवलिंग हल्का निकले तो वह शिवलिंग उत्तम माना जाता है यदि पुनः तोलने पर भारी निकले तो वह मात्र साधुओं के लिये ही उपयुक्त है, और यदि बार-बार तोलने पर भी उसका भार बराबर बना रहे तो वह शिव लिंग व्यर्थ और महत्वहीन माना जाता है, उसको पुनः जल में छोड़ देना चाहिए, पर इस प्रकार का प्रयोग उस कुण्ड से निकालते समय ही करना चाहिए, घर लाकर बार-बार इस प्रकार का प्रयोग करना वर्जित है।

इस प्रकार का शिवलिंग घर ला कर स्नान करा कर उसका पूजन करना चाहिये और उसके बाद ही उसे बाण योनि में स्थापित कर पूजा स्थान में रखना चाहिये।

वहां से शिवलिंग प्राप्त करते समय निम्न बातों का भी ध्यान रखना चाहिये—

१. खुरदरा शिवलिंग घर में स्थापित होने से पुत्र की मृत्यु हो जाती है।
२. यदि शिवलिंग बहुत अधिक खुरदरा और अनगढ़ सा हो तो ऐसा शिव लिंग घर में स्थापित होने से पुत्र और स्त्री का क्षय होना माना जाता है।
३. यदि चपटा शिवलिंग हो तो उसके पूजन से घर का सत्यानाश हो जाता है।
४. यदि शिवलिंग का एक हिस्सा चपटा हो और दूसरा हिस्सा गोल हो तो ऐसा शिवलिंग स्त्री, पुत्र आदि को पीड़ा पहुंचाता है।
५. यदि शिवलिंग ऊपर से फूटा हुआ या खुरदरा हो तो घर में बीमारी बनी रहती है।
६. यदि शिवलिंग छेद युक्त हो तो घर का मालिक मानसिक रूप से परेशान रहता है।

७. यदि शिवलिंग में कण दिखाई दें तो ऐसा शिव लिंग अच्छा नहीं माना जाता।

८. यदि शिवलिंग का ऊपर का हिस्सा पतला चोंचदार हो तो वह घर के स्वामी का अनिष्ट करता है।

९. यदि शिवलिंग के ऊपर का भाग चपटा हो तो घर के स्वामी की तुरन्त मृत्यु हो जाती है।

१०. यदि शिवलिंग ऊपर से टेढा-मेढा हो तो ऐसा शिवलिंग भी अच्छा नहीं माना जाता।

११. बहुत मोटा स्थूलकाय शिवलिंग गृहस्थ के लिये वर्जित माना गया है।

१२. यदि शिवलिंग बहुत पतला हो तो वह बीमारी देने वाला माना जाता है।

श्रेष्ठ शिवलिंग

१. जो शिव लिंग शहद के रंग के होते है वे लक्ष्मी दायक माने जाते हैं।

२. जिस शिवलिंग का रंग मेघ के समान हो वह आर्थिक दृष्टि से लाभदायक रहता है।

३. जिस शिवलिंग का रंग भंवरे के समान काला हो, वह अत्यन्त श्रेष्ठ माना जाता है।

४. सबसे अच्छा शिवलिंग कमल गट्टे के समान होता है और उसका पूजन अत्यन्त ही शुभ माना गया है।

५. मुर्गी के अण्डे के आकार का शिवलिंग पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करने के लिये श्रेष्ठ माना गया है।

६. जिस शिवलिंग का रंग शहद के समान हो, वह शिव लिंग शुभ माना जाता है।

७. सफेद रंग का शिवलिंग जीवन में पूर्ण उन्नति एवं समृद्धि देने में सहायक होता है।

८. जिस शिवलिंग का रंग नीला हो, वह अत्यन्त ही श्रेष्ठ माना गया है।

९. पीले रंग में हल्की सी लाली मिले हुए रंग के आकार का शिव लिंग गृहस्थ व्यक्तियों के लिये पूर्ण भोग और मोक्ष देने में सहायक माना गया है।

१०. एक से अधिक रंग वाला शिवलिंग श्रेष्ठ माना जाता है।

११. जो शिवलिंग धारीदार हो वह अच्छा शिवलिंग माना गया है।

१२. यदि शिवलिंग चन्द्रमा या यज्ञोपवीत युक्त हो अर्थात् शिवलिंग में इस प्रकार का चन्द्रमा या यज्ञोपवीत प्राकृतिक रूप से दिखाई देता हो तो वह शिवलिंग अत्यन्त ही श्रेष्ठ माना गया है।

वस्तुतः शिवलिंग कई आकार के और कई रंग के होते हैं, अतः इस सम्बन्ध में जानकार विद्वान् से राय ले कर अपने घर में उन्हें स्थापित करना चाहिये, स्थापित करने से पूर्व उसे पवमान सूक्त, रुद्र सूक्त, नीलरुद्र सूक्त त्वरित मन्त्र, तथा लिंग सूक्त से मंत्र युक्त बना कर चैतन्य कर देना चाहिये और विशेष मंत्रों से उस शिवलिंग में ही मां पार्वती तथा नन्दी की स्थापना कर उसे पूर्ण बना कर अपने घर में स्थापित करना चाहिये।

यों भगवान राम ने कहा है कि जिसके घर में शिव लिंग स्थापित नहीं होता और मेरी पूजा होती है, तो वह पूजा व्यर्थ और निरर्थक होती है।

वस्तुतः कलियुग में भगवान शंकर तुरन्त प्रसन्न होने वाले और शीघ्र मनोवांछित फल देने वाले माने गये है, अतः प्रत्येक गृहस्थ के घर में शिवलिंग स्थापित होना सौभाग्य का चिन्ह माना जाता है।

शिव-पूजन

ध्यान :

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीति
हस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतिममरगणैर्व्याघ्रकृतिं
वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्च-
वक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥
स्वच्छ स्वर्णपयोद मौक्तिकजपावर्णैर्मुखैः
पञ्चभिः
त्र्यक्षैरंचितमीशमिन्दुमुकुटं सोमेश्वराख्यं प्रभुम्।
शूलटंक कृपाणवज्रदहनान्-नागेन्द्रघंटांकुशान्
पाशं भीतिहरं दधानममिताकल्पोज्ज्वलांगं भजे॥

सद्योजात-स्थापन

पश्चिमं पूर्णचन्द्राभं जगत् सृष्टिकरोज्ज्वलम्।
सद्योजातं यजेत् सौम्यं मन्दस्मित मनोहरम्॥

वामदेव-स्थापन

उत्तरं विद्रुमप्रख्यं विश्वस्थितिकरं विभुम्।
सविलासं त्रिनयनं वामदेवं प्रपूजयेत्॥

अघोर-स्थापन

दक्षिणं नीलजीमूतप्रभं संहारकारकम्।
वक्रभ्रूकुटिलं घोरमघोराख्यं तमर्चयेत्॥

तत्पुरुष-स्थापन

यजेत् पूर्वमुखं सौम्यं बालार्क सदृशप्रभम्।
तिरोधानकृत्यपरं रुद्रं तत्पुरुषाभिधम्॥

ईशान-स्थापन

ईशानं स्फटिकप्रख्यं सर्वभूतानुकंपितम्।
अतीव सौम्यमोंकार-रूपं ऊर्ध्वमुखं यजेत्॥
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन :

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः॥
एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशांकमौलेवृष-
भाधिरूढ़।
देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्
नमस्ते॥
आवाहयामि देवेशमादिमध्यान्तवर्जितम्।
आधारं सर्वलोकानामाश्रितार्थ प्रदायिनम्॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आवाहनं समर्पयामि।

अक्षत छिड़क दें।

आसन :

ॐ याते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी।
तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाक-
शीहि॥

विश्वात्मने नमस्तुभ्यं चिदम्बरनिवासिने ।
रत्नसिंहासनं चारु ददामि करुणानिधे ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।

पुष्प चढ़ावें ।

पाद्य :

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु माहि (गूं) सीः पुरुषञ्जगत् ।।

नमः शर्वाय सोमाय सर्वमंगल हेतवे ।
तुभ्यं संप्रददे पाद्यं श्रीकैलास निवासिने ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

चरणों में जल अर्पित करें ।

अर्घ्य :

ॐ शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छावदामसि । यथानः सर्वमिज्जगदयक्ष्म (गूं) सुमनाऽअसत् ।।

अनर्घफलदात्रे च शास्त्रे वैवस्वतस्य च ।
तुभ्यमर्घ्यं प्रदास्यामि द्वादशान्तनिवासिने ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यपात्र में गन्धाक्षतपुष्प के साथ जल लेकर चढ़ावें ।

आचमन :

ॐ अद्धयवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् । अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्चयातुधान्योधराचीः परासुव ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

छः बार आचमन करावे ।

स्नान :

ॐ असोयस्ताम्रोऽअरुणउतवभ्रुः सुमंगलः । ये चैन (गूं) रुद्राअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषा (गूं) हेडऽईमहे ।

गंगाक्लिन्नजटाभार सोमसोमार्धशेखर ।
नद्या मया समानीतं स्नानं कुरु महेश्वरः ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि । स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

घंटावादन करें व स्नान करावें ।

पयस्नान :

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु महाम् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पयः स्नानं समर्पयामि, पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

पहले दूध व फिर जल से स्नान करावें ।

दधिस्नान :

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु (गूं) षितारिषत् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि । दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

पहले दही से व फिर जल से स्नान करावें ।

घृतस्नान :

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम । अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षिहव्यम् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

पहले घी से व फिर जल से स्नान करावें ।

मधुस्नान :

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव (गूं) रजः । मधुद्यौरस्तुनः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

पहले शहद से व फिर जल से स्नान कराव ।

शर्करास्नान :

ॐ अपा(गूं)रसमुद्वयस(गूं) सूर्य्ये सन्त(गूं) समाहितम् । अपा(गूं) रसस्ययो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृण्हाम्येषते योतिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि । शर्करा स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

पहले चीनी से व फिर जल से स्नान करावें ।

पंचामृतस्नान :

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि । पंचामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

पहले पंचामृत व फिर जल से स्नान करावें ।

गन्धोदकस्नान :

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।

मलयाचलसंभूतं चन्दनागरुसंभवम् ।
चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः गन्धोदक स्नानं समर्पयामि । गन्धोदक स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

पहले गुलाब-जल से व फिर जल से स्नान करावें ।

शुद्धोदकस्नान :

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनः । श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

घंटावादन करके जल से स्नान करावें व फिर आचमन करावें ।

वस्त्र :

ॐ असौ योवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः । उतैनंगोपाऽअदृश्रन् नदृश्रन् नुदहार्यः सदृष्टोमृडयाति नः ।

दिगम्बर नमस्तुभ्यं गजाजिनधराय च ।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयाय वस्त्रयुग्मं ददाम्यहम् ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत :

ॐ नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्य सत्वानोहन्तेभ्योकरन्नम्:।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सुगन्ध द्रव्यः

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः सुगन्ध-द्रव्यं समर्पयामि।

भगवान को इत्र लगाएँ।

भस्म :

अग्निहोत्र समुद्भूतं विरजाहोमपावितम्।
गृहाण भस्म हे स्वामिन् भक्तानां भूतिदायक॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः भस्म समर्पयामि।

भस्म अर्पित करें।

गन्ध :

ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्चते हस्तऽइषवः पराता भगवोवप।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः गन्धं समर्पयामि।

चन्दन चढ़ावें।

अक्षत :

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तोषतस्वभानवोविप्रान्नविष्ठ्यामती योजान्। विन्द्रतेहरी।

अक्षतान् धवलान् देव सिद्धगन्धर्वं पूजित।
सुन्दरेश नमस्तुभ्यं गृहाण वरदो भव॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत चढ़ावें।

पुष्प :

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां२ उत। अनेशन्नस्ययाऽइषवऽ आभुरस्यनिषङ्गधिः।

तुरीयवनसंभूतं परमानन्दसौरभम्।
पुष्पं गृहाण सोमेश पुष्पचापविभंजन॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

बिल्वपत्र :

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च व्वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्याय च।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपाप संहारं-मेक बिल्वं शिवार्पणम्॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोर-पाप संहारं-मेक बिल्वं शिवार्पणम्॥

अंगपूजा :

ॐ भवाय नमः पादौ पूजयामि। ॐ जगत्पित्रे नम जंघे पूजयामि। ॐ मृडाय नमः जानुनी पूजयामि। ॐ रुद्राय नमः ऊरू पूजयामि। ॐ कालान्तकाय नमः कटिं पूजयामि। ॐ नागेन्द्राभरणाय नमः नाभिं पूजयामि। ॐ स्तव्याय नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ भवनाशनाय नमः भुजान् पूजयामि। ॐ कालकंठाय नमः कंठं पूजयामि। ॐ महेशाय नमः मुखं पूजयामि। ॐ लास्यप्रियाय नमः ललाटं पूजयामि। ॐ शिवाय नमः शिरः पूजयामि। ॐ प्रणतार्तिहराय नमः सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि।

प्रत्येक बार गंधाक्षतपुष्प से सम्बन्धित अंग को अर्पित करें।

अष्ट पूजा :

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः, ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः, ॐ रुद्राय अग्निमूर्त्तये नमः, ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः, ॐ भीमाय आकाश मूर्त्तये नमः, ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः, ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः, ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः।

प्रत्येक बार गन्धाक्षतपुष्प, बिल्वपत्र अर्पित करें।

परिवार पूजा :

ॐ उमायै नमः, ॐ शंकरप्रियायै नमः, ॐ पार्वत्यै नमः, ॐ काल्यै नमः ॐ कालिन्द्यै नमः, ॐ कोटिदेव्यै नमः, ॐ विश्वधारिण्यै नमः, ॐ गंगा देव्यै नमः, नवशक्तीन् पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रत्येक बार गन्धाक्षतपुष्प अर्पित करें।

ॐ गणपतये नमः, ॐ कार्तिकेयाय नमः, ॐ पुष्पदन्ताय नमः, ॐ कपर्दिने नमः, ॐ भैरवाय नमः, ॐ शूलपाणये नमः, ॐ चण्डेशाय नमः। ॐ दण्डपाणये नमः, ॐ नन्दीश्वराय नमः, ॐ महाकालाय नमः। सर्वान् गणाधिपान् पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ अघोराय नमः, ॐ पशुपतये नमः, ॐ शर्वाय नमः, ॐ विरूपाक्षाय नमः, ॐ विश्वरूपिणे नमः, ॐ त्र्यम्बकाय नमः, ॐ कपर्दिने नमः, ॐ भैरवाय नमः, ॐ शूलपाणये नमः, ॐ ईशानाय नमः, एकादशरुद्रान् पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सौभाग्यद्रव्य :

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा (गूं) सम्परिपातु विश्वतः॥

हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम्।
सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि।

अबीर, गुलाल आदि चढ़ावें।

धूप :

ॐ या ते हेतीर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः धूपं आघ्रापयामि।

अगरबत्ती जलायें।

दीप :

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो यऽइषुधिस्त वारेऽअस्मन्निधेहितम्।

साज्यवर्तियुतं दीपं सर्वमंगलकारम्।
समर्पयामि पश्येदं सोमसूर्याग्निलोचन॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः दीपं दर्शयामि।

प्रज्ज्वलित दीपक पर घंटा-वादन करते हुए अक्षत छोड़ दें।

नैवेद्य :

नैवेद्य के ऊपर बिल्वपत्र या पुष्प प्रोक्षण करते हुए रुद्र-गायत्री बोलें—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

फिर नैवेद्य पर धेनुमुद्रा दिखाते हुए निम्नांकित मन्त्र बोलें—

ॐ अवतत्य धनुष्ट्व (गूं) सहस्राक्षशतेषुधे । निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव ।।

नैवेद्यं षड्रसोपेतं विषाशन् घृतान्वितम् ।
मधुक्षीरापूपयुक्तं गृह्यतां सोमशेखर ।।

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणिः । बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व (गूं) हसः ।

यस्य स्मरण मात्रेण सफला सन्ति सत्क्रियाः ।
तस्य देवस्य प्रीत्यर्थं इयं ऋतुफलार्पणम् ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि नाना ऋतुफलानि च समर्पयामि ।

फिर ग्रासमुद्रा से निम्नांकित उच्चारण करें—

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि, पूर्वापोषनं समर्पयामि ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मध्ये पानीयं समर्पयामि, नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि, उत्तरापोषनं समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि, मुखप्रक्षालनं समर्पयामि ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

भगवान के हाथों में चन्दन अर्पित करें ।

ताम्बूल :

ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मुखशुद्धयनार्थे ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा :

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत । सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः सांगता सिद्धयर्थं हिरण्यगर्भ दक्षिणां समर्पयामि ।

नीराजन :

ॐ इद (गूं) हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर (गूं) सर्वगण (गूं) स्वस्तये । आत्मसनि । प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनिः । अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ।

ध्यान करें—

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनांपतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवंशंकरम् ।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घंटां डमरुकसहितं सांकुशं वामभागे
नानालंकादीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नीराजनं दर्शयामि ।

जल आरती :

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्माशान्तिः सर्वं (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।

प्रदक्षिणा :

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्त मुत मा नऽउक्षितम् । मा नो वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

पुष्पांजलि :

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।।

ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगितो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मन्त्र-पुष्पांजलि समर्पयामि ।

नमस्कार :

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वर ।
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।।
त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे ।
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानांपतये नमः ।।
गङ्गाधर नमस्तुभ्यं वृषभध्वज नमोस्तु ते ।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो-भूयो नमो नमः ।।

ॐ निधनपतये नमः । निधनपतान्तिकाय नमः । ऊर्ध्वाय नमः । ऊर्ध्वलिंगाय नमः । हिरण्याय नमः । हिरण्यलिंगाय नमः । सुवर्णाय नमः । सुवर्णलिंगाय नमः । दिव्याय नमः । दिव्यलिंगाय नमः । भवाय नमः । भवलिंगाय नमः । शर्वाय नमः । शर्वलिंगाय नमः । शिवाय नमः । शिवलिंगाय नमः । ज्वालाय नमः । ज्वललिंगाय नमः । आत्माय नमः । आत्मलिंगाय नमः । परमाय नमः । परमलिंगाय नमः । एतत् सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिंग (गूं) स्थापयति पाणि मन्त्रं पवित्रम् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नमस्करोमि ।

प्रार्थनापूर्वक क्षमापन :

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत् पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तुमे ॥
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥
क्षमस्व देवदेवेश क्षमस्व भुवनेश्वर ।
तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ।
असारे संसारे निजभजन दूरे जडधिया ।
भ्रमन्तं मामन्धं परम-कृपया पातुमुचितम् ॥
मदन्यः को दीन-स्तव कृपण-रक्षाति-निपुण ।
स्त्वदन्यः को वा मे त्रिजगति शरण्यः पशुपते ॥

विशेषार्घ्य :

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर ॥
रक्ष-रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानां अभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
वरद त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येन फलदोस्तु सदा मम ॥

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो
गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः । मानो वीरान्रुद्र
भामिनो बधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः विशेषार्घ्यं
समर्पयामि ।

अर्घ्य-पात्र में जल, गन्धाक्षत-पुष्प, बिल्वपत्र, फल आदि मंगल द्रव्य लेकर भगवान को अर्पित करें ।

समर्पण :

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्रचमेव च ।
आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याञ्च तव दर्शनात् ॥
देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ।
देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि ॥

साधुवाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ।
तत् सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥

शंख या आचमनी का जल देव के दक्ष हस्त में देते हुए समस्त पूजा-फल उन्हें समर्पित करें ।

अनेनकृत पूजाकर्मणा श्रीसंविदात्मकः साम्बसदाशिवः प्रीयन्ताम् । ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

इसके बाद वैदिक, गृहस्थ या संस्कृत आरती कर पुष्पांजलि दें ।

आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं
भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी-
सहितं नमामि ॥

जय शिव ॐकारा, भज शिव ॐकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ॥१॥
ॐ हर हर०

एकानन चतुरानन पंचानन राजै ।
हंसासन गरूडासन वृषवाहन साजै ॥२॥
ॐ हर हर०

दो भुज चारू चतुर्भुज दशभुज अति सोहै ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहे ॥३॥
ॐ हर हर०

अक्षमाला वनमाला रूंडमाला धारी ।
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी ॥४॥
ॐ हर हर०

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे ।
सनकादिक गरूडादिक भूतादिक संगे ॥५॥
ॐ हर हर०

कर मध्ये इक मण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता ।
सुखकर्ता दुखहर्ता, सुख में शिव रहता ॥६॥
ॐ हर हर०

काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी ब्रह्मचारी ।
नित उठ ज्योत जलावत दिन-दिन अधिकारी ॥७॥
ॐ हर हर०

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ॥८॥
ॐ हर हर०

त्रिगुणा स्वामी की आरती जो कोई नर गावे
ज्यारां मन शुद्ध होय जावे, ज्यारां पाप परा जावे
ज्यारे सुख संपति आवे, ज्यारां दु ख दारिद्रय जावे
ज्यारे घर लक्ष्मी आवे
भणत भोलानन्द स्वामी, रटत शिवानन्द स्वामी
इच्छा फल पावे ॥९॥
ॐ हर हर०

जै शिव ॐ कारा ।

मन भज शिव ॐ कारा ।
मन रट शिव ॐ कारा ॥
हो शिव भूरी जटावाला ।
हो शिव दीर्घ जटा वाला ॥
हो शिव भाल चन्द्र वाला ।
हो शिव तीन नैत्र वाला ॥
हो शिव ऊपर गंगधारा ।
हो शिव बरसत जलधारा ॥
हो शिव तीव्र नैत्र वाला ।
हो शिव गल बिच रुण्डमाला ॥
हो शिव कम्बु ग्रीव वाला ।
हो शिव भष्मी अंग वाला ॥
हो शिव फणिधर फण धारा ।
हो शिव वृषभ स्कन्ध वाला ॥
हो शिव ओढ़त मृग छाला ।
हो शिव धारण मुण्डमाला ॥
हो शिव भूत प्रेत वाला ।
हो शिव बैल चढण वाला ॥
हो शिव पारबती प्यारा ।
हो शिव भक्तन हित कारा ॥
हो शिव दुष्ट दलन वाला ।
हो शिव पीवत भंग प्याला ॥
हो शिव मस्त रहन वाला ।
हो शिव दरसन दो भोला ॥
हो शिव परसन हो भोला ।
हो शिव बरसो जलधारा ॥
हो शिव काटो जमफासा ।
हो शिव मेटो जमत्रासा ॥
हो शिव रहले मत वाला ।
हो शिव ऊपर जलधारा ॥
हो शिव ईश्वर ॐ कारा ।
हो शिव बम बम बम भोला ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, भोले भोलेनाथ महादेव
अर्धांगी धारा । ॐ हर हर हर महादेव ।

आरती किस प्रकार करें—

शिव की आरती में सबसे पहले शिव के चरणों का ध्यान कर के चार बार आरती उतारें, फिर नाभि कमल का ध्यान करके दो बार, फिर मुख का स्मरण करके एक बार तथा सर्वांग की सात बार, इस प्रकार चौदह बार आरती उतारें । इसके बाद शंख में या पात्र में जल लेकर घुमाते हुए छोड़ें और निम्न मन्त्र पढ़ें—

ॐ द्यौ (हू) शांतिरन्तरिक्षं (गूं) शांति (हि) पृथिवी शांति राप (ह) शांतिरोषधय (ह) शांति (हि) वनस्पतय (ह) शांतिर्विश्वेदेवा (ह) शांति (हि) ब्रह्माशांति (हि) सर्व (गूं) शांति (हि) शांति रे वशान्ति (हि) सामाशान्तिरेधि ॥

आरती के बाद भक्तिभाव से सिर झुकाकर शिव स्तुति करें— ।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानांमीश पारं न याति ।।१।।
वन्दे देवउमापतिं सुरगुरूं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वंदे पशुनाम्पतिम् ।
वंदे सूर्यशशांक-वह्निनयनं वंदे मुकुंदप्रियं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ।।२।।
शांतं पद्मासनस्थं शशधर मुकटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं ।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगं वहन्तम् ।।
नागं पाशं च घन्टां डमरुक सहितम् सांकुशं वामभागे,
नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ।।३।।

फिर हाथों में पुष्प लेकर मन्त्र पुष्पांजलि पढ़ते हुए सदाशिव को पुष्प अर्पण करें—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
तेह्नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।१।।
ॐ राजाधिराज प्रसह्य साहिने ।। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । समे कामान् कामकामायमह्यम् ।। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।।२।।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्र पर्यन्तायां मेकराडिति ।। तदप्येष श्लोको भीगितो मरूतः परिवेष्टारो मरूत्तस्यावसन् गृहे ।। आविक्षितस्य काम प्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति ।। (इति मन्त्र पुष्पांजलि समर्प्य)

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे ।।

फार्म ४
(नियम ८ देखिये)
"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र-विज्ञान"

१.	प्रकाशन स्थान—	जोधपुर
२.	प्रकाशन अवधि—	मासिक
३.	मुद्रक का नाम—	श्री राजेन्द्रसिंह सोलंकी
	क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
	पता—	द्वारा जितेन्द्र प्रिण्टर्स, घासमण्डी रोड, जोधपुर
४-५.	प्रकाशक व सम्पादक का नाम —	कैलाशचन्द्र श्रीमाली
	क्या भारत का नागरिक हैं ?	हां
	पता—	द्वारा-मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान डॉ. श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कोलोनी जोधपुर ३४२ ००१
६.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों, तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझेदार या हिस्सेदार हों ।	कैलाशचन्द्र श्रीमाली द्वारा मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान डॉ. श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कोलोनी जोधपुर ३४२ ००१

मैं कैलाशचन्द्र श्रीमाली एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम ज्ञानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं ।

दिनांक २८ फरवरी, १९८१ — कैलाशचन्द्र श्रीमाली
प्रकाशक

भस्म विधि और माहात्म्य

जिन रूद्र भगवान् की विभूति (भस्म) ब्रह्म ज्ञान के उपाय रूप में बखानी गयी है, और जो अपना भजन करने वालों को निज स्वरूप दे डालते हैं, उन कालाग्निरूप रुद्र की मैं शरण जाता हूं ।

"कालाग्निरूद्रोपनिषद्" के प्रवर्त्तक 'अग्नि ऋषि' हैं, अनुष्टप् छन्द है, श्रीकालाग्निरूद्र देवता हैं, और श्रीकालाग्निरुद्र को प्रसन्नता के लिये भस्म का त्रिपुण्ड धारण करना विनियोग (उपयोग) है ।

सनत्कुमार ने भगवान् कालाग्निरूद्र से पूछा कि—हे भगवन् ! त्रिपुण्ड-धारण की विधि को तत्व-सहित बताइये, उसमें से कौनसा द्रव्य और कितना स्थान अपेक्षित है और त्रिपुण्ड का क्या प्रमाण है ? उसमें रेखाएं कितनी होती हैं, उसके मन्त्र क्या हैं, शक्ति क्या है, देवता कौन है, कर्ता कौन है, और उसके धारण करने से क्या फल मिलता हैं ?

भगवान् कालाग्निरूद्र ने उनको उत्तर दिया—अग्निहोत्र अथवा आवसथ्य, योग, ग्रहशान्ति आदि में प्रयोग हुए (शुष्क गौमय), पीपल, खैर इत्यादि की समिधा से बना हुआ भस्म ही अपेक्षित द्रव्य है । उसे—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवेनातिभवे भवस्वमां भवोद्भवाय नमः ।।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मनाय नमः ।

ॐ अघोरेभ्यो थघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानाम् ईश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधि-पतिर्ब्रह्मणो ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवाम् ।।

इन पांच ब्रह्मसंज्ञक मन्त्रों से बायें हाथ में भस्म लेकर दाहिने हाथ से ढ़के और—

ॐ अग्निरिति भस्म, वायुरीति भस्म, व्योमिति भस्म, जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म ।

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करे, तत्पश्चात्—

मानस्तो के तनये मान आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषुरीरिषः मानो वीरान्नुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।

इस मन्त्र से समुद्धार कर 'मानो महान्तमुत' इस मन्त्र द्वारा जल में सानकर, फिर भस्म को दोनों हाथों से मलें और 'त्र्यायुषम्' इस मन्त्र से मस्तक, ललाट, वक्षस्थल तथा कन्धों पर 'त्र्यायुषैः' 'त्र्यम्बकैः',

(शेष पृष्ठ ६० पर)

• अद्‌भुत फलदायक संग्रहणीय सामग्री •

※ पारद-शिवलिंग

शुद्ध निर्दोष पारे को मूर्च्छित, ताड़ित, शोधित क्रियाओं से निर्मल कर विजय काल में निर्मित 'पारद-शिवलिंग"।

यह देव-दुर्लभ शिवलिंग मुद्राबन्ध, अर्चन, प्राण-प्रतिष्ठा, मन्त्र-सिद्ध, रस-सिद्ध एवं संजीवनी मुद्रा से सिद्ध अद्‌भुत, आश्चर्यजनक, सुन्दर, सुरम्य श्रेष्ठतम फलदायक........ रु० १५००)

※ रुद्राक्ष

पञ्चमुखी श्रेष्ठ रुद्राक्ष, मन्त्र-सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठायुक्त रुद्रयामल सिद्ध........ पूजा में रखने योग्य............ रु० ३०)

नोट :—केन्द्र में सभी प्रकार के रुद्राक्ष उपलब्ध हैं, जानकारी के लिये पत्र व्यवहार करें।

※ गौरीशंकर रुद्राक्ष

यह शिव और पार्वती का जुड़ा रुद्राक्ष है, अपने आप में ही प्रामाणिक, श्रेष्ठ एवं पूजा में रखने योग्य, दुर्लभ रुद्राक्ष.............. रु० १८०)

※ स्फटिक शिवलिंग

शुद्ध स्फटिक से निर्मित, देव दुर्लभ शिवलिंग, पूर्ण प्राण प्रतिष्ठायुक्त मन्त्र सिद्ध, संजीवनी सिद्ध............ रु० ६००)

※ महामृत्युञ्जय यन्त्र

अकाल मृत्यु समाप्त करने, दीर्घायु प्राप्ति, बालकों की रक्षा, भूत-प्रेतों से बचाव एवं घर में पूर्ण सुख शांति हेतु अद्‌भुत फलदायक मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त महामृत्युञ्जय यन्त्र.............. रु० ३००)

※ अष्टगंध धूप

देवताओं की पूजा अर्चना आदि के लिये केन्द्र द्वारा शुद्ध एवं प्रामाणिक रूप से निर्मित अष्टगंध धूप............ रु० १५)

※ महामृत्युञ्जय एवं बृहद् शिवयज्ञ से प्राप्त

भस्म..........प्रामाणिक........शुद्ध........पूजनकाल में ललाट पर लगाने हेतु। रु० ५)

कृपया सामग्री प्राप्ति हेतु धनराशि निम्न पते पर मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें—

व्यवस्थापक
'मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान"
डॉ. श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर ३४२००१
(राज.)

प्रजावान् भूमिवान् विद्वान् पुत्र बान्धववांस्तथा।
ज्ञानवान्मुक्तिमान् साधुः शिवलिंगार्चनाद् भवेत्॥
(ब्रह्मवैवर्त प्र० ६-३१)

(अर्थात् जिसके घर में नर्मदेश्वर शिवलिंग नहीं है, वह घर श्मशान तुल्य है) जो एक बार भी घर में शिवलिंग स्थापित कर उसकी पूजा कर लेता है उसे जीवन में प्रजा, भूमि (भवन), विद्या, पुत्र, बान्धव, श्रेष्ठता, ज्ञान एवं मुक्ति सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

नर्मदेश्वर - शिवलिंग

शुद्ध, प्रामाणिक, मन्त्र संस्कारयुक्त, रुद्रयामल पूर्ण, मन्त्रसिद्ध, प्राणप्रतिष्ठायुक्त, अभिषेकसिक्त, चैतन्य नर्मदेश्वर शिवलिंग

परमपूज्य गुरुदेव **योगीश्वर सच्चिदानन्दजी** से पूछने पर उन्होंने अमृत सन्देश दिया है—

"कलियुग में पूर्ण भौतिक सुख, सर्वोत्कृष्ट उन्नति तथा मोक्ष प्राप्ति के लिये "नर्मदेश्वर शिवलिंग" की हर घर में स्थापना समयानुकूल है, वर्तमान समय में यही सुगम एवं श्रेष्ठ उपाय है, भारत के जन-जन के कल्याण हेतु प्रामाणिक नर्मदेश्वर सुलभ करो, मेरा आशीर्वाद उन सबके साथ है।"

गुरुदेव की आज्ञानुसार ही प्रामाणिक, संस्कारयुक्त, चैतन्य, अभिषेकसिक्त, नर्मदेश्वर शिवलिंग की व्यवस्था केन्द्र ने जनहितार्थ की है।

सुन्दर, सुरम्य, श्रेष्ठ फलप्रद नर्मदेश्वर शिवलिंग.........प्रत्येक गृहस्थ के पूजा गृह में आवश्यक अनिवार्य.................

न्योछावर रु० १३२)

(केन्द्र यह व्यवस्था गुरु आज्ञा से बिना लाभ के सम्पन्न कर रहा है, यह व्यय, पूजन सामग्री व मन्त्र सिद्ध, रुद्रयामल-पूर्णता आदि पर व्यय हुई है)

कृपया सामग्री प्राप्ति हेतु धनराशि निम्न पते पर मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें—

व्यवस्थापक
"मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान"
डॉ. श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर ३४२००१
(राज.)

(पृष्ठ ५७ का शेष)

'त्रिशक्तिभिः' इत्यादि तीन मन्त्रों से तीन-तीन रेखाऐं खींचें। वेद जानने वालों ने सब वेदों में इस व्रत को 'शाम्भव' व्रत कहा है, इसलिये मुमुक्षुओं को इस व्रत का आचरण करना चाहिये, जिससे पुनर्जन्म न हो।

इसके पश्चात् सनत्कुमारों ने इस त्रिपुण्ड-धारण का प्रमाण पूछा, तब भगवान् कालाग्निरुद्र बोले—ललाट से लेकर नेत्र पर्यन्त और मस्तक से लेकर भृकुटी पर्यन्त तथा मध्य में, इस प्रकार तीन रेखाएं होती हैं। इनमें से पहली रेखा गार्हपत्य अग्नि, अकार, रजोगुण, भूलोक, देहात्मा, क्रियाशक्ति, ऋग्वेद, प्रात. कालीन सवन (हवन) एवं महेश्वर देवता का स्वरूप है। द्वितीय रेखा दक्षिणाग्नि, उकार, सत्वगुण, अन्तरिक्ष, अन्तरात्मा, इच्छाशक्ति, यजुर्वेद, मध्यान्ह के सवन एवं सदाशिव देवता का स्वरूप है। तीसरी रेखा आह्वनीय अग्नि, मकार, तमोगुण, स्वर्गलोक, परमात्मा, ज्ञानशक्ति सामवेद, तीसरे सवन और महादेव देवता का स्वरूप है।

इस प्रकार जो कोई विद्वान् ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, अथवा सन्यासी उपर्युक्त विधि से भस्म का त्रिपुण्ड करता है, वह महापातकों तथा छोटे पापों को नष्ट कर पवित्र हो जाता है तथा उसे सब तीर्थों में स्नान करने का फल मिल जाता है। वह सारे वेदों का अध्ययन कर चुकता है, सब देवों के रहस्यों को जान जाता है और वह निरन्तर सर्व रुद्र मन्त्रों के जाप का भागी बन जाता है। वह सब भोगों को भोगता है तथा देहत्याग के अनन्तर शिव सायुज्य मुक्ति लाभ करता है, उसे पुनर्जन्म धारण नहीं करना पड़ता, यही भगवान् कालाग्निरुद्र ने कहा है।

—'कालाग्निरुद्रोपनिषद' से

✤

वैदिक आरती

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्या-
मध्येकादश स्थ।
अप्सुक्षितो महिनेकादशस्थ ते देवासो
यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥
(यजुर्वेद ७/१९)

ॐ आरात्रि पार्थिव (गूं) रजः पितुरप्रायि
धामभिः।
दिवः सदा (गूं) सि बृहती वितिष्ठस आ त्वेष
वर्तते तमः ॥
(यजुर्वेद ३४/३२)

ॐ इदं (गूं) हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर (गूं)
सर्वगण (गूं) स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ॥
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो
अस्मासु धत्त।
(यजुर्वेद १९/४८)

ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता, सूर्य्यो देवता श्चन्द्रमा देवता। व्वसवो देवता रुद्रा देवता दित्यादेवता मरुतो देवता व्विश्वेदेवा देवता व्वरुणो देवता ॥

ॐ द्यौ (ह) शांति रन्तरिक्ष (गूं) शांति (हि) पृथिवी शांति (हि) राप (ह) शांतिरोष-धय (ह) शांति वनस्पतय (ह) शांतिर्विश्वेदेवा शांति (हि) ब्रह्माशांति (हि) सर्व (गूं) शांति (हि) शांति रे व्वशान्ति (हि) सामा शान्तिरेधि।

अद्भुत, आश्चर्यजनक, असाधारण शिवलिंग

भगवान् शंकर की महिमा अपरम्पार है। शिवलिंग विविध पदार्थों से निर्मित हैं परन्तु भारत में असाधारण और आश्चर्यजनक शिवलिंग भी हैं जिन्हें देखकर हमें प्रसन्न होने के साथ साथ आश्चर्य के सागर में डूब जाना पड़ता है।

कई स्थानों पर हजारों फुट लम्बे शिवलिंग हैं तो कुछ शिवलिंग इतने भारी हैं कि हजारों लोग भी मिलकर उन्हें उठा नहीं पाते। कई स्थानों पर सैंकड़ों शिवलिंग एक स्थान पर स्थापित हैं तो कुछ शिवलिंग ऐसे भी हैं जिन्हें नंगी आंखों से देखना सम्भव नहीं होता।

कुछ शिवलिंग पत्थर से निर्मित होते हुए भी प्रति वर्ष बढ़ते रहते हैं और वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है कि इस पत्थर में ही कुछ ऐसी विशेषता है जो निरन्तर बढ़ता रहता है। कुछ शिवलिंग बर्फ से निर्मित हैं तो कुछ शिवलिंग एक विशेष समय में स्वतः ही हिलने लगते हैं, पर बाद में प्रयत्न करने पर भी वह शिवलिंग टस से मस नहीं होता। कुछ शिवलिंग पारदर्शी हैं, तो कुछ शिवलिंग ऐसे भी हैं जिनमें चन्द्रमा प्राकृतिक रूप से निर्मित है, कुछ शिवलिंगों में प्राकृतिक रूप से त्रिपुण्ड, गंगा, आदि भी दिखाई देती है।

पाठकों की जानकारी के लिये मैं ऐसे ही कुछ शिवलिंगों का वर्णन कर रहा हूं। मैं अपने जीवन में बहुत अधिक घूमा हूं, मेरी दृष्टि दूसरों की अपेक्षा सूक्ष्म है और इसीलिये मैं प्रत्येक घटना या पदार्थ को सूक्ष्म दृष्टि से देखने का आदी हूं, प्रस्तुत लेख में कुछ अद्भुत आश्चर्यजनक शिवलिंगों का वर्णन है जो कि पूर्ण रूप से यथार्थ और प्रामाणिक है।

१. विशालतम शिवलिंग :

रायपुर (मध्यप्रदेश) से आगे डोंगरी के मार्ग पर जंगलों के बीच पहाड़ के एक हिस्से में प्राकृतिक शिवलिंग हैं जिसकी ऊंचाई १४० फीट, घेरा २१० फीट, तथा वजन हजारों टन है। इस शिवलिंग को देखकर आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है, क्योंकि इस प्राकृतिक शिवलिंग में गंगा, चन्द्रमा, तथा त्रिपुण्ड स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

२. कलापूर्ण शिवलिंग :

खजुराहो (मध्य प्रदेश) में कंडारिया-महादेव विश्व-विख्यात है। यह शिवलिंग २२ फीट ऊंचा, और १६ फीट के घेरे में है। इस शिवलिंग में ८७२ छोटी छोटी मूर्तियां या चित्र खुदे हुए हैं और ये सभी दृश्य महादेव के जीवन से सम्बन्धित हैं, ऐसा शिवलिंग संसार में अपने आप में अनोखा ही है।

३. कैलाश शिवलिंग :

मानसरोवर (उत्तराखण्ड हिमालय) से लगभग २० मील दूर समुद्र स्तर से १९,००० फीट ऊंचे पर्वत पर यह शिवलिंग प्राकृतिक रूप से दिखाई देता है। मानसरोवर से ही इस शिवलिंग के दर्शन हो जाते हैं क्योंकि पहाड़ का एक पूरा भाग ही शिवलिंग के आकार का है, जो कि काले पत्थर का है। आस-पास की पहाड़ की चोटियां ऐसी दिखाई देती है, मानो षोडश कमल दल हों और बीच में शिवलिंग स्थापित

हो। भगवान शिव का यह दिव्य धाम है और दूर से दर्शन करने पर भी असीम आनन्द और शान्ति प्राप्त होती है। कुछ साधक इस शिवलिंग के पास तक भी पहुँचने में सक्षम हो सके हैं, क्योंकि अधिकतर चढ़ाई बर्फ में से होकर है।

४. उज्जनक शिवलिंग :

नैनीताल के पास काशीपुर नगर है इससे एक मील दूर उज्जनक स्थान है। यहां पर एक शिवलिंग लगभग तीस फीट से भी ऊंचा है, और यह इतना मोटा है कि दो आदमियों की बाहों में भी समा नहीं सकता। मन्दिर के बाहर १०८ शिवलिंग या रुद्र स्थापित हैं। कुछ लोग इसी स्थान को भीमशंकर ज्योतिलिंग कहते हैं।

५. शत शिवलिंग:

काशी के प्रसिद्ध विश्वनाथ मन्दिर के वायव्य कोण में एक स्थान पर १५१ शिवलिंग स्थापित हैं। इसी प्रकार नेपाल के पशुपतिनाथ मन्दिर में भी एक साथ १००१ शिवलिंग स्थापित हैं।

६. असंख्य शिवलिंग :

जम्मू से १२ किलो मीटर दूर भगवान शंकर का प्रसिद्ध मन्दिर है, जो कि लगभग आधा मील लम्बा चौड़ा है। मन्दिर के बीच में शिवलिंग स्थापित हैं, और इसके चारों ओर असंख्य शिवलिंग स्थापित हैं जिनकी गणना सामान्यतः संभव नहीं।

७. बर्फ निर्मित शिवलिंग :

काश्मीर प्रान्त में अमरनाथ प्रसिद्ध स्थान हैं और कहते हैं कि जब तक शिव भक्त अमरनाथ नहीं जाता तब तक वह पूर्ण शिवभक्त नहीं कहलाता। यह स्थान समुद्र स्तर से सोलह हजार फीट की ऊंचाई पर है, यहां पर पर्वत की गुफा है जो ६० फीट लम्बी २५ फीट चौड़ी तथा १५ फीट ऊंची है, इसमें प्राकृतिक रूप से बर्फ का शिवलिंग है जहां प्रति वर्ष हजारों यात्री दर्शन करने के लिये जाते हैं। इसी गुफा में प्राकृतिक बर्फ से ही गणेश पीठ, पार्वती पीठ भी बना है। आश्चर्य की बात यह है कि शिवलिंग का आधार ठोस पक्की बर्फ से स्वतः ही निर्मित है जबकि गुफा के बाहर सर्वत्र कच्ची बर्फ ही देखने को मिलती है। भगवान् शंकर के इस दर्शन से साधक को असीम आनन्द और अद्भुत सात्विकता अनुभव होती है।

८. तांत्रिक शिवलिंग :

कानपुर सेन्ट्रल स्टेशन से जो लाइन बालामऊ जाती है उसी लाइन पर बागरमऊ स्टेशन है, यहां पर एक शिव मन्दिर है जो तन्त्र शास्त्र के आधार पर निर्मित है। इस मन्दिर को राजेश्वरी मन्दिर भी कहते हैं। मन्दिर में षोडश दल कमल पर सदाशिव विराजमान है। दलों पर अ से अः तक स्वर तथा वर्ण अंकित है। सदाशिव की नाभी से निकले नीले कमल पर जगदम्बा की मूर्ति विराजमान है। कुण्डलिनी योग पर निर्मित यह अपने ढंग का अलग ही मन्दिर और शिवलिंग है।

९. दुग्धेश्वर शिवलिंग :

यह स्थान गोरखपुर-भटनी लाइन पर गौरी बाजार स्टेशन से १० मील दूर रुद्रपुर गांव में स्थित है। यहां दुग्धेश्वर महादेव का मन्दिर है जिसका उल्लेख शिवपुराण में भी है। आश्चर्य की बात यह है कि प्रत्येक शिवरात्री को यह शिवलिंग स्वतः ही हिलने लगता है और चौबीस घन्टे तक यह शिवलिंग हिलता रहता है, जिसे हजारों लाखों भक्त अपनी आंखों से देखते हैं, पर बाद में दूसरे ही दिन यह शिवलिंग स्वतः ही स्थिर हो जाता है, स्थिर हो जा नेपर अनेक मनुष्यों द्वारा प्रयत्न करने पर भी इस शिवलिंग को हिलाया नहीं जा सकता।

१०. स्वर्ण शिवलिंग :

आसाम प्रदेश में शिवसागर स्थान में मुक्तिनाथ महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर है, यह स्वयंभू शिवलिंग माना जाता है। यह शिवलिंग पत्थर का होते हुए

भी सोने की तरह चमकता है और पास खड़े होने पर भी ऐसा प्रतीत होता है कि यह पत्थर का न होकर सोने का ही है, जबकि उसके पास अन्य सभी मूर्तियां काले पत्थर की दिखाई देती हैं।

११. गंगायुक्त शिवलिंग :

दतिया (मध्य प्रदेश) से २८ मील दूर 'पिराकर' गांव है जहां गंगेश्वर महादेव का मन्दिर है। श्रावण में तथा शिवरात्रि को यहां बड़ा भारी मेला लगता है। आसपास कोई नदी या पहाड़ नहीं है परन्तु फिर भी शिवलिंग से स्वतः ही गंगा बहती रहती है, और कई बार तो शिवलिंग से इतना अधिक जल प्रवाहित हो जाता है कि मन्दिर का पूरा प्रांगण पानी से भर जाता है। वैज्ञानिक खोज बीन कर थक गये परन्तु अभी तक यह पता नहीं लग सका कि यह जल कहां से आता है?

१२. वद्ध क-शिवलिंग :

जिला छतरपुर (मध्य प्रदेश) में एक गांव सरसेड है जिसके पास एक पहाड़ पर शिवमन्दिर है। इस मन्दिर का शिवलिंग धीरे-धीरे बराबर बढ़ता जा रहा है, जबकि यह शिवलिंग प्राकृतिक पत्थर से निर्मित है। गांव के बड़े बूढ़े कहते हैं कि उन्होंने तीस वर्ष पूर्व इस शिवलिंग को एक फुट ऊंचा देखा था, जब कि अब लगभग तीन फीट ऊंचा हो गया है। ऊंचा होने के साथ-साथ इसका घेरा भी मोटा होता जा रहा है।

१३. स्वतः शिवलिंग :

जिला टीकमगढ़ के ग्राम झांवरा में एक प्राचीन शिव मन्दिर है जिसमें जमीन में से शिवलिंग प्रकट हुआ है, पर आश्चर्य की बात यह है कि प्रति वर्ष इस बड़े शिवलिंग के आस-पास छोटे-छोटे शिवलिंग जमीन में से निकलते रहते हैं। प्रति वर्ष एक नया शिवलिंग पृथ्वी फोड़कर बाहर निकल आता है। इस प्रकार अब तक सैंकड़ों शिवलिंग बाहर निकल आये हैं जो कि स्वतः निर्मित है और देखने में बड़े भव्य प्रतीत होते हैं।

१४. बैजनाथ मन्दिर :

जिला छतरपुर (मध्य प्रदेश) के गांव गरौली में धसान नदी की धारा के बीच एक चट्टान पर स्वतः निर्मित शिवलिंग हैं जो पृथ्वी से स्वतः ही प्रकट हुआ है और प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है।

१५. बुद बुद शिवलिंग :

उड़ीसा में हावड़ा लाइन पर कटक से अठारह मील दूर भुवनेश्वर स्टेशन से तीन मील दूर लिंगराज मन्दिर है। इसका शिवलिंग पानी के बुलबुलों के समान उठा हुआ दिखाई देता है, इसीलिये इसे बुद बुद शिवलिंग कहा जाता है, यही नहीं अपितु इस शिवलिंग में से पानी के बुलबुलों की सी आवाज भी आती रहती है।

१६. असंख्य शिवलिंग :

उड़ीसा में भुवनेश्वर से १४० मील दूर पार्वतिक स्थान पर हरिहरात्मक शिवलिंग है। इस शिवलिंग की विशेषता यह है कि शिवलिंग में असंख्य कण तैरते हुए दिखाई देते हैं, आश्चर्य यह है कि यह शिवलिंग पत्थर से निर्मित है पर फिर भी शिवलिंग में कण ऊपर नीचे तैरते रहते हैं और आज भी उन्हें देखकर भक्त आश्चर्य चकित हो जाते हैं। इस शिवलिंग में इस प्रकार के हजारों कण हैं, प्रत्येक कण शिवलिंग के आकार का है और शिवलिंग सा ही प्रतीत होता है।

१७. महाबलेश्वर शिवलिंग :

पूना से ७८ मील दूर महाबलेश्वर शहर है, जहां पर महाबलेश्वर शिवलिंग है इसमें रुद्राक्ष के आकार के छिद्र है जिनमें से बराबर जल निकलता रहता है, यह जल इतने वेग से निकलता है कि आगे चलकर यह नदी का आकार ग्रहण कर लेता है।

१८. पर्वत शिवलिंग :

राजस्थान में झालावाड़ से कुछ दूर बदराना गांव है, इसके पास एक गोपेश्वर शिव मन्दिर है। यह मन्दिर पूरे पर्वत को ही काटकर बनाया गया है,

और पर्वत के ही एक भाग को शिवलिंग के आकार का ही बनाया है। पूरे पर्वत को काट-काट कर शिव मन्दिर, खम्भे, शिवलिंग, पार्वती, नन्दीकेश्वर, आदि मूर्तियों का निर्माण किया गया है। पूरे मन्दिर में कोई जोड़ या चूना, सिमेंट आदि नहीं लगा है, वस्तुतः यह दर्शनीय स्थान हैं।

१६. नीलकंठ महादेव :

राजस्थान में लूनी जंक्शन से तीन मील दूर सतलाना स्टेशन है। यहा सरोवर के ऊपर श्री नीलकंठ महादेव का मन्दिर है। इस मन्दिर का शिवलिंग हरे वर्ण का है और उसमें चन्द्रमा तथा त्रिपुण्ड नैसर्गिक रूप से बने हुए है, ऐसी दिव्य मूर्ति अन्यत्र दुर्लभ है। यह स्वयंभू लिंग है और भक्ति पूर्वक पूजा करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

२०. समुझेश्वर महादेव :

जोधपुर से बाड़मेर लाइन पर धुंधाड़ा स्टेशन से चार मील दूर समुझेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर है। श्रावण के प्रथम सोमवार को यहां मेला लगता है। श्रावण में इस मूर्ति पर चाहे जितना जल चढ़ायें, वह जल मन्दिर के बाहर नहीं निकलता, जब कि अन्य महीनों में जल चढ़ायें बिना ही मूर्ति के नीचे से जल निकलता रहता है।

२१. पारदर्शक शिवलिंग :

राजस्थान में जयपुर-सवाई माधोपुर लाइन पर नवलगढ़ स्टेशन है। इसके पास ही शिव मन्दिर है। यह शिवलिंग सफेद पारदर्शक है। शिवलिंग के एक ओर हाथ या कोई वस्तु रखने पर दूसरी ओर से स्पष्ट दिखाई देता है। यदि एक ओर दियासलाई की तीली जलाई जाय तो दूसरी ओर से देखने पर शिवलिंग लाल रंग का दिखाई देता है। वास्तव में ही यह विश्व का चमत्कार पूर्ण शिवलिंग है।

२२. भीमेश्वर महादेव :

दक्षिण भारत में द्राक्षारामम् प्रसिद्ध शहर है। यहां से १५ मील दूर भीमेश्वर महादेव है, जिसका शिवलिंग इतना ऊंचा है कि यदि आदमी शिवलिंग के ऊपरी भाग को देखना चाहे तो उसकी टोपी या साफा गिर जाता है, अर्थात् शिवलिंग बहुत अधिक ऊंचा हैं। इसी स्थान पर सती ने देह त्याग किया था।

२३. आदिपुरीश्वर शिवलिंग :

दक्षिण में मद्रास में आदिपुरीश्वर शिवमन्दिर है जो कि मद्रास शहर से भी पहले बसा हुआ है, इस शिव मन्दिर की दीवारों में से स्वतः ही वेद ध्वनि सुनाई देती है, यह वेद ध्वनि सैकड़ों वर्षों से अनवरत सुनाई पड़ती है। यहां के लोगों का विश्वास है कि कोई ऋषि सैकड़ों वर्षों से अदृश्य रहकर तपस्या में लीन हैं यह उसके ही मुख से निकलती हुई वेद मन्त्रों की ध्वनि है। मन्दिर बहुत बड़ा है और मन्दिर के मध्य भाग में आदिपुरीश्वर महादेव शिवलिंग स्थापित है।

२४. स्फटिक शिवलिंग :

रामेश्वरम् दक्षिण भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। इस मन्दिर का मुख्य शिवलिंग बालुका से निर्मित है परन्तु इस मन्दिर के एक ओर स्फटिक शिवलिंग स्थापित है जो स्वच्छ पारदर्शी है, यात्री सवेरे इसके दर्शन करते हैं।

२५. द्रोणेश्वर शिवलिंग :

गुजरात में वेरावल लाइन पर ऊना नगर है, यहां से ३१ मील दूर द्रोणेश्वर महादेव का मन्दिर है। इस शिवलिंग पर, कई वर्षो से पहाड़ के ऊपर से जलधार गिरती रहती है, जो कि ठीक शिवलिंग पर गिरती है। इतने वर्ष होने पर भी तथा जलधार की चोट खाने पर भी शिवलिंग कहीं से भी खंडित नहीं हुआ है। यह शिवलिंग अत्यन्त ही सुन्दर है।

२६. अदृश्य शिवलिंग :

मन्दसोर (मध्य प्रदेश) में शिवना स्थान पर अदृश्य शिवलिंग मन्दिर है। मन्दिर में तिल से भी छोटे शिवलिंग स्थापित हैं। उन्नतोदर कांच से देखने पर ही शिवलिंग के दर्शन होते हैं, शिवलिंग व उसका आधार मिलाकर तिल से भी छोटा है। यह शिवलिंग काले पत्थर का है जो कि विश्व में आश्चर्यजनक है।

वस्तुतः भगवान शंकर की महिमा अपरम्पार है, श्रद्धालु शिवभक्तों को इन आश्चर्यजनक शिवलिंगों के दर्शन अपने जीवन में अवश्य करने चाहिये। ❋

श्री शिव पूजन में ध्यान देने योग्य बातें

सिद्ध महात्माओं, प्रकाण्ड विद्वानों एवं शास्त्र ग्रन्थों के आधार पर शिव पूजन में ध्यान देने व सावधानी रखने योग्य बातें स्पष्ट की जा रही हैं, जिससे कि साधकों को शीघ्र ही फल प्राप्ति हो।

१. शंकर की पूजा स्नान करके ही करनी चाहिए और नीचे धोती पहनना आवश्यक है, धोती लांगदार पहने, तहमत की तरह धोती लपेटकर पूजा करना ठीक नहीं माना गया है।

२. भगवान शिव की पूजा के साथ ही साथ मां पार्वती की पूजा भी आवश्यक मानी गई है, इससे पूर्व गणपति पूजन भी आवश्यक है।

३. शिव पूजन उत्तर की तरफ मुंह करके करना चाहिए क्योंकि जहां शिवलिंग स्थापित हो उससे पूर्व दिशा का आश्रय लेकर न बैठें या न खड़े हों, क्योंकि यह दिशा भगवान शिव के सामने पड़ती है। शिवलिंग से उत्तर में न बैठें क्योंकि उधर शिव का वामांग है, जिसमें शक्ति स्वरूप देवी उमा विराजमान है। पूजक को शिवलिंग से पश्चिम दिशा में भी नहीं बैठना चाहिए क्योंकि वह भगवान शिव का पीठ भाग है। पीछे की ओर से पूजा करना भी उचित नहीं है, अतः साधक को अपना मुंह उत्तर की ओर करके ही पूजन करना चाहिए।

४. जो साधक शिव की पूजा करे उसे त्रिपुण्ड अवश्य लगाना चाहिए और यदि रुद्राक्ष की माला पहिन कर पूजा करे तो ज्यादा उचित माना गया है।

५. बिल्वपत्र शुद्ध ताजे हों, वे टूटे फूटे न हों।

६. जो वस्तुएं अपवित्र स्थान में पैदा हुई हों, या अपवित्र वस्तु से स्पर्श की हुई हो, या किसी से चोरी आदि से प्राप्त की हुई हो, तो ऐसी कोई वस्तु या पदार्थ शंकर की पूजा में प्रयोग नहीं करना चाहिए।

७. साधक को अपने महीने की कमाई में से एक दिन को कमाई अवश्य ही पूजा या साधना में व्यय करनी चाहिए।

८. जहां तक हो सके स्वयं को ही शंकर की पूजा करनी चाहिए, किसी ब्राह्मण आदि का उपयोग इस कार्य के लिये कम से कम करें।

९. सड़े गले पुष्पों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए, बिना सुगन्ध के पुष्पों का प्रयोग भी वर्जित है। इसके अलावा मालती, कुन्द, रक्त-जवा, या गुलमोहर, मोतिया, केतकी, केवड़ा, पलास, सिरस और मेंहदी के पुष्प भूल कर के भी भगवान शंकर को नहीं चढ़ाने चाहिए।

१०. गणेशजी को तुलसीदल तथा मां पार्वती को दूर्वा नहीं चढ़ानी चाहिए।

११. पत्र, पुष्प, फल ये सभी मुख नीचे करके नहीं चढ़ाने चाहिए। बिल्वपत्र डंठल तोड़कर उल्टे करके चढ़ाने चाहिए।

१२. पुष्पों को धोकर नहीं चढ़ाना चाहिए अपितु सीधे पौधों से तोड़कर उसी प्रकार से भगवान शंकर को चढ़ाने चाहिए।

१३. भगवान शंकर कमल, गुलाब, कनेर, सफेद आक या मदार पुष्प से ज्यादा प्रसन्न होते हैं, धतूरा उन्हें सबसे अधिक प्रिय है।

१४. बिल्व पत्र, खेजड़ा, आँवला, तमालपत्र, और तुलसी—इनके पत्ते टूटे-फूटे होने पर भी पूजा में ग्रहण करने योग्य माने गये हैं। तुलसी व बिल्वपत्र सर्वदा शुद्ध कहे गये हैं। बिल्व-पत्र, कुंद, तमाल, आमला, तुलसी, कमल के पुष्प आदि एक दिन पहले लाकर भी पूजा में प्रयोग किये जा सकते हैं क्योंकि इनको बासी होने का दोष नहीं लगता।

१५. भगवान शिव की पूजा में संस्कृत पढ़ना आवश्यक नहीं है अपितु अपनी मन की भावनाओं से भी उनकी पूजा की जा सकती है।

१६. जो स्त्रियां शिव पूजन करती हों यदि उनके बालक का जन्म हो जाय तो उनको दस दिन तक सूतिकागृह में ही भगवान शिव की मात्र मानसिक पूजा करनी चाहिए।

१७. शिव पुराण में बताया गया है कि वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धती भगवान शंकर की भक्त थी और तपस्या करके शंकर को प्रसन्न किया था। इसी प्रकार अनुसूया, सीता रुक्मिणी, जावन्ती आदि अनेक स्त्रियों ने भगवान शिव की पूजा की है, कुमारी कन्याएं सुन्दर वर प्राप्ति हेतु बाल्यकाल से ही शिव पूजा कर सकती हैं।

१८. विवाह होने के बाद प्रत्येक स्त्री को चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन अपने सौभाग्य की रक्षा के लिये शिव पार्वती की पूजा करनी चाहिए।

१९. शिव की आधी परिक्रमा ही की जाती है भूल करके भी शिव मन्दिर में शिव की पूरी परिक्रमा नहीं करनी चाहिए।

२०. शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण नहीं करना चाहिए, पर शिव के सामने जो फल या प्रसाद रक्खा हो उसे ग्रहण किया जा सकता है।

२१. लक्ष्मी प्राप्ति के लिये भगवान शंकर की कमल या बिल्व-पत्र से पूजा की जानी चाहिए। एक लाख बिल्व-पत्र चढ़ाने पर साधक को कुबेर के समान सम्पत्ति प्राप्त होती ही है।

२२. मोक्ष की इच्छा रखने वाले को एक लाख दर्भ के द्वारा शिव पूजा की जानी चाहिए।

२३. सन्तान की इच्छा रखने वाले को भगवान शंकर पर एक लाख धतूरे के पुष्प चढ़ाने का विधान शास्त्रों में बताया गया है।

२४. भोग व मोक्ष दोनों प्राप्त करने वाले को आक के एक लाख पत्ते भगवान शंकर को चढ़ाने चाहिए।

२५. जो व्यक्ति एक लाख कनीर के पुष्प भगवान शंकर पर चढ़ाता है, वह अवश्य ही रोग मुक्त होता है।

२६. जो व्यक्ति एक लाख बिल्व-पत्र शिव को चढ़ाता है उसके जीवन की प्रत्येक इच्छा पूरी होती है और उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

२७. जो व्यक्ति एक लाख चावल चढ़ाता है, उसे लक्ष्मी प्राप्त होती है पर इसमें एक भी चावल खण्डित नहीं होना चाहिए।

२८. एक लाख काले तिलों द्वारा भगवान शिव का पूजन करने से बड़े से बड़ा पाप भी समाप्त हो जाता है।

२९. एक लाख मूंग चढ़ाने पर जातक को सभी सुखों की प्राप्ति होती है।

३०. एक लाख अरहर के पत्तों द्वारा भगवान शिव का शृंगार करने से अनेक प्रकार की सुख-सम्पत्तियां प्राप्त होती हैं।

३१. शरीर पुष्टि हेतु एक लाख उड़द के दानों से भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए।

३२. यदि साधक गंगाजल से भगवान शंकर का अभिषेक करता है, उसे निश्चय ही पुत्र सुख प्राप्त होता है, इसी प्रकार गाय के घी से अभिषेक करने पर वंश वृद्धि होती है। यदि चीनी मिलाकर गाय के दुग्ध से अभिषेक किया जाय तो घर में प्रेम और सुख शान्ति बढ़ती है।

३३. यदि इत्र द्वारा भगवान शिव का अभिषेक धारा प्रवाह किया जाय तो उसे समस्त भोग्य पदार्थ प्राप्त होते हैं।

३४. भगवान शिव पर धारा प्रवाह करने वाला पात्र सोने, चांदी, तांबे या मिट्टी से निर्मित हो, इसके अलावा अन्य धातु वर्जित है।

३५. प्रदक्षिणा शंकर के दाहिनी तरफ से प्रारम्भ की जानी चाहिए।

३६. भगवान शिव पर चढ़ाया हुआ नैवेद्य ग्रहण नहीं किया जाना चाहिए।

अनर्हं मम नैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
मह्यं निवेद्य सकलं कूप एवं विनिःक्षिपेत् ।।
(पद्मे शिवोक्ति)

भगवान् शंकर स्वयं कहते हैं कि मुझ पर चढ़ाये हुए नैवेद्य पत्र पुष्प, फल सभी कुएं में डाल देने चाहिए, भूल कर भी ग्रहण नहीं करना चाहिए।

परन्तु जो शंकर का भक्त है, या जिसे शंकर का इष्ट है उसे शास्त्र की भाषा में "चण्ड" कहा गया है अतः चण्ड, प्रसाद भक्षण का अधिकारी माना गया है। ब्राह्मण स्वतः ही चण्ड माने गये हैं अतः उन्हें प्रसाद ग्रहण कर लेना चाहिए।

३७. साधक को चाहिए कि भगवान शंकर के लिंग पर कोई पदार्थ न चढ़ावे अपितु उसके सामने रखना चाहिए। इस प्रकार की सामग्री या पदार्थ ग्रहण या भक्षण करने में कोई दोष नहीं है।

३८. शिव पुराण में बताया गया है—

अग्राह्यं शिवनैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
शालग्रामशिलासंगात् (स्पर्शति) सर्वं यानि पवित्रताम् ।।
(शिव पुराण वि. सं. २२/१९)

अर्थात् भगवान् शिव को चढ़ाये हुए नैवेद्य पत्र पुष्प, फल, जल जो ग्रहण करने एवं भक्षण करने योग्य न हों, वे भी शालिग्राम शिला के संग रखने या स्पर्श करा देने पर सर्व प्रकार से पवित्र होकर ग्रहण करने और भक्षण करने योग्य हो जाते हैं।

इस प्रकार साधक को यथा सम्भव शिव पूजा में सावधानी बरतनी चाहिए और उपरोक्त नियमों का पालन करना चाहिए।

शिव पंचाक्षरी मंत्र

"ॐ" "प्रणव लगाकर" नमः शिवाय" यह शिव पंचाक्षरी मन्त्र कहलाता है, जो कि शिव का अत्यन्त प्रिय मन्त्र है। शिवभक्त या साधक निरन्तर उठते, बैठते, सोते, खाते, पीते या चलते हुए भी अहर्निश "नमः शिवाय" या "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र का जप सतत कर सकता है।

यदि साधक (स्त्री, पुरुष या बालक) को और कुछ भी न आता हो, पर यदि वह शिवपंचाक्षरी मन्त्र का जप करता है तो भगवान् शंकर के अनुसार उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, तथा अन्त में शिवत्व पद प्राप्त करता ही है।

विभिन्न पदार्थों द्वारा निर्मित शिवलिंग

विश्व में सर्वत्र शिवलिंग पूजा का विधान है, यदि शास्त्रोक्त विधि से शिवलिंग पूजन किया जाय तो निश्चय ही साधक को "धर्मार्थ काम मोक्ष" चतुर्विध पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है ।

शास्त्रानुसार विभिन्न पदार्थों से शिवलिंग निर्माण होता है, यह विषय गोपनीय रहा है, इस लेख के माध्यम से इस प्रकार की महत्वपूर्ण सामग्री साधकों की जानकारी हेतु प्रस्तुत की जा रही है ।

पत्रिका-पाठकों को चाहिए कि वे इस प्रकार के प्रयोग करें, निश्चय ही वे जीवन में मनोनुकूल लाभ उठा सकेंगे—

भारत में लगभग सभी प्रान्तों में शिवलिंग पूजन का प्रचलन है । यदि किसी मंदिर में शिवलिंग की स्थापना कर दी जाती है तो बाद में उस शिवलिंग को हटा कर दूसरे स्थान पर उसकी स्थापना नहीं की जा सकती । शिव के अलावा अन्य किसी भी देवता को एक स्थान से हटा कर दूसरे स्थान पर स्थापित किया जा सकता है परन्तु शिव के बारे में यह प्रमाण है कि जहां एक बार शिवलिंग स्थापित कर लिया जाता है वहां स्थायी रूप से ही स्थापना होती है, वहां से शिवलिंग को हटाना शास्त्र विरुद्ध माना गया है ।

परन्तु नर्मदेश्वर शिवलिंग या सोने चांदी के द्वारा निर्मित शिवलिंग एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाये जा सकते हैं ।

साधारणत : शिवलिंग अंगूठे के प्रमाण के होते हैं परन्तु पाषाण के शिवलिंग मोटे व बड़े बनाये जा सकते हैं । इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि लिंग से दुगुने प्रमाण की वेदी और आधे प्रमाण की योनि-पीठ होनी चाहिये ।

यदि लिंग की लम्बाई कम होती है तो शत्रुओं की वृद्धि होती है और बिना योनि पीठ के शिवलिंग का पूजन अशुभ माना गया है ।

पार्थिव शिवलिंग की पूजा की जाती है, उसमें एक या दो तोले मिट्टी ले कर उसका शिव लिंग बनाना चाहिये जो कि अपने दाहिने हाथ के अंगूठे के ऊपर वाले पोरवे के प्रमाण का होना चाहिये, इसे बना कर इसकी विधि-विधान के साथ पूजा की जाती है ।

ब्राह्मण को सफेद, क्षत्रिय को लाल, वैश्य को पीली और शूद्र को काली मिट्टी के पार्थिव शिवलिंग बना कर उसकी पूजा करनी चाहिये ।

"लिंग" मात्र की पूजा में पार्वती व शिव दोनों की पूजा हो जाती है, लिंग के मूल में ब्रह्मा, मध्य भाग में विष्णु और ऊपर प्रणवाख्य (ॐ रूप) महादेवजी की स्थिति मानी जाती है, इसकी वेदी महादेवी है, और लिंग महादेव है ऐसा मान कर ही शिव पूजन किया जाना चाहिये ।

विविध कामनाओं की पूर्ति के लिये विभिन्न दार्थों के शिवलिंग निर्माण कर उनकी पूजा आदि रते का विधान शास्त्र सम्मत है ।

१. गन्ध लिंग

दो भाग कस्तूरी, चार भाग चन्दन तथा तीन भाग कुंकुम को मिला कर जो शिवलिंग बनाया जाता है उसे "गन्ध-लिंग" कहा गया है । इस प्रकार के शिव लिंग की पूजा से व्यक्ति स्वयं शिवमय हो जाता है ।

२. पुष्प लिंग

विविध प्रकार के सुगन्धित पुष्पों को मिला कर लिंग बनाया जाता है, उसे "पुष्प-लिंग" कहते है, इसमें केतकी के पुष्पों को शामिल नहीं करना हिये, इस प्रकार के शिवलिंग का पूजन भूमिपति जा अथवा चुनाव में सफलता प्राप्त करने के लिये किया जाता है ।

३. रजोमय लिंग

यह मिट्टी या बालुका द्वारा बनाया जाता है, विद्या प्राप्ति और धन-सम्पदा प्राप्ति के लिये इस प्रकार के लिंग की पूजा का प्रावधान है ।

४. यव, गो, धूम शास्तिज—लिंग

जौ, गेहूं तथा चावल तीनों का आटा समान भाग ले कर शिवलिंग का निर्माण किया जाता है और उसका विधि-विधान के साथ पूजन किया जाता है इस प्रकार की पूजा लक्ष्मी, स्वास्थ्य और संतान प्राप्ति के लिये की जाती है ।

५. सिता खण्डमय लिंग

यह लिंग मिश्री के बने हुए खण्ड का बनाया जाता है, इसके पूजन से लम्बी बीमारी से छुटकारा मिल जाता है तथा वह पूर्ण आरोग्य प्राप्त कर लेताहै ।

६. लवणज लिंग

सौंठ, मिर्च और पीपल को बराबर भाग में ले, नमक में मिला कर इस शिवलिंग का निर्माण किया जाता है, इसका प्रयोग वशीकरण कार्यों के लिये किया जाता है ।

७. तिलपिष्टोत्थ लिंग

सफेद तिलों को भिगो कर बाद में उसे पीस कर उसकी पीठी से शिव लिंग का निर्माण किया जाता है, इसके पूजन से मानव की प्रत्येक इच्छा पूरी होती है ।

८. भस्मिय लिंग

किसी भी प्रकार के यज्ञकुण्ड से ली हुई भस्म लेकर शिवलिंग का निर्माण किया जाता है, इसके पूजन से सभी प्रकार की मन की इच्छाएं पूर्ण होती हैं ।

९. गुड़ोत्थ लिंग

यह शिवलिंग गुड़ की डली से बनाया जाता है और इसका पूजन परस्पर प्रीति बढ़ाने के लिये किया जाता है ।

१०. शर्करामय-शिवलिंग

चीनी को लेकर इस शिवलिंग का निर्माण किया जाता है, इसके पूजन करने से घर में अनन्त सुख-शांति प्राप्त होती है ।

११. वंशांकुरमय-शिवलिंग

बांस के वृक्ष के नवीन कोमल अंकुर लेकर उसका शिवलिंग बनाया जाता है, इस प्रकार के शिव लिंग के पूजन करने से वंश वृद्धि होती है तथा जिसके बच्चें जीवित न रहते हों उसे इस प्रकार के शिवलिंग का पूजन अवश्य करना चाहिये ।

१२. दधिदुग्धोद्भव शिवलिंग

दही को गाढ़ा बनाकर उसमें दूध मिलाकर इस शिवलिंग का निर्माण किया जाता है, इसके पूजन से कीर्ति, लक्ष्मी व पूर्ण सुख प्राप्त होता है ।

१३. धान्यज शिवलिंग

किसी भी प्रकार का धान्य ले, उसमें गुड़ मिला कर इस प्रकार के शिव लिंग का निर्माण किया जाता है इसके पूजन से अक्षय धन लाभ होता है ।

१४. फलोत्थ लिंग

फलों को किसी धागे आदि में पिरो कर और उन्हें परस्पर बांध कर शिवलिंग बनाया जाता है, इसके पूजन से प्रत्येक प्रकार की मनोकामना पूर्ण होती है ।

१५. धात्रीफलमय लिंग

अलग-अलग फलों को मिलाकर उसे हल्का-सा पीस, पिष्टी बनाकर उससे यह शिवलिंग बनाया जाता है, इसके पूजन से मनुष्य को निश्चित रूप से मोक्ष प्राप्त होता है।

१६. नवनीतज शिवलिंग

वृक्षों के नये नये कोमल पत्ते लाकर उससे शिव लिंग आकार निर्माण किया जाता है, इसके पूजन से अनन्त कीर्ति, यश और सौभाग्य प्राप्त होता है।

१७. दूर्वाकाण्डज शिवलिंग

दूर्वा के नर्म लच्छे पवित्र स्थान से तोड़कर उसे परस्पर मिलाकर शिवलिंग का निर्माण किया जाता है, इसके पूजन से रोग नाश होता है, और साधक अपने जीवन में स्वस्थ रहता हुआ पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

१८. कर्पूरज-शिवलिंग

यह शिवलिंग कर्पूर से बनाया जाता है, इसके पूजन से मुक्ति प्राप्त होती है।

१९. अयस्यान्तकमणिज शिवलिंग

शहद से शिवलिंग बनाकर उसके पूजन से मनोवांछित सिद्धि प्राप्त होती है।

२०. मौक्तिक-शिवलिंग

सच्चे मोतियों को परस्पर मिलाकर धागे से पिरोकर शिवलिंग का निर्माण किया जाता है, इसका पूजन अधिकतर स्त्रियां करती हैं। इसके पूजन से अखण्ड सौभाग्य प्राप्त होता है और उसके पति के भाग्योदय में वृद्धि होती है।

२१. स्वर्ण निर्मित शिवलिंग

स्वर्ण का शिवलिंग विशेष मुहूर्त में बनाकर उसके पूजन से धन-धान्य, सुख सम्पदा प्राप्त होती है और उसे अपने जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं देखना पड़ता।

२२. रजतमय शिवलिंग

चांदी का शिवलिंग निर्माण करा कर उसका पूजन करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

२३. पीतलज शिवलिंग

शुद्ध पीतल का शिवलिंग बनाकर उसके पूजन करने से घर में समस्त प्रकार का वैभव प्राप्त होता है।

२४. वैदूर्यजमणि लिंग

यह प्राकृतिक शिवलिंग होता है, इसके पूजन से शत्रु परास्त होते हैं, तथा साधक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

२५. स्फटिकमणि लिंग

यह भी प्राकृतिक शिवलिंग होता है, इसका प्राप्त होना ही सौभाग्यशाली माना जाता है इसके पूजन से मानव के जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

२६. विविधरत्नमणिमय लिंग

अनेक प्रकार के रत्न-मणियों द्वारा निर्मित शिवलिंग की पूजा करने से जीवन में सभी प्रकार का सुख-सौभाग्य प्राप्त होता है।

२७. महारसेश्वर शिवलिंग

विशेष रसायन विधान से पारे को ठोस बनाकर उसे शिवलिंग का आकार दिया जाता है, यह पारा गीला नहीं होना चाहिये पर सफेद बना रहना चाहिये। इस प्रकार का शिवलिंग अत्यन्त ही श्रेष्ठ माना गया हैं और भाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ही इस प्रकार का शिवलिंग पाया जाता है।

इसके दर्शन मात्र से ही समस्त प्रकार के पाप नाश हो जाते हैं। जो सौभाग्यशाली इसका पूजन करता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही नहीं सकता।

इसके अलावा ताम्र, शीशा, शंख, कांसा, लोहा, रक्तचन्दन आदि से भी शिवलिंग का निर्माण हो सकता है, पर कलियुग में इस प्रकार के शिवलिंग का निर्माण निषेध माना गया है।

वस्तुत: शिवलिंग का अलग-अलग कार्यों के लिये अलग-अलग रूप से विधान है, परन्तु ऊपर जो २७ प्रकार के शिवलिंग बताये गये हैं यदि कोई व्यक्ति इन समस्त प्रकार के शिवलिंग का संग्रह अपने घर में करता है तो वह पूर्ण शंकरमय हो जाता है और जीवन में पूर्ण भौतिक सुख भोगता हुआ अन्त में मोक्ष प्राप्त करता है।

अमोघ मृत्युञ्जय स्तोत्र

"अमोघ मृत्युञ्जय स्तोत्र" विश्व विख्यात स्तोत्र है, कथा है कि "मृकण्ड" ऋषि की आयु मात्र बारह वर्ष की ही थी, पर मृकण्ड बाल्यावस्था से ही शिवभक्त थे। जब बालक मृकण्ड सयाना हुआ, और उसे अपनी आयु का पता लगा, तो अपने पिता को पूछा, कि "मृत्यु आ जाने पर मैं क्या करूं ? पिता ने कहा, भगवान् शिव को स्मरण करना, वे ही मृत्युभय को टालने में सक्षम है।

जब बालक मृकण्ड के बारह वर्ष पूरे हुए, उस समय मृकण्ड शिवलिंग की पूजा कर रहा था, यमराज ने आकर मृत्युपाश बालक के गले में डाल दिया। बालक मृकण्ड यमराज के रौद्र रूप को देखकर घबरा गया और उसके मुंह से अनायास निम्न "मृत्युञ्जय स्तोत्र" सस्वर फूट पड़ा। स्तोत्र समाप्त होते होते भगवान् शंकर सवेग प्रगट हुए, और यमराज को भगाते हुए बालक मृकण्ड को पूर्ण आयु का वरदान दिया, यही बालक आगे चलकर मार्कण्डेय ऋषि बने।

वस्तुतः यह स्तोत्र चमत्कारी है, यदि नित्य एक बार भी इसका सस्वर पाठ नर्मदेश्वर के सामने हो जाय, तो अकालमृत्यु व्याप्त नहीं होती। रोगी के सिरहाने मात्र एक बार सस्वर पाठ करने से उसे आराम अनुभव होता है।

आप स्वयं परीक्षण कर देखिये न !

चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर पाहिमाम्
चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर रक्षमाम्।
चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, मामव
चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, मां स्मर ।।१।।

रत्नसानुशरासनं रजताद्रि शृंगनिकेतनं
शिंजिनीकृतपन्नगेश्वर मच्युतानलसायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यम: ।।२।।

पन्चपादप पुष्पगन्धि पदाम्बुजद्वयशोभितं
भाललोचन जातपावकदग्धमन्मथ विग्रहम्।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यम: ।।३।।

मत्तवारण मुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं
पंकजासनपद्मलोचनपूजिताऽङ्घ्रि सरोरुहम्।
देवसिद्धतरंगिणी करसिक्तशीत जटाधरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यम: ।।४।।

कुण्डलीकृत कुण्डलीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं
नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यम: ।।५।।

यक्षराज सखं भगाक्षिहरं भुजंगविभूषणं
शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवाम कलेवरम् ।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।६।।

भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं
दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।
भुक्तिमुक्ति फलप्रदं निखिलापदामपहारिणं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।७।।

भक्तवत्सलमर्चतां निधिसक्षरं हरिदम्बरं
सर्वं भूतपति परात्परमप्रमेयमनूपमम्
भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्याकृतिं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।८।।

विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
संहरन्तमथ प्रपन्चमशेषलोकनिवासिनम् ।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथ समावृतं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।९।।

मृत्युभीत मृकण्ड-सूनुकृतस्तवं शिव सन्निधौ
यत्र कुत्र च यः पठेन्नति तस्य मृत्युभयं भवेत् ।
पूर्णमायुर रोगिता मखिलार्थ सम्पद मादरम्
चन्द्रशेखर एव तस्य ददाति सिद्धिमलौकिकीम् ।।१०।।

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।११।।
नीलकण्ठं विरुपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।१२।।
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगत्गुरुम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।१३।।
देवदेवं जगन्नाथं देवेशवृषभध्वजम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।१४।।
अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।१५।।
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।१६।।
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणिम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।।१७।।